(देखो पृष्ठ ५८) सर विल्फ्रेड ने सबको एक ओर दिखा के कहा—"वह देखो !"

"हेक्टर, सर विल्फ्रेड के बगल में है, उसके बगल में कप्तान जोली, कप्तान के बगल में फिलिप और फिलिप की बगल में, और गुब्बारे के एक कोने में चेको बैठा है—शाड झील उनके सामने लहरा रही है ।
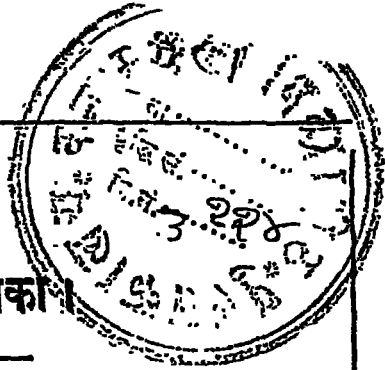
भूमिका।

क्या इसे न देखियेगा ?

बड़े हर्ष का विषय है कि आज इस ग्रन्थ को लेके मैं आप की सेवा में उपस्थित हो सका। यद्यपि यथार्थ में इस पुस्तक के लिखने में मेरी किसी प्रकार की बड़ाई नहीं है, क्योंकि, इसे मैंने "Over Africa in a Baloon" नामक एक अङ्गरेजी ग्रन्थ से अनुवाद किया है;—जिसके रचयिता, मिष्टर विलियम मरे ग्रेडन महाशय हैं, और वही इसके असली प्रशंसा के पात्र भी कहे जा सकते हैं;—तथापि हर्ष मुझे केवल इस बात का है कि एक विदेशीय भाषा की पुस्तक को (चाहे जैसे मुझसे बन पड़ा हो) अपनी भाषा में अनुवाद कर, मैं उन पाठकों की सेवा में समर्पित कर सका, जो अङ्गरेजी भाषा से बिलकुलही अज्ञ हैं।

जिन महाशयों को अवसर पड़ा है वे जानते होंगे कि अनुवाद, कपोलकल्पित लेखों की अपेक्षा एक कठिन कार्य है—कैसा कठिन कार्य है?—वा—कहां लों कठिन कार्य है? इसे यथोचित रूप से समझाने को; हमें आवश्यकता और समय दोनोंही नहीं है। तात्पर्य यह कि इस कठिन कार्य में पहिलेही पहिले हाथ डाल, हम कहां लों कृतकार्य हुये हैं—, केवल उसी को देख पाठकगण को चुपके न बैठ रहना चाहियं—कारण यह कि श्रीयुत बाबू रामकृष्ण

वर्म्मा प्रोप्राइटर भारतजीवन प्रेस की अनुग्रहों ने हमारे मनचले चित्त को इतना चञ्चल कर रक्खा है कि उसने स्थिर होके बैठने की कसमही खा ली है—अभी कलही की तो बात कि हार्दिक उद्वेग ने मचल २ के एक ऐसा अनूठा और वृहत् ग्रन्थ तैयार करा दिया है कि जो हिन्दी उपन्यासों में बिलकुल नया और एकही कहे जाने के योग्य है! फिर है भी तो यह ग्रन्थ मिष्टर रेनाल्ड जैसे सुविख्यात लेखक के ग्रन्थ का अनुवाद, जिनके उपन्यासों के जगत में डङ्के बजे हुये हैं। इस बड़े ग्रन्थ का नाम है नर पिशाच! उपन्यास के चातकरूपी प्रेमियों को इस अनोखे स्वाती के बूँद की अवश्यही प्रतीक्षा करनी उचित है जो शीघ्रही वारिदरूपी भारतजीवन यन्त्रालय से बड़े चमक दमक के साथ बरसनेवाला है।

काशी
२० अप्रैल सन् १९०० ई०

आपका कृपाभिलाषी
हरिकृष्ण जौहर।

भयानक भ्रमण।
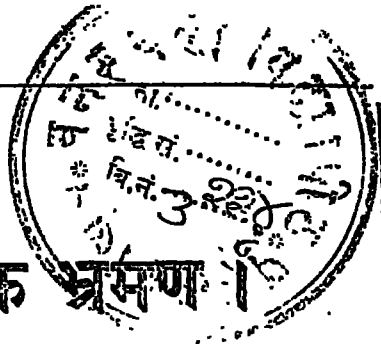
रात के साढ़े सात बज चुके हैं, लण्डन नगरी के सुप्रसिद्ध सम्पादक, मिष्टर राबर्ट सुडामोर अपने सजे सजाये कमरे में, जो केंगसिंगटन महल्ले की एक बड़ी भारी इमारत मे था, वैठे चुरुट पी रहे हैं।

धीरे २ समय व्यतीत होता गया और अब सिर्फ २० मिनिट आठ बजने को बाकी थे, कि अचानक एक घण्टी बड़े जोर से बजने लगी; जिसे सुन्तेही सम्पादक महाशय ने मुहँ का चुरुट, उँगलियों में ले लिया, और दरवाजे की ओर स्थिर भाव से देखने लगे। उधर इस कमरे का द्वार खुला और एक बड़ाही खूबसूरत, हाथ पैर से तैयार जवान आता दिखलाई पड़ा।

सम्पादक—प्यारे हेक्टर! कितनी खुशी तुम्हें देख कर मुझे हुई! तुम प्रसन्न हो, यह तो तुम्हारे चेहरेंही से मालूम होता है। इस थोड़े सफर में आशा है कि तुम्हें कुछ तकलीफ [illegible] हुई होगी. भगवान [illegible] तथा उसकी भीतरस पूरे इक्कीस अनुसंधान करने के निमित्त गया था, वह अब पश्चिम पर पहुँचाही चाहता है। यह समाचार पातेही हमारी यह एक हुई कि अपने समाचारपत्र के निमित्त किसी अच्छे सम्वाददाता को, उस दल से मिलने तथा उनसे पूछ कर वहां का समाचार

हुये, मानो किसी ध्यान ने उन्हें घबड़ा सा दिया, और फिर जवान की तरफ, विना कुछ बोले चाले कुछ देर तक खड़े देखते रहे।

सम्पादक—तुम अभी २ दूर से चले आते हो, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि थकने से तुम्हें भूख लग गई होगी। परन्तु हेक्टर, भोजन के तैयार होने में अभी आधे घण्टे की देर है और इसके बीच में मैं तुम से आज एक बड़ेही जरूरी विषय पर बात चीत किया चाहता हूं।

यह सुन्तेही हेक्टर उनकी ओर चौंक कर देखने लगा क्योंकि इसवक्त उसके हर तरह से खबर रखनेवाले दयालु-चित्त, सम्पादक का गला बड़ा भारी हो रहा था।

सम्पादक—हेक्टर! आज ठीक १८ बरस हुये कि तुम्हारे पिता, राल्फ हाल्डेन मेरे इसी कारखाने में नौकरी के लिये आये थे। उसवक्त उनकी उम्र ३० बरस की थी और हाथ पैर की गठन, चेहरे का आकार, गले की आवाज, सब तुम्हारीही जैसी थी। उनकी कुछही देर की बात चीत से मुझे यह अच्छी तर[illegible] मालूम हो गया कि वे एक बड़ेही बुद्धिमान और [illegible]

और वे [illegible]

और [illegible]

अ[illegible]

भली जान पड़ीं और न जाने क्यों मुझे उनकी ओर से एक बड़ाही प्रेम हो गया और मैंने उनको अपने कार्यालय में एडीटरी की जगह दे दी और फिर इस काम देने का मुझे कभी अफसोस न करना पड़ा। वे हमारे यहां अपने कामों के कारण बड़ेही बहुमूल्य गिने जाने लगे और जब वे यहां से गये तो मुझे ऐसा मालूम हुवा कि मानों मेरी दाहिनी भुजा टूट गई। लेकिन हेक्टर तुम अपने मन में विचारते होगे कि इन बातों के कहने से जो तुम्हें अच्छी तरह मालूम हैं मुझे क्या फायदा! पर नहीं! जो कुछ मैं कहता हूं उसे अच्छी तरह सुनो, यह सब जो मै अभी कह गया यह आगे के बात की केवल भूमिका थी! सात साल तक तुम्हारे पिता यहां रहे, और इसके बीच में मेरे ध्यान तक में कभी यह बात न आई कि इनके कोई लड़का है! और यह ध्यान तो दूर रहा मुझे यहभी न मालूम हुवा कि वे रहते कहां हैं।

तुम्हारे पिता सन् १८६७ में हमारे यहां उक्त पद पर नियुक्त हुये और सन् १८७४ में यह समाचार जगद्विख्यात हुवा कि उन महाशयों का दल, जो अफ्रिका में, पूर्व दिशा से पश्चिम की ओर यात्रा करने तथा उसकी भीतरी अवस्था का अनुसंधान करने के निमित्त गया था, वह अब पश्चिमीय किनारे पर पहुँचाही चाहता है। यह समाचार पातेही हमारी यह इच्छा हुई कि अपने समाचारपत्र के निमित्त किसी अच्छे सम्वाददाता को, उस दल से मिलने तथा उनसे पूछ कर वहां का समाचार

भेजने के लिये भेजें। इसपर राल्फ़ हाल्डेन तुम्हारे पिता ने स्वयं वहां जाने की इच्छा प्रगट की और एक भारी वादानुवाद के उपरान्त उनकी यह इच्छा मान ली गई।

अपने जाने के एक दिन पहिले वह मेरे पास इसी कमरे में आये, और आकर मुझे वह भेद वताया जिसे सात वर्ष तक उन्हों ने वड़ी सावधानी से छिपा रक्खा था; और वह यह था कि उनका एक १० वर्ष का लड़का है, जिसे वह वड़ाही प्यारा रखते हैं, और जिस्से अलग होना उन्हें वड़ाही वुरा मालूम होता था। हेक्टर! वह प्रिय पुत्र उनके तुम्हीं हो! तुम्हारे पिता ने वड़ीही नम्रता से मुझ से कहा कि उनके चले जाने पर मैं तुम्हारी हरतरह खवर लूं और किसी प्रकार का कष्ट न होने दूं! उन्होंने मुझे वहुत सा द्रव्य, तुम्हारे पढ़ाने लिखाने के लिये दिया और एक सन्दूकची जिस्के ताले पर मुहर की हुई है और तुम्हारे नाम का एक पत्र भी दिया। उस पत्र को तुम्हारे पिता वहुतही वहुमूल्य समझते थे क्योंकि उन्हों ने देती समय कह दिया था कि इस्की भली प्रकार खवरदारी करना, यदि मुझ पर कोई आपत्ति आपड़े तो तुम इसे खोलना और जो कुछ उसें लिखा है उसी के अनुसार करना। हेक्टर! यह सव मैंने स्वीकार कर लिया और उस्के दूसरे दिन सावधानी से तुम्हारे पिता अफ्रिका की ओर सिधारे। इस्के उपरान्त की घटना तुम्हें मालूमही है; जो पता कि तुम्हारे पिता ने दिया था उसी के अनुसार मैंने तुम्हारा मकान ढुंढ़वाया, तुम एक किराये के मकान में रहते थे

मैं तुम को वहां से यहां लाया । पहिले तुम अपने पिता के निमित्त बहुत रोते थे और तुम्हें केवल वही पढ़ना आता था जो कुछ तुम्हें वह सन्ध्या को पढ़ाते थे परन्तु मैं तुम्हें अपने लड़कों के साथ स्कूल भेजने लगा ! और ईश्वर जानता है कि ठीक उन्हीं की तरहं मैं तुम्हारी खबर लेने लगा ।

हेक्टर—वास्तव में महाशय आपने मेरे लिये बहुत कुछ किया ईश्वर इसका बदला आपको दे ।

सुडामोर—उसी साल की जुलाई में हमारे कार्यालय को आग से भारी हानि पहुँची और उसी के दो दिन उपरान्त तुम्हारे पिता के बारे में बड़ेही दुखद समाचार सुन पड़े अर्थात् मर्क्युरी नामक गुब्बारे का कुछ भाग कि जिसपर तुम्हारे पिता और केप लोपेडो का रहनेवाला उनका एक साथी दोनों सवार होकर गये थे नाईजजर नदी में बहता हुवा मिला; दोनों की मृत्यु में कोई सन्देह नहीं ! मुझे तुम से और भी कुछ कहना है, वह यह कि वह पत्र जो तुम्हारे पिता ने मुझे दिया था उसे मैंने अपने आफिस के एक सन्दूक में रख दिया और जब आग लगी तो उसी में वह भस्म हो गया और इसतरह तुम्हारे सम्बन्ध के प्रत्येक चिन्ह लुप्त हो गये; परन्तु नहीं अब भी इसने है !

यह कह कर मिष्टर सुडामोर ने एक सुवर्ण का यन्त्र अपने सन्दूक से निकाला और हेक्टर को दे दिया।

हेक्टर की कांपती हुई उंगलियों ने उस यन्त्र को खोला जिसमें

से एक औरत किं सुनहली बालों की लट निकली, और यन्त्र के दूसरे ओर एक स्वरूपवती बाला की तस्वीर थी जिस्की उम्र २० वर्ष से विशेष न होगी। हेक्टर ने पहिले इस तस्वीर की ओर दृष्टि की और फिर अपने पालनेवाले को देख कर चिल्ला उठा "मेरी मां"!

सुडामोर—मैं भी यही सोचता हूं! उस सन्दूकचे में बस यही था और अब उस पत्र का लेख कभी न मालूम होगा, तुम्हारे पिता ने यह भी कहा था कि यदि वह (तुम्हारा पिता) मर जावे तो तुम्हें उच्च श्रेणी की शिक्षा दिला कर ओक्सफोर्ड कालिज में भेज दिया जावे, तुम अब इक्कीस वर्ष के हुये और यही समय है कि तुम्हारे पिता की इच्छा पूर्ण की जाय।

हेक्टर ने इसबात का कुछ उत्तर न दिया और कुछ सोचता रहा, अन्त वह बोला कि सच तो यों है कि मैं बड़ाही अभागा हूं! आजही मैंने यह इच्छा की थी कि मैं अपने माता पिता के भूतपूर्व जीवन का वृत्तान्त पूछूंगा। मुझे वे सात वर्ष, कि जिनमें मैं अपने पिता के साथ था भली प्रकार याद हैं परन्तु उस्के पहिले क्या हुवा था, यह मुझे कुछ याद नहीं।

सुडामोर—और वह तुम्हें यादही कैसे होने लगा! क्योंकि जब तुम्हारे पिता का मुझ से प्रथम साक्षात् हुआ तो तुम्हारी उमर केवल ३ वर्ष की होगी। मुझे यह मालूम होता है कि वे लण्डन नगर के रहनेवाले नहीं थे। अच्छा कुछ दिनों के

उपरान्त सब मालूम हो जायगा लेकिन इस समय तुम्हें उन लोगों का पता लगाने के लिये व्यर्थ रुपया और समय न नष्ट करना चाहिये। मैं सदैव तुम्हें अपने पुत्र के समान जानता था और जानूंगा परन्तु देखो अब घण्टी बजी, चलो खाने के उपरान्त बातें होंगी।

इस्के उपरान्त दोनों उठें तब हेक्टर ने कहा महाशय! जो सलाह आपने मुझे दी है उसे मैं हृदय में रखता हूं! और इस्के धन्यवाद के लिये मेरी जिह्वाही ऐसी कहां है? और यह यन्त्र! हां! यही यन्त्र! मुझे तन मन से भी कुछ विशेष प्रिय रहेगा और ईश्वर ने चाहा तो इस भेद के पर्दे को मैं अपने सामने से अवश्य एक दिन उठा दूंगा॥

पहिला बयान।

जो कुछ ऊपर लिख आये उस्के ठीक चार वर्ष के उपरान्त अर्थात् सन् १८८९ की जुलाई में ठीक सुबह के समय हेक्टर, विक्टोरिया रेलवे ष्टेसन पर ट्रेन से उतरा और एक गाड़ी किंगसंगटन महल्ले तक की केराया कर, उसी ओर चला। हेक्टर अभी २ इंगलेण्ड में कारपेथियन पहाड़ की सैर करके आ रहा था। मार्च में इसने बी० ए० पास कर लिया है और मानों इसी परिश्रम के बदले में मिष्टर सुडामोर ने इसे चार महीने की छुट्टी घूमने फिरने की दे दी थी। इस चार महीने में इसने कोई पत्र मिष्टर सुडामोर को नहीं लिखा था, कारण यह कि कारपेथियेन में

डाक विभाग का बन्दोबस्त, कुछ भरोसा करने योग्य नहीं था और इसके अतिरिक्त इसकी यह इच्छा भी थी कि अचानक मकान पहुँच कर मिष्टर मुडामोर को मैं चकित करूंगा।

पर यह क्या ? गाड़ी केंगसिंगटन महल्ले में पहुँचा और जब मिष्टर मुडामोर के दरवाजे पर खड़ी हुई तो उसने उन के मकान में ताला बन्द पाया! अब पड़ोस के रहनेवालों से पूछने पर यह दुःखःमय समाचार सुन पड़ा कि मिष्टर मुडामोर का जून मास में अचांचक स्वर्गवास हो गया और उनकी स्त्री अपनी लड़की सहित, फ्रांस को मन बहलाने के लिये चली गई! इससे ज्यादा हेक्टर को और कुछ भी न मालूम हुवा! अस्तु बेचारा गाड़ी में बैठा, और उसने मिष्टर मुडामोर के कार्यालय की ओर गाड़ीवान को चलने को कहा।

जब गाड़ी घड़घड़ाती हुई नाफाक ष्ट्रीट के होटल के के नीचे से जा रही थी तो इसने गाड़ीवान को ठहरने के लिये कहा और आप उतर कर होटल में गया और वहां दो कोठरियां भाड़े पर ले और उन में अपना असबाब रख गाड़ी को पुनः कार्यालय की ओर चलने को कहा।

कार्यालय के सामने पहुंच कर इसने गाड़ी को बिदा कर दिया और स्वयं दफ्तर में गया। यहां मिष्टर पेजेड से जो मिष्टर मुडामोर के हिस्सेदार थे और अब उन के स्थान पर कार्य देख रहे थे यह मिला और अपना सब वृतान्त कह सुनाया।

मि० पेजेड—मुझे यह कहते बड़ाही दुःख होता है कि हमारे

हिसेदार महाशय का ६ सप्ताह गुजरे की स्वर्गवास हो गया। और इस अचांचक मृत्यु के कारण वह कोई लिखा पढ़ी अपने धन दौलत के बारे में न कर सके इसलिये नियमानुसार उनकी कुल सम्पत्ति का अधिकारी उनका लड़का हुवा। आप के हिसाब में केवल ५० पाउण्ड होते हैं यदि आप कहें तो मै उस्के लिये एक चेक लिख दूं।

इस्समय हेक्टर की हैरानी, कोई आश्चर्य की बात न थी पिता के सदृश इस्का दयालु जन स्वर्गगामी हो चुका था अन्तिम समय वह इस्के निमित्त कुछ न कर गया, अब संसार में हेक्टर के अपने वेही ५० पाउण्ड थे। परन्तु उसने इस्बात का कुछ ध्यान न किया कि मैं गरीब हूं क्योंकि वह जानता था कि मैं सुशिक्षित चालाक और तन्दुरुस्त युवा हूं। पर हां दुखः केवल उसे इस्वात का था कि वह व्यक्ति मर गया जो इसे इस्के पिता से भी विशेष चाहता था।

हेक्टर लड़खड़ाता हुवा आफिस से निकला और बे मतलब, बिना विचारे जिधर पैरों ने राह दिखाई उसी ओर जाने लगा। दो घण्टे तक वह इसी तरह पागलों की नाईं घूमता रहा, लाखों आदमी जो इधर से उधर आते जाते तथा अपने २ कामों लगे थे उनके बोलने चालने के घोर नाद ने भी इसे न चौंकाया। अन्त चलते २ उसने एक स्थान पर सिर उठाया, मानों कोई स्वप्न से चौंकता है तो अपने को लंडगेड नामी सर-

कस के निकट पाया वहां से टेम्स का किनारा निकट था, अत एव यह उसी ओर चला।

अब यह एक विलायती समाचारपत्र के दफ्तर के नीचे से जा रहा था तो उसने उक्त आफिस के दरवाजे पर एक बड़ी तस्वीर लगी देखी जिसके इर्द गिर्द भीड़ लगी हुई थी। हेक्टर भी उसी ओर चला और निकट पहुंच कर उसने उस तस्वीर में एक अंग्रेज तथा एक भयानक हब्शी को खड़े बात चीत करते, बना पाया, उसके नीचेही मोटे २ अक्षरों में यह लिखा था—

"मुर्दे का समाचार।

मर्क्युरी नामक गुब्बारा जिसपर मिष्टर राल्फहाल्डेन अफ्रिका की ओर रवाना हुये थे उसका एक भाग सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री को मिला है और उन्हें यह भी पता लगा है कि मिस्टर राल्फहाल्डेन वहां किसी स्थान में कैद हैं।"

हेक्टर ने एक बार पढ़तेही सब मतलब समझ लिया और उसकी ऐसी अवस्था हो गई कि लोग आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे। परन्तु एकही मिनिट के उपरान्त इसने अपने चित्त को सम्भाला और आगे बढ़ गया।

पहले तो इसे बड़ी प्रसन्नता हुई! और बातही कुछ ऐसी थी, राल्फहाल्डेन इसका पिता कहीं अफ्रिका में जीवित माना जाता था परन्तु इसके उपरान्तही उसकी प्रसन्नता गाढ़ दुःख से

बदल गई ! अर्थात् अब वह अपने पिता को कैसे छुड़ा सक्ता था ! ५० पाउण्ड में तो यह होनां असम्भव था उतने से तो शायद वह कठिनंता से अफ्रिका के किनारे तक भी न पहुंचेगा ! आह ! इस समय, मिष्टर सुडामोर का उसे ध्यान आया, और उनके न होने ने इस दुखः की अग्नि में घी का काम कर दिखाया। हां ! शायद यह समाचारपत्र वाला अपने आप से हमें उनकी खोज में भेजे ! जैसा कि न्यूयार्क हेरोल्ड ने डाक्टर लिविंग-स्टोन के लिये किया था। यह विचार कर यह उस्के एडीटर से मिलने के निमित्त ऊपर जाने लगा।

अभी वह दरवाजे के भीतर पैर रखताही था कि एक जवान आदमी से जो ऊपर से नीचे आ रहा था इस्से भेंट हुई और उसी के पीछे एक मोटा, नाटा, और अधेड़ वयस का मनुष्य उतर रहा था जिस्के पहिनावे से प्रतीत होता था कि वह जहाज़ी है।

वह जवान मनुष्य, हेक्टर को देखतेही चिल्ला उठा ! "हां हेक्टर ! कैसी खुसी की बात है, यार ! मैं तुम्हारेही मिलने के लिये जा रहा था (फिर कर अपने मोटे और नाटे साथी से) कप्तान जोली ! मैं आप को अपने साथी से परिचित कराता हूं ! आप मेरे बड़े मित्र हैं, आप का नाम हेक्टर हाल्डेन है, और इन्हीं के बारे में मैं अभी आप से बात चीत कर रहा था। कप्तान—आप से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई !

यह कहकर उसने अपना मोटा और मजबूत हाथ हेक्टर के हाथों में दे दिया।

हेक्टर—मुझे आशा है कि आप का मिज़ाज अच्छा होगा, मुझे भी आप से मिलकर बड़ीही प्रसन्नता हुई। (जवान से) फिलिप्! मेरे यार मैं बड़ी, कठिनता में पड़ा हूं, परन्तु पहिले किसी एकान्त स्थान में मुझे चलना चाहिये जिस्में वहां मैं अपनी राम कहानी सुनाऊँ! अच्छा वह तख़्ता जो दरवाजे पर लगा है उसे तुमने देखा! कुछ उस्का मतलब भी समझे, मेरे पिता जीवित हैं, और अफ्रिका में कैद हैं। साथही भाई! मैं उनकी सहायता से लाचार हूं।

फिलिप—अरे यार इसी के लिये तो हम तुम्हें ढूंढ़ने को थे, अच्छा तो आओ आइसिस क्लब में चलें और वहां इस विषय में सलाहें होंगी राह में तुम अपनी कहानी कहते चलो!

यह कहकर उन्होंने एक गाड़ी केराये पर की और उस्में बैठ कर सब, आइसिस क्लब की ओर चले। राह में हेक्टर ने अपना दुखड़ा आदि से लेकर अन्त तक कह सुनाया और अभी उसने उसे अन्त तक पहुंचायाही होगा कि गाड़ी, आइसिस क्लब में पहुंच गई।

यह लोग उतर कर भीतर गये और भोजन करने के कमरे में जा बैठे! इस समय वहां और कोई न था और कुछ ही देर के उपरान्त भोजन इन लोगों के सामने टेबिल पर चुन दिया गया।

फिलिप—(खाते २) हेक्टर! मैं देखता हूं कि तुम बहुत चंचल हो रहे हो,तो अच्छा मैं तुम्हारी इस व्यग्रता को अभी मिटाये

देता हूं। जब हम लोग कालिज में पढ़ते थे तो तुम्हें स्मरण होगा कि मैं कभी २ अपने चाचा, सरविल्फ्रेड कवेण्ट्री के बारे में बात चीत किया करता था। वे एक विचित्र मनुष्य हैं, इंग्लेण्ड में इनका आना योंही कभी होता है नहीं तो सदैव यह पृथ्वी के विचित्र २ स्थानों में भ्रमणही किया करते हैं। यह मेरे चाचाही हैं जिन्होंने मर्क्यूरी गुब्बारे का एक भाग अशान्ती के एक रहनेवाले से शाड नामक झील के पास पाया था। यह सब बातें तो समाचारपत्रों में प्रकाशित होही चुकी हैं! अब हम तुम्हारे हित की एक नई बात सुनाते हैं। कप्तान जोली, जो मेरे चाचा के बड़े पुराने दोस्त हैं इंग्लेण्ड में केवल एक बड़ा गुब्बारा खरीदने क निमित्त आये हैं; और जिसे एक सप्ताह में यह लेकर चले जाँयगे। हमारे चाचा की यह इच्छा है कि वह इस गुब्बारे में नगर लेगोस से सवार हो कर अफ्रिका के भीतरी भाग में तुम्हारे खोये हुये पिता की खोज में जांयें। मेरे चाचा आज कल लेगोस में हैं और मेरी तथा कप्तान साहब की राह देखते होंगे। कप्तान साहब से मेरे चाचा ने यह भी कहा था कि ये उनके एक दोस्त को, जिनका मकान यहीं है अपने साथ लेते आवें! लेकिन बदकिस्मती से, नहीं नहीं सौभाग्यवश, वे अमेरिका पहिलेही से चले गये हैं! तो मेरे प्यारे हेक्टर! क्या तुम उनके स्थान पर चलने के लिये तैयार हो?।

हेक्टर यह सुनकर खड़ा हो गया और खुशी के मारे अवाक् हो इधर उधर देखने लगा और फिर बोला। क्या? जो कुछ तुमने कहा वह हँसी तो नहीं है? यह हमारे लिये बहुत कुछ है, इसका धन्यवाद मैं किन शब्दों में करूं?

फिलिप ने हेक्टर को कुरसी पर बैठा लिया और कहा—"बस हेक्टर बस! हमें स्वयं तुम्हें धन्यवाद देना है, तुम्हारे साथ रहने से हमें कैसी प्रसन्नता होगी! और जो खर्च के बारे में कहो तो भाई! हमारे चाचा के साथ रहने में किसी को भी खर्च करने की आवश्यक्ता नहीं होती! और सब बातें कप्तान साहब तुम्हें स्वयं बता देंगे। हमारे चाचा की ढूढ़ने की इच्छा, उस खोये हुये व्यक्ति के लड़के के साथ रहने से और भी प्रबल हो जायगी। हां हेक्टर! ऐसे भ्रमण में जो २ कष्ट और भयानक आपत्तियां हैं उनसे तो आशा है कि तुम भली प्रकार अभिज्ञ होगे।

हेक्टर—अजी कैसा भय, और कहां की आफत, मैं धन्यवाद सहित तुम्हारे साथ चलूंगा! इससमय मैं समझता हूं कि मेरे बराबर इतनी बड़ी नगरी लण्डन में कोई भी प्रसन्न न होगा। और न अब मुझे कोई तैयारीही करनी है और न किसी से मिलनाही है, क्योंकि प्रथम तो मेरा कोई हैही नहीं और जो है भी तो उसी के मिलने के निमित्त अभी मैं जाता हूं इसमें च हे आगही का समुद्र क्यों न बीच में उमड़ आये।

इसके उपरान्त सब आइसिस क्लब से अपने २ घरको गये।

दूसरा बयान ।

गिनीं की खाड़ी में लेगोस् नामी एक टापू है। यह टापू इस समय हमारी ही भारतेश्वरी के अधिकार में है। इसमें एक नगर भी टापूही के नाम का है, जिस्की आवादी ४० हजार के लग भग है। हमारे पाठकगण यदि ३१ अगस्त सन् १८८६ को इस लेगोस नगर के आसपास कहीं होते तो उन्हें एक विचित्र तमाशा दिखाई देता। नगर के बाहर मैदान में एक बड़ा लम्बा चौड़ा गुब्बारा हवा में फूल रहा था और चारो ओर फरफराते हुये झंडों से मैदान घिरा हुवा था, और यदि कोई तीक्ष्ण दृष्टिवाला चाहता तो गुब्बारे का नाम जो मोटे २ अक्षरों में "एक्सप्लोरर" लिखा था पढ़ लेता। गुब्बारे के चौखूटे और चारों ओर से घिरे खटोलने के निकट पांच बड़े वीर और साहसी पुरुष खड़े थे। और ये सर विल्फ्रेड केवेन्ट्री, कप्तान जोली, फिलिप, हेक्टर, और एक हबशी गुलाम जिस्का नाम च्याको था खड़े थे। इनको घेरे हुये एक बड़ा भारी झुण्ड योरोपियन तथा अन्य जातियों का, लेगोस के हाकिम, और अन्य उच्च पदाधिकारियों का खड़ा था। विशेषतः इस्में नगरवासीं थे जो बड़े आश्चर्य से इस तमाशे को देख रहे थे।

पाठकगण! इस्के पहिले कि हम इन्हें वायु पर उड़ावें थोड़ा वृतान्त इनलोगों का आप से कह देना उचित समझते हैं।

सर विल्फ्रेड केवेन्ट्री इंगलिस्तान के बेरेन नामी उच्च पदवी के अधिकारी थे जिसे हम अपनी भाषा में नवाब कहना उचित

समझते हैं। इनका कद लम्बा, शरीर हृष्ट पुष्ट, तथा चेहरे से वीरता झलकती थी, वयस् इनकी पचास और साठ के मध्य में थी। बाल सुफेद और भूरे दोनोंही प्रकार के पाये जाते थे। इनके मुख के आकार से यह भी विदित होता था कि उन्होंने अपने जीवन में किसी समय कोई बड़ा भारी दुःख उठाया है। यद्यपि ये बड़े अमीर आदमी थे तथापि इन्हें अपना महल छोड़े लग भग २० वर्ष के हो गये थे और ये २० वर्ष इन्होंने केवल भ्रमणही में व्यतीत किये थे।

कप्तान जोली एक नाटे कद और गठीले बदन के मनुष्य थे, उनकी तोंद सामान्य से कुछ विशेष निकली हुई थी, इन के मुख से मसखरापन फटा पड़ता था इनको देखतेही पंच अखबारों की तस्वीरों का ध्यान आता था। कप्तान जोली की चालचलन जहाज़ वालों की सी थी। २० वर्ष पर्यन्त इन्होंने मल्लाही की थी और यदि सर विल्फ्रेड से दैवात् साक्षात् न हो गया होता तो अबलों यह किसी जहाज के कमाण्डर हो गये होते। सर विल्फ्रेड से साक्षात होने पर, इन्होंने मल्लाही छोड़ दी और ईश्वर की कृपा से इन्हें भी भ्रमण की बड़ी इच्छा थी, बस वह विल्फ्रेड के साथ हो लिये और भूतपूर्व दस वर्ष से पृथ्वी के अनेक भागों में इनके साथ २ घूमते रहे।

हेक्टर से तो पाठकगण भली प्रकार परिचितही हैं।

फिलिप के निमित्त इतनाही बहुत होगा कि वह सर विल्फ्रेड का भाञ्जा और उनका वारिस है, सर विल्फ्रेड भी उसे

बड़ाही प्यार करते हैं और हर एक बात में उस्का ध्यान रखते हैं।

अब च्याको महाशय का परिचय बाकी रहा जो इस भ्रमण के मुख्य कारण हैं। यह जाति का अशान्ती था और जब यह केवल ६ वर्ष का था तभी बुदमा लोग इसे गुलाम बनाने के निमित्त पकड़ ले गये थे, और तब से अब तक यह अफ्रिका में इधर उधर घूमताही रहा, अन्त यह अपने कैद से भागा और सन् १८८९ में दैवात् सर विल्फ्रेड केवेन्ट्री से मिलगया इस्के पास एक चमड़े की बोतल थी जिसपर मर्क्यूरी नामी बेलून का नाम लिखा था। यह बोतल उसे शाड नामक झील के पास वहां के एक रहनेवाले से मिली थी और सर विल्फ्रेड के पूछने पर उसने यह भी बताया कि उधर यह समाचार प्रसिद्ध है कि एक सुफेद मनुष्य उधर की किसी जाति के पास कैद है।

सर विल्फ्रेड को मर्क्यूरी बेलून का हाल भली भाँति मालूम था। इस समाचार के सुन्तेही उन्हें विश्वास हो गया कि वह सुफेद मनुष्य उसी गुब्बारे पर भ्रमण करनेवाला है और उन्हों ने उसी समय उस्के छुड़ाने का बिचार चित्त में ठान लिया; साथही उन को एक भारी भ्रमण का बहाना भी तो मिल गया था।

हमारे नौवाब साहब सायंस के एक भारी ज्ञाता थे। उन्होंने बेलून (गुब्बारे) पर सवार हो कर वहां जाने का निश्चय

किया ! यद्यपि लोग कहते थे कि यह असम्भव है परन्तु उन्हें अपनी विद्या पर पूरा भरोसा था कि हम अवश्यही इस गुब्बारे पर शेड नामक झील पर्यन्त जा पहुँचेंगे ।

सर विल्फ्रेड बातूनी न थे, वे बात के साथही काम कर दिखाते थे। चेको से मिलने के १ दिन उपरान्त उन्होंने कप्तान साहब को समझा बुझा कर गुब्बारे के निमित्त इंगलेण्ड भेजा था, जो पाठकगण को स्मरणही होगा। जब हेक्टर सर विल्फ्रेड से लेगोस में मिला तो उसे देख कर वे बहुतही प्रसन्न हुये और उन्होंने उस्के पिता को छुड़ाने का उस्से एकरार भी किया।

सब लोग हवा में उड़ने की तैयारी करने लगे। उन्होंने थोड़ी बहुत आवश्यकीय चीजें, जैसे बन्दूकें, कारतूसें, बिस्कुट, नमकीन गोश्त, एक पानी तथा एक ब्रांडी का पीपा, कुछ कम्बल यही सब लाकर उस्के खटोलने में रक्खा, इस्के अतिरिक्त और भी छोटीमोटी चीजें जो जङ्गलियों को पसन्द थीं अर्थात आईने, माले, कैंची, तमाखू, यह भी एक कोने में डाल दीं। तब सर विल्फ्रेड ने गुब्बारे के निमित्त कुछ विशेष चीजें भी उस्में रक्खीं अर्थात् एक नकशा, एक कम्पास, एक बेरोमेटर, एक रस्सी की सीढ़ी, और एक लङ्गर !

सर विल्फ्रेड को कुछ दिनों तक इच्छानुसार वायु के चलने की राह भी देखनी पड़ी थी ! अन्त जब एक दिन उनके मन के माफिक वायु उत्तर और पूरब के कोने के बीच में चली तो उन्होने अपने साथियों को इस्से सूचित किया जिसे

सुन वे सब लोग भी बहुत प्रसन्न हुये । और अब वे हैड्रू-जोन गैस से गुब्बारा भरने लगे । गुब्बारा क्रमशः गैस से भरते २ अपनी पूरी हद्द तक भर उठा और अपनी पूरी मोटाई में फूल कर इधर उधर हवा में उड़ने लगा ।

अब दिन के तीन बजे हैं। हज़ारों मनुष्य मैदान में जमा हैं । सर विल्फ्रेड खटोलने पर एक हाथ रक्खे अपने मुलाकातियों से विदा मांग रहे हैं । इनके चारों साथी इन्हीं के निकट खड़े इधर उधर देख रहे हैं ।

"विदा," "ईश्वर को सौंपा" यह सब कहने कहलाने के उपरान्त उन्होंने इस खटोलने में पैर रक्खा, इस्के उपरान्त कप्तान जोली ने अपने भारी शरीर का बोझा खटोलने में डाल दिया और फिर हेक्टर और फ़िलिप भी उसमें उचक आये ! चेको चढ़ती समय हिचकिचाने लगा परन्तु सर विल्फ्रेड ने इसे खींच कर भीतर डाल लिया । उस समय हाकिम लेगोस ने उन रस्सियों को जो गुब्बारे को बांधे हुई थीं कटवा डालीं ।

रस्सियों के कटतेही गुब्बारा बिजली की तरह तड़पता हुवा पहिले तो ऊपर, और फिर वायु के बहाव पर चला इधर इस्के हवा मे जातेही लेगोस के किले से तोपों की सलामी सर हुई । जब भीड़ छँट रही थी और गुब्बारा क्षण २ में छोटा होता दिखाई पड़ता था तो हाकिम लेगोस चिल्ला उठे कि अब ये लोग मुर्दों से भी गये गुजरे हैं ।

तीसरा बयान ।

जिससमय गुब्बारा सिर घुमा देने वाली तेजी से हवा में उड़ा तो उस समय हमारे इस छोटे से झुण्ड का प्रत्येक मनुष्य पृथक् २ ध्यान में डूबा हुवा था । सर विल्फ्रेड ने एक दृष्टि बेरोमेटर (वह कल जिस्से पृथ्वी का फासला जाना जाता है) और दूसरी कम्पास पर डाल कर कहा कि हमलोग इस समय पृथ्वी से १५०० फीट ऊँचे और अपनी ठीक राह पर जा रहे हैं ।

यह बात उनकी किसी ने न सुनी, क्योंकि हेक्टर और फिलिप, गुब्बारे के एक कोने में पड़े आँखें फाड़ २ कर नीचे देख रहे थे और कप्तान साहब खड़े होकर उस गुब्बारे के मोटे डील डौल पर नेत्र जमाये दिल्लगी से कुछ कहते जाते थे । और च्याको खटोलने में औंधा पड़ा हुवा अपने दोनों हाथों से मुँह छिपाये था ।

गुब्बारे पर भ्रमण करनेवाले अब अपने नीचे लेगोस के लम्बे चौड़े फैले हुये मैदान, समुद्र और बड़े २ टापू छोड़ते चले जाते थे । नगर की बस्ती अब पश्चिम के किनारे पर छूट गई थी जिस्के सामने बहुत से जहाज़ पानी पर अठखेलियां कर रहे थे ।

इस मनोहर अकृत्रिम दृश्य के देखने में सब मुग्ध थे और तब तक वे बराबर यहीं सब देखते रहे जबतक कि गुब्बारा उन घने तथा अभेद जङ्गलों के ऊपर नहीं पहुँचा, जो स्लेव कोष्ट

Slave-coast के किनारे के पास थे। अब अफ्रिका के पूर्वीय मैदान जो कुछ देर पहिले धुँधले दाग से दिखाई पड़ते थे एक के उपरान्त दूसरे सामने आते जाते थे।

गुब्बारा अब दो हज़ार फीट की ऊँचाई पर ठीक पूरब और उत्तर के मध्य में जा रहा था इस्समय इस्की चाल एक घंटे में पचीस मील के हिसाब से थी। सर विल्फ्रेड अपने कलों से यह सब देखते जाते थे।

नीचे के छूटते हुये स्थानों में, कोई विशेष मनोरंजक बात न थी। एक सीधा फैला हुवा जङ्गली दलदल, जिसमें नदियां और खाड़ियां पृथ्वी काटकर अपना स्थान बनाये थे नज़र आता और इसमें कहीं २ अन्न के लहलहाते खेत और झोंपड़ों के झुण्ड भी दिखाई पड़ते थे।

क्रमशः अन्धकार ने अपना विशाल शरीर बढ़ाना प्रारम्भ किया। चारों ओर के दृश्य, एक एक करके, आखों से छिपते गये। मण्डली के प्रत्येक मनुष्य के पास एक २ कम्बल उपस्थित था, जिसे उन लोगों ने अपने ओढ़ने के लिये निकाला क्योंकि यहां अब उन्हें बड़ी सरदी जान पड़ती थी।

सर विल्फ्रेड—हम लोग सरलतापूर्वक नीचे की गरम हवा में उतर सक्ते हैं, परन्तु हमारी यह इच्छा बिलकुल नहीं है कि हम अपने गुब्बारे के भरे गेस को अभी से व्यर्थ नष्ट करना प्रारम्भ करें! और फिर ये कम्बल तो हमको जाड़े से भली प्रकार बचा सकेंगे।

कप्तान—महाशय, यदि ये न भी बचा सकेंगे तो हमारे पास एक और बचानेवाली वस्तु है।

यह कह कर कप्तान साहब ने एक छोटा सा तेजाबी लम्प निकाला और उसे सलाई से जलाकर एक छोटा सा बटुवा काफी का चढ़ा दिया। फिर उसके उपरान्त इसके पीने में सभी मिल गये, सबके साथ चेको भी था, क्योंकि अब भय ने उसका गला छोड़ दिया था और इसका कारण यह था कि उसे भय दिलानेवाले दृश्य अब अन्धकार के पर्दे में छिप गये थे।

सर विल्फ्रेड—(काफी पीते २) मैं अनुमान करता हूं कि सौ में बीस भाग यह अच्छी बनी है! ऐसे समय में ऐसीही चीजें तो लाभदायक होती हैं।

कप्तान—तो क्यों महाशय अब मैं दूसरा बटुवा चढ़ाऊं?

सर विल्फ्रेड—नहीं! नहीं! एक प्याला इसका बहुत है, दूसरा तो नींद उचाट कर देगा।

हेक्टर—(हँसते हुये) आज का यह अन्तिम भोज है! अब और कुछ नहीं!

सर विल्फ्रेड—तो अब इससमय तुम्हारे सिवा, तुम्हें मीठी नींद सोने से और कौन रोकता है? हमलोग चौड़े खुले और साफ आसमान में बेखटके भ्रमण कर रहे हैं। तनिक चेको की ओर देखो कैसी लम्बी ताने है और यह इसे कल कैसा लाभदायक होगा।

उस अशान्ती के उदाहरण ने इन लोगों के चित्त पर कुछ भी असर न किया वे आपस में बक २ करते और जागतेही रहे। साथही नीचे के उन काले २ मनुष्यों के गावों को भी देखते जाते थे जिन में आग जल रही थी और जिनके सिरों पर से वे लोग बड़े वेग से चले जाते थे।

दो बजे रात को सर विल्फ्रेड ने अपने कम्पास से कुछ जाँच की और साथही भय के चिन्ह इनके चेहरे से झलकने लगे।

सर विल्फ्रेड—अन्त वही हुआ जिस्का भय लगा था। वायु की गति बदल गई और अब हमलोग ठीक उत्तर की ओर जा रहे हैं।

हेकर—तो क्यों महाशय अब ऐसी घटना की क्या दवा है?

सर विल्फ्रेड—बस यही है; कि हमलोग पृथ्वी पर ठहरें और प्रातःकाल पर्यन्त हवा की चाल बदलने की प्रतीक्षा करें और उतनी देर मे आशा है कि वायु की चाल अवश्य बदल जायगी।

यह कहते कहते उन्होंने जल्दी से गेस के ढँकने की रस्सी खींची और वह बड़े ज़ोर की आवाज करती निकलने लगी।

सर विल्फ्रेड—लंगर छोड़ दो!

यह सुन्तेही कप्तान जोली ने एक लंगर छोड़ दिया! पहिले तो वह पृथ्वी पर्यंत पहुँचाही नहीं, परन्तु जैसे जैसे गुब्बारा नीचे उतरता गया वैसेही वैसे कई बार हलके झटकें मालूम हुये और साथही वृक्षों की खड़खड़ाहट भी सुन पड़ी।

बात यह थी कि लंगर वृक्षों कें झुण्ड मे से होकर जा रहा

था सर विल्फ़ेड यह देख कर वडी घवड़ाहट से कहने लगे कि अव लंगर किसी वस्तु को पकड़ता , क्यों नहीं, गुब्बारा तो वहुतही धीरे जा रहा है ! अभी उन्होंने यह अच्छी तरह कहा भी न था कि एक ऐसा कड़ा झटका लगा कि जिस्से खटोलना हिल गया और गुब्बारा खड़ा हो गया।

सर विल्फ़्रेड—अब इसने किसी चीज़ को पकड़ लिया, अब कोई नीचे जाये और लंगर को दृढ़ता से कहीं अटकाये, यह बात बडीही ज़रूरी है।

हेक्टर—तो नीचे मैं जाऊँगा मुझमें शक्ति भी वहुत कुछ है।

सर विल्फ़्रेड—अच्छी बात है !

कप्तान जोली ने यह सुनकर रस्सी की सीढ़ी ऊपर बाँधकर लटका दी और अब वह गुब्बारा ठीक उसी के ऊपर लहरा रहा था जहां कि वह लंगर अटका था, रस्सी की सीढ़ी भी लंगर के साथही साथ इधर उधर वायु मे हिल रही थी।

सर विल्फ़्रेड—अन्दाजन् इसने किसी वृक्ष की डाल कों पकड़ लिया है। देखो हेक्टर इस्का भली भाँति विश्वास कर लेना कि वह दृढ़तापूर्वक अटका हुवा है।

कप्तान—हेक्टर, देखो जी खूब सावधान रहना, रस्सी की सीढ़ी के डंडों को अच्छी तरह पकड़े रहना कहीं से पैर न वहकने पावे।

हेक्टर फिलिप की सहायता से खटोलने के किनारे पर खड़ा हो गया और वहां से सीढ़ी पर उतर कर एक २ करके नीचे

जाने लगा। यह लुजलुजही सीढ़ी बड़ेही भयानक रूप से इधर उधर हेक्टर को लिये पेंगें ले रही थी। वायु के सन्नाटे इस्के दाहिने बायें से निकल जाते थे, परन्तु हेक्टर वेपरवाही से बराबर नीचे उतरताही चला गया और अन्त उस्का पैर किसी कड़ी वस्तु पर पड़ा। यह किसी वृक्ष की टहनी न थी, जैसा कि ऊपरवालों ने ध्यान किया था वरन् यह एक ढालुई और सम भूमि थी। हेक्टर ने सोचा कि यह अवश्य जमीन होगी और झुक कर उसने उस वस्तु को हाथ लगाया तो सूखे घास के गट्ठे हाथ लगे।

उधर उस्के साथियों को सीढ़ी न हिलने के कारण मालूम हो गया कि हेक्टर पृथ्वी पर उतर गया।

सर विल्फ्रेड—(ऊपर से) देखो सावधान! यदि लंगर तुह्मारे हाथ से छूट गया तो तुम कभी हम तक न पहुँचोगे।

ऐसी आफत् के नामही ने हेक्टर के रक्त को सुखा दिया और उस घोर अन्धकार में ऐसी आफत से बचने के निमित्त उसने एक दियासलाई अपनी जेब से निकाली, और उसे अपनी फतुही पर रगड़ दिया। सलाई वल उठी और इसने लङ्गर के देखने को चारों ओर दृष्टि उठाई, पर जैसेही उसने वहां के दृश्य को भली भांति देखा वैसेही उस्के मुहँ से एक लम्बी चीख निकल पडी। उसने अपने से दो कदम की दूरी पर लकड़ी की एक बड़ी भयानक मूरति जो बड़ी लम्बी थी खड़ी देखा, और यह लङ्गर उसी देव की गरदन में अटका हुवा था। जब यह दियासलाई

बुझ गई तो इसने अपनी काँपती हुई उङ्गलियों से एक दूसरी और त्रिसी जिस्के प्रकाश में देखना प्रारम्भ किया। अब की जो कुछ उसने देखा उस्से उस्के पैर लड़खड़ाने लगे और वह पीछे हट गया! दृश्य बड़ाही भयङ्कर था। अर्थात् उस मूरति के दोनो ओर दो बरछियां गड़ी थीं जिनपर दो मनुष्यं के सिर काट कर रक्खे हुवे थे। ये सिर अंग्रेजों के थे और उन्हीं के निकटही किसी जाति का झगडा रक्त से लतपत पड़ा था।

हेक्टर ने देखतेही पहचान लिया कि यह झगड़ा फ्रान्सीसियों का है! इस दृश्य ने हेक्टर को ऐसा डरा दिया कि उस्के मुंह से कोई शब्द न निकलता था। अन्त वह चिल्लाया " कोई नीचे आओ यहां मनुष्यों की खोपड़ीयां बरछियों पर गाड़ी हुई हैं और अभी उसने यहीं तक कहा था कि सहसा उस्के पैर तले की जमीन नीचे जाने लगी और बड़ी जोर से यह नीचे गिर पड़ा उसने इसपर बड़े कष्ट से अपने को सँभाला और अभी भली प्रकार उठा भी न था कि अन्धकार में से कुछ हाथों ने निकल कर इसे पकड़ लिया।

चौथा बयान।

इस अचांचक के आक्रमण से हेक्टर को मालूम हो गया कि वह किसी मुसीवत में है, उस्का गुप्त वैरी इसे पकड़े, तथा इस्के मुंह को बन्द किये इंस्की छाती पर चढ़ा आता है और एक विचित्र भयानक शब्द उस्के मुंह से निकल रहा है।

भाग्यवश हेक्टर के दोनों हाथ छूटे हुये थे और इन्हीं से उसने छाती पर चढ़े आते अपने दुश्मन को जोर से ढकेल कर एक ओर गिरा दिया और अब यह उठाही चाहता था कि चारों ओर बहुतसी भयानक चिंघाड़ें सुन पड़ने लगीं।

हेक्टर उसी अन्धकार में उठकर चारो ओर दौड़ने लगा, परन्तु साथही एक मसाल बल उठी और अनेक हाथों ने उसे कस कर पकड़ लिया। अब इसने प्रकाश में जो कुछ देखा वह पाहिले से भी कुछ विशेष भयानक था।

उसने अपने को एक लम्बे और ऊंचे झोंपड़े में कैद पाया इस्के चारों ओर घेरे हुये काले २ पिशाचों का झुण्ड रक्त की इच्छा से जीभ निकाले बैठा था। बहुत से मसालों की रोशनी से झोंपड़ा चमक रहा था और साथही हेक्टर की भयभीत निगाहों ने एक और त्रासदायक वस्तु देखी अर्थात् वह बहुत सी हथियारबन्द स्त्रियों के पहरे में था। यह स्त्रियां काहेको वरन् लम्बे और काले २ हाथ पैर की चुड़ैलें थीं। ये लम्बे २ पायजामे और उनपर चुस्त फतुहियां पहने हुई थीं। उनकी कमर एक लाल रङ्ग के कमरबन्द से कसी थी जिस्में बन्दूकें, छूरे, और कुल्हाड़ियां लटक रही थीं। इनके कानों में पीतल के मोटे २ भद्दे मुँदरे पड़े थे। ये देवस्वरूप चुड़ैलें अपने बैरी के चारों ओर विचित्र भयानक शब्द से चिल्ला २ कर नाच रही थीं। बात यथार्थ मे यह थी कि वह गुब्बारा अपनी असली राह को छोड़ कर राज्य

डेहोमी में (जो फ्रांसीसी विजय किये हुये स्थान के निकट था) आ पड़ा था और ये स्त्रियां शाह डेहोमी की अचल और अजीत सैन्य में की थीं, । लङ्गर इसी देश के एक गांव में इसी झोंपड़े की छत्त पर फँस गया था, क्योंकि वह मूरति झोंपड़े की छत्त पर रक्खी हुई थी।

उस पिशाची झुण्ड ने कोई शारीरिक वेदना अभी तक हेक्टर को जो चुपचाप खड़ा कांपता था नहीं पहुंचाई थी, किन्तु वे लोग केवल इधर उधर कूद २ कर चिल्ला रहे थे।

अन्त हेक्टर ने बड़ी हिम्मत करके झोंपड़े की छत्त की ओर दृष्टि उठाई जो ज़मीन से लग भग २० फीट के ऊंची थी वह स्थान अभी तक खुलाही था जहां से हेक्टर नीचे खींच लिया गया था। उस खुले स्थान से उसे तारे दिखलाई पड़ते थे। परन्तु गुब्बारा कहां था? क्या उस्के साथी लङ्गर निकाल कर और उसे उस्के भाग्य पर छोड़ कर चले गये? नहीं! इस ध्यान ने उसे स्वयंही बड़ा लज्जित कर दिया क्योंकि वह अपने साथियों से कभी ऐसी आशा नहीं रखता था।

अभी वह इसी ध्यान में था कि सहसा कोई वस्तु उस्के, और सितारों के बीच में आ गई। यह अवश्य गुब्बारा था! इस्के दोस्तों ने इस्का पीछा अभी लों नहीं छोड़ा था, और इसे बचने की आशा भी हो गई; परन्तु जैसेही उसने अपनी दृष्टि नीचे करी और उन पिशाचों के जूथ को देखा तो वह आशा स्वप्नवत् बोध होने लगी। इतने बड़े भयानक झुण्ड में से उस्के साथी उसे किसी प्रकार

नहीं निकाल सक्ते थे। भला सर विल्फ्रेड और उनके साथी इस हथियारबन्द भारी झुण्ड के विरुद्ध क्या कर सक्ते हैं? कुछ नहीं! और अब इसे अपनी मृत्यु का पूरा भय हो गया। इसलिये उसने आनेवाली आपत्ति के निमित्त अपने को प्रस्तुत कर लिया।

अब वह भयानक चिङ्घाड़ मिट गई थी, और वह भयदायक झुण्ड आपस में अपनी भाषा में बात चीत कर रहा था! इतने में पीछे पैरों के शब्द सुन पड़े और हेक्टर ने जो फिर कर देखा तो कुछ मर्दों को भी कोठरी के भीतर पाया। ये उन स्त्रियों से कहीं ज्यादा भयानक थे। इनके आतेही बात चीत प्रारम्भ हुई!

इनके पहिनावे से प्रतीत होता था कि ये लोग कोई उच्चश्रेणी के अफसर थे, क्योंकि वे मनुष्यों की खोपड़ियों की टोपियां जिनपर किसी विचित्र पखेरू के पर खुँसे थे पहने हुये थे। इनका शरीर बाघ की खाल से छिपा हुवा था।

जो बहस वे कर रहे थे वह कुछ देर के उपरान्त अन्त को पहुँची! और हेक्टर के लिये यह बड़ाही अच्छा था कि वह उनकी भाषा नहीं समझ सक्ता था। बहस के अन्त होतेही अब उनमें एक झगड़ा प्रारम्भ हुवा और हठात् सबके सब अपने कैदी के चारों ओर स्थान छोड़ कर दीवार से पीठ लगा लगा कर खड़े हो गये। खड़े होने के एकही पल के उपरान्त सब एकही स्वर से चिल्ला उठे और चुप हो गये।

बेचारा हेक्टर इस विचित्र मामले को कुछ भी न समझा, पहले तो उस्का ध्यान गुब्बारे पर गया कि कदाच् इन्होंने उसे देख पाया हो परन्तु जब वे सब चुप चाप खड़े रहे तो उस्का यह भय दूर हो गया।

इधर यह पिशाची यूथ इस्तरह खड़ा था मानो किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो कि इतने में एक लम्बा और सबसे भयानक राक्षस उस झोपड़ी में आया और हेक्टर के निकट खड़ा हो गया।

इस्की जटायें बड़ी लम्बी २ थीं और कपड़ों में केवल एक लँगोट कसे था इस्की दाहिनी विशाल भुजा में एक खांड़ा चमक रहा था। हेक्टर के चित्त में इस्के देखतेही विश्वास जम गया कि यह जल्लाद है। और वास्तव में वह था भी जल्लादही! क्योंकि उसने आतेही हेक्टर के कन्धे पर हाथ रख दिया और इसे घुटना टेक देने का इशारा किया। यह देखतेही बेचारे हेक्टर की हिम्मत बिलकुल जाती रही, वह अपने भयानक शत्रु का हाथ, कन्धे पर पडतेही कांप गया, उस्के पैर डगमगाने लगे। उस ने उस झुण्ड से इशारे में अनेक प्रकार की विनती करनी प्रारम्भ की।

परन्तु आह! वह दृष्टियां जो उस्की विनती के प्रत्युत्तर में उसपर पड़ रही थीं कैसी रक्त को सुखानेवालीं और डेरावनी थीं, उनकी मूर्ति से झलकता था कि वह इस मृत्यु के तमाशे को देखने के निमित्त बड़ेहीउत्सुक हैं।

हेक्टर का सिर घूम गया और वह हाथ उठाकर ज़ोर से चिल्लां उठा! "सर विल्फ्रेड; मुझे बचाओ!! मेरी मदद् करो!!! मुझे ये राक्षस मारे डालते हैं !!!!"

परन्तु हाय ! वहां कौन सहायता करनेवाला था, यह ध्यानही ध्यांन था, वे उत्सुक राक्षस आपस में बड़बड़ाने और इसकी मृत्यु के निमित्त घबड़ाने से लगे ।

जल्लाद ने हेक्टर का कन्धा बेरहमी से पकड़ कर एक झटका दिया जिस्से कि वह अपने घुटनों के बल आ रहा! मृत्यु के सदृश वह खांड़ा अपने स्थान से चमक कर उस निर्दयी जल्लाद के सर से ऊँचे जा पहुंचा, उन अनगिनती मसालों के प्रकाश में वह बिजली की तरह चमक रहा था और उस्का निस्सहाय शिकार, उस्के नीचे पृथ्वी पर तड़प रहा था ।

हेक्टर ने उठने का उद्योग किया, और साथही उस निर्दयी जल्लाद के पैरों से लपट कर बल करने लगा परन्तु कुछही काल में वह भूमि के साथ दबा दिया गया, और वह खांड़ा चमक कर ऊपर से नीचे की ओर चला ।

बस ठीक़ इसी हृदयविदारक समय में जब कि हेक्टर की गरदन बाल से भी विशेष पतली हो रही थी एक गरजता हुवा शब्द बड़े बेग से सुन पड़ा "हेक्टर ! यदि जान प्यारी है तो इस रस्सी की सीढ़ी को उछल कर पकड़ लो" और इन शब्दों के साथही एक बन्दूक के दगने का शब्द सुन पड़ा और फायेर

के साथही साथ वह जल्लाद बड़ी जोर से चिल्ला कर धम से भूमि पर लोट गया।

हेक्टर खुशी से उछल पड़ा और उसने कूद कर उस रस्सी की सीढ़ी को अपने हाथों में जोर से पकड़ लिया और साथही ऊपर से शब्द सुन पड़ा "जल्दी खींचो" अब हेक्टर की समझ में कुल बातें आ गईं। उसने एकही साथ ऊपर से हर्ष की किलकारी और नीचे से भयानक चिंघाड़ सुनीं। सीढ़ी बड़ी शीघ्रता से ऊपर खींची जाने लगी, ऊपर जाते २ हेक्टर के हाथों में किसी चीज का बड़ी जोर से धक्का लगा जिस्से इसे भय हो गया कि सीढ़ी अब हाथ से छुटी! परन्तु नहीं! ईश्वर ने कुशल किया और वह फिर सँभल गया। सम्भलतेही अब नीचे से गोलियां आनी प्रारम्भ हुई जो बिना किसी निशाने के छोड़ी जाती थीं। कितनीही सनसनाती हुई इस्के आस पास से निकल गईं।

अब उसे खटोलने की सूरत उस अन्धकार में दिखलाई पड़ने लगी, यहां लों कि कुछ हाथों ने पकड़ कर उसे खटोलने में खींच लिया।

क्षण भर के उपरान्त जब हेक्टर ने नीचे की ओर दृष्टि की तो अपने को पृथ्वी से बहुत ऊंचा पाया औ अब न तो मशालों की रोशनीही कहीं दिखलाई पड़ती थीं, और न बन्दूकों का शब्दही कान में आता था, जिस्से इसे बड़ा आश्चर्य जान पड़ा कि गुब्बारा तो आखिर झोंपड़ेही पर था वह सब दृश्य

हठात् गायब हुवा तो कैसे हुवा ! अन्त जब इसने बड़ेही ध्यान-पूर्वक देखा तो जान पड़ा कि गुब्बारा उड़ा जाता है और यही कारण उन सब चीजों के न दीख पड़नें का था । सर विल्फ्रेड ने रस्सी लङ्गर सहित पहिलेही काट दी थी !

हेक्टर खटोलने में आतेही गहिरी नींद सो गया और जब वह उठा तो उसने अपने चारों ओर धूप फैली पाई और कप्तान साहब को काफी का प्याला अपने होठों से लगाते पाया । इस उत्तम वस्तु ने हेक्टर की खोई हुई स्मरणशक्ति को पुनः एकत्रित कर दिया । अब उस्को गत रात की घटना स्वप्नवत् मालूम होती थी। उसे प्रथम तो विश्वासही नहीं होता था परन्तु जब वही सब वृत्तान्त अपने साथियों द्वारा सुना तो ईश्वर का धन्यवाद अपने छुटकारा पाने पर करने लगा ।

सर विल्फ्रेड—अजी न मालूम ईश्वर को क्या करना था जो अबलों तुम्हें जीवित रक्खा ; भई हमारे इस जीवन में कई बार भारी से भारी आपत्तियों का सामना पड़ा परन्तु इस तुम्हारी आपत्ति से कम ! और छुटकारा भी बड़ेही विचित्र तरह से हुवा । इस्का वृत्तान्त यों है कि गुब्बारा अन्धकार में अपनी राह छोड़ कर राज्य डेहोमी में आ गया था, और इस मूरति में जो उस झोंपड़े पर रक्खी थी उसका लङ्गर अटक गया था । और उधर आज कल शाह डेहोमी और फ्रांसीसियों में लड़ाई छिड़ी हुई है जो आश्चर्य नहीं कि कहीं उसी गांव के पास होंगे, तथापि डेहोमी अपने वैरियों को उसी मूरति पर वलि चढ़ाया

करते हैं। बरछे पर रक्खे हुये वे सिर और झण्डा इस्लात की गवाही के निमित्त बहुत हैं। हां तो जैसेही तुम पकड़े गये, वैसेही हम इस सीढ़ी को पकड़ कर नीचे उतर गये, और एक धरन पर खड़े होकर उस खुली जगह से तुम्हारी नीचे की सब अवस्था देखने लगा था। तुम अनुमान कर सक्के हो कि उस समय मेरा रक्त कैसा उबलता था। यदि तुम मारे जाते तो मुझपर एक देशी के मरवा डालने का कितना बड़ा कलङ्क लगता है, और यदि कहीं उन राक्षसों की दृष्टि बेलून पर पड़ती है तो एकही गोली उसका काम तमाम करने को बहुत है। और फिर हम लोगों का भ्रमण और तुम्हारे पिता की खबर और सब पर यह, कि अपने प्राणोंही से हाथ धोना पड़ता। अस्तु मैं ईश्वर पर निर्भर हो वहां चुपका बैठा था। उनकी भाषा भी मुझे कुछ आती है इस्से मैं उनकी बातें समझ गया। वे तुम्हें फरांसीसी जासूस समझे हुये थे और फरांसीसी सिपाहियों को उत्तम शीक्षा देने के लिये तुम्हारा सिर काट कर उनके केम्प में फेंक आने की इच्छा किये हुये थे। इससमय एक चाल मेरे ध्यान में आई। और वह यह कि मैंने गुब्बारे को उस छत के निकट इतना खींचा कि खटोलना छत पर आ गया तब उसे मैंने लङ्गर में अटका दिया, साथही कप्तान जोली से एक विशेष इशारे पर दो बालू के थैलों को पृथ्वी पर फेंक देने के लिये कहदिया। चेको से यह कह दिया कि वह भी उसी इशारे पर कुल्हाड़ी से रस्से को काट दे। फिलिप के हाथ में रस्सी की सीढ़ी दे

दी कि वह हमारे कहतेही उसे उस खुली जगह के भीतर लटका दे, और मैं हाथ में बन्दूक ले कर उसी खिड़की पर बैठ गया।

जो कुछ सोचा था वह सब ठीक हुवा, जल्लाद को गोली से मारा, और तुम्हें सीढ़ी पर ऊपर खींच लिया, बस उसी समय चेको और जोली ने भी अपना २ कर्तव्य साधन किया और इसतरह तुम उन राक्षसों से छूटकर यहां आये! ईश्वर का बहुत २ धन्यवाद है।

यह कह कर सर विल्फ्रेड लेट गये और हँसने लगे।

पांचवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड बड़ेही शान्तिरूप से बोले; "परन्तु मई वास्तव में तो यह हँसने का स्थान नहीं है। अब यदि ईश्वर न करे कहीं पुनः ऐसी आपत्ति मे पड़े तो मैं नहीं जानता कि उस्से तुम्हें कैसे उद्धार करूंगा। ये जङ्गली समझेही नहीं कि तुम कैसे छूटे, यद्यपि उन्होंने सैकड़ोही गोलियां ऊपरकी ओर मारीं परन्तु उन्हें गुब्बारा बिलकुल नहीं दिखाई पड़ा था।

कप्तान—मेरी हड्डियांही गलें जो मैं ऐसे आपत्ति में पड़ जाने की इच्छा भी करूं!

सर विल्फ्रेड—(शान्त भाव से) मई अभी यह कोई नहीं कह सक्ता कि आगे क्या होगा अभी तो यह श्रीगणेशही है।

हेक्टर—क्यों महाशय! क्या वास्तव में शाह डेहोमी के पास स्त्रियों की फौज है?

सर विल्फ्रेड—हां! शाह डेहोमी के पास स्त्रियों की फौज है जो कुल अफ्रिका में ईश्वर के कोप के तुल्य गिनी जाती हैं। यह स्त्रियां जिनकी फौज २० हजार की है शाह डेहोमी के फौज की जान गिनी जाती हैं, वह अपनी निर्दयता, पाजीपन, कड़ाई, और दिलेरी के लिये विख्यात हैं। इनकी कवायद बड़ी कड़ी है और वे बड़ीही चालाकी से लड़ती हैं बस इस्का सबूत यह है कि फ्रांसवालों के इन्होंने छक्के छुड़ा दिये। यह बहुतही बुरा हुआ कि वायु बदल गई और हम अपनी राह से भटक गये। इससमय, अब हम ठीक राह पर जाते हैं और प्रत्येक घण्टे ३० मील में के हिसाब से जा रहे हैं।

फिलिप—भला शाड झील यहां से कितनी दूर होगी?

सर विल्फ्रेड—बस यही कोई आठ हजार मील के लगभग होगी।

फिलिप—हां! आठ हजार मील! तो क्यों महाशय वहां पहुंचेगे भी?

सर विल्फ्रेड— हां क्यों नहीं यदि वायु ठीक मिलती जाय! यद्यपि हमारी गेस कुछ कम हो गई है; परन्तु कोई परवाह नहीं। अच्छा अब पहिले भोजन तो करलें फिर ऐसी बातें हुवा करेंगी।

कप्तान जोली को धन्य है! जिन्हों ने खाने का पहिलेही से उचित प्रबन्ध कर रक्खा था। सब ने बिसकुट और गोश्त बड़े

मज़े के साथ खाया और अन्त में एक २ प्याला कहवे का पी लिया ।

सूर्य देव अब बहुतही ऊंचे हो गये और वे वायु में भ्रमण करनेवाले ऐसे उत्तम दृश्य को देख कर फूले न समाते थे गुब्बारा इससमय पृथ्वी से नौ सौ फीट की ऊँचाई पर पृथ्वी के के अनेक भागों पर से उड़ा जाता था । वन और हरियाली के मैदान, पहाड़ियां, झीलें, और बहुत सी नदियां उन झोंपड़ों सहित जो उनके इधर उधर बने थे एक २ करके नेत्रों के सामने आते और अदृश्य होते चले जाते थे ।

स्थान २ पर जङ्गली मनुष्यों के झुण्ड के झुण्ड झोंपड़े से बाहर निकल कर आश्चर्य से मुंह बाय २ ऊपर की ओर देख रहे थे ।

सहसा अब पूर्व दिशा की ओर कोई काली २ वस्तु बड़ी दूर तक फैली हुई दिखाई पड़ने लगी । सर विल्फ्रेड ने इसे देखतेही कहा कि यह कोंग नामी पर्वत है इसी के उस पार नाईज़र नामी बड़ी नदी बहती है, आशा है कि हम दोपहर के पहिले उसे पार कर लेंगे ।

एक घण्टे के उपरान्त ये लोग पारवा देश के ऊपर से होकर जाने लगे । पृथ्वी का यह भाग एक बड़ीही भयानक जाति से बसा हुवा था, यहां से अब कोंग पर्वत भली प्रकार दिखाई पड़ने लगा ।

सर विल्फ्रेड जो इस प्रान्त के भुगोल के भली प्रकार ज्ञाता थे अपने साथियों को समझाते और आश्चर्यजनक विषय बताते चले जाते थे इसतरह राह भी बहुत शीघ्र पीछे छूटने लगी। दो पहर से कुछ पहिले जैसा कि सर विल्फ्रेड ने भविष्य वाणी की थी कोंग पर्वत की बरफ से ढँकी हुई चोटियां जल्दी २ निकट आने लगीं।

सर विल्फ्रेड—अपने २ कम्बल निकाल लो क्योंकि हम अब और ऊंचे जाँयगे।

यह कहकर उन्होंने बालू के दो थैले नीचे फेंक दिये जिस्से गुब्बारा अब दो हज़ार दो सौ फीट की उंचाई पर हो गया।

इस पर्वतश्रेणी के कुछ भाग इस उंचाई से भी कहीं विशेष ऊंचे थे। सर विल्फ्रेड बड़ीही उत्सुकता से आनेवाले समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। सर्दी इस समय बड़ीही कड़ी पड़ रही थी, यद्यपि सब लोग कम्बल ओढ़े थे पर तौभी मारे शीत के अकड़े जाते थे। १२ बजे गुब्बारा एक चौड़ी घाटी के बीच से कि जिस्के दोनों ओर दो बड़ी २ चोटियां उठी हुई थीं जाने लगा। आधे घण्टे तक वायु पर भ्रमण करनेवाले ये पथिक एक ऐसे मनोहर और विशाल दृश्य को देख रहे थे कि जिस्का जोड़ पृथ्वी के बहुत कम भागों में पाया जाता है। इनके दोनों ओर पहाड़ियां सिर से पैर तक बड़े भारी और हरे २ वृक्षों से ढँकी माथा उठाये खड़ी थीं। इन में कहीं

बड़ी गुफायें जङ्गली लताओं से भूषित दिखाई पड़ती थीं। स्थान २ पर चांदी के रङ्ग के सोते अठखेलियां करते नीचे की ओर बह रहे थे। इनके ऊपर पर्वत की बड़ी २ चोटियां जो बरफ से ढँकी खड़ी थीं सूर्य की किरनों के पड़ने से बड़ाही विचित्र तमाशा दिखाती थी अर्थात् अनेक प्रकार के रङ्गों की किरनें अपने देखनेवालों पर डाल रही थीं। अब इस्के उपरान्त छोटी २ पहाड़ियाँ और फिर ढालुवां और हरे मैदान का तांता प्रारम्भ हुवा।

इधर सबने मिलकर अब भोजन की सामग्री एकत्रित की और आपस में बैठकर बड़ीही इच्छापूर्वक अपनी तृप्ति की।

ठीक दो बजे गुब्बारा नदी नाइज़र के ऊपर से होकर जाने लगा। इस नदी के दोनों किनारों पर फूस के हटके बने हुये झोपड़ों का तांता था।

इस्के एक घण्टे के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने कम्पास और नकसे को देख कर कहा कि हम लोग इस समय ठीक पूर्व और उत्तर के कोने में जा रहे हैं चाल हमारी बड़ीही तेज़ है। हमारे नीचे गेंडो देश है जो एक बड़ेही भयानक सुलतान के अधिकार में है। उक्त सुलतान नित्य प्रातः काल दस गुलामों की गर्दन अपने किले के सामने कटवाता है. और इस्के १५०० महल हैं। इनबातों के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने कुछ गेस निकाल दी जिस्से गुब्बारा पांच सौ फीट की ऊंचाई पर आ गया। और वे कहने लगे कि अब इसे ईश्वर की राह पर छोड़ देना चाहिये।

गत रात्रि को कोई भी नहीं सोया था सो अब फिलिप एक ओर लेट गया, सर विल्फ्रेड और कप्तान जोली ने शतरञ्ज बिछाई। और हेक्टर उस खेल को देख कर अपने मन में बिचारने लगा कि सर विल्फ्रेड भी क्याही विचित्र मनुष्य हैं! वह जानतेही नही कि भय क्या पदार्थ है अब इसी समय देखो कि कैसे आनन्द से बैठे शतरञ्ज खेल रहे हैं मानो लेंगोस के किसी महल के कमरे में आप बिराजमान हैं। कोई आश्चर्य नहीं! यदि इस्के एकहीं घण्टे के उपरान्त किसी ऐसी बात को सोचना पड़े जिस्में जीवन का वारा न्यारा हो, पर इस्की इन्हें कोई भी चिन्ता नहीं! तनिक नेपोलियन का वाटरलू के मैदान में शतरञ्ज का खेलना याद कीजिये! कैसी असम्भव बात मालूम होती है। यदि नेपोलियन भी इसी स्वभाव का मनुष्य होता तो आशा है कि तवारीख का पृष्ट दूसरेही तरह लिखा जाता। अन्त हेक्टर भी सो गया।

सर विल्फ्रेड ने सन्ध्या तक कप्तान साहब से कितनहिी बाजी जीती और जब सूर्य अस्त हो गया तो शतरञ्ज उठा दी!

सर विल्फ्रेड ने कम्पास देख कर कहा कि अभी लों हम सीधी राह पर हैं; वायु का वेग, जो हमें लाभदायक है बढ़ताही जाता है। इस्की मुझे आशा भी न थी। परन्तु आह जोली! ईश्वर बचाये अबकी हमलोग बुरे फँसे! जान बचाने को, इस बेर फिर एक कड़ा उद्योग करना होगा, देखो उधर देखो!

सर विल्फ्रेड का अनुमान ठीक था, पश्चिम की ओर से बड़े २ काले २ बादल शीघ्रता उठ रहे थे और उन्हीं के साथही साथ वायु भी प्रचण्ड होती जाती थी । इसी के तेज़ होने से सर विल्फ्रेड बड़े प्रसन्न हुये थे परन्तु अब बातही और हो गई ! इतने में बिजली भी चमकी और उन्हों ने कहा ईश्वर मङ्गल करे तूफान भी साथही साथ है। परन्तु अभी तक हमारा बचना असम्भव नहीं है ! जोली ! उत्तम होगा कि हम अपने साथियों को जगा दें और कुछ भोजन भी करा दें जिस्में आनेवाली आफत का सामना करने में हमलोगों का पेट खाली न रहे ।

छठवां बयान ।

कप्तान साहब ने भोजन की सामग्री एकत्रित करके अपने साथियों को जगा दिया परन्तु उनसे आनेवाले भय का समाचार न कहा । अब चारों ओर घोर अन्धकार फैलने लगा । उधर कप्तान साहब भोजन की तैयारी कर रहे थे और इधर सर विल्फ्रेड अपने साथियों को सुस्त देखकर उनका चित्त इधर उधर की मनोरञ्जक घटना से बहला रहे थे ।

सर विल्फ्रेड—अब हमलोग राज्य सोफोटो के ऊपर से जा रहे हैं यहां के रहनेवालों को फल्ब कहते हैं। फिलिप! यह बड़ी भयानक और जङ्गी जाति है इस्के उपरान्त राज्य बोरेन है और फिर उस्के बाद से शाड झील प्रारम्भ

हो जाती है। ईश्वर ने चाहा तो प्रातः काल पर्यन्त वह हमें दिखाई देने लगेगी।

इसके उपरान्त उन लोगों ने भोजन किया। वेलून अब क्रमशः नीचे की ओर उतरता जाता था, अभी तक इतना प्रकाश बाकी था कि वृक्षों के झुण्ड धुँधले २ दिखलाई पड़ते थे।

सर विल्फ्रेड—मेरी समझ में नहीं आता कि मैं अब क्या करूं। यह बेतरह सन्नाटा किसी आनेवाले बड़े तूफान का समाचार दे रहा है। अब छुटकारे के केवल दोही रास्ते बाकी हैं एक तो यह कि हम निरर्थक असबाब फेंक दें तो तूफान की सीमा से ऊपर जा सक्ते हैं और फिर यह तूफान और बिजली सब हमारे नीचे रह जाँयगे परन्तु ऐसा करने में पाहिले तो हमें बहुत से असबाब से हाथ धोना पड़ेगा दूसरे बहुतसी गेस व्यय करनी पड़ेगी और फिर वह इतनी कमः रह जायगी कि शाड झील पर्यन्त पहुँचना कठिन हो जायगा। दूसरी तदबीर यह है कि किसी खुली हुई जगह में वेलून को उतारें और वृक्षों के बीच में इसे फँसा दें, इसमें भी बड़ा भय है एक तो बिजली का दूसरे वृक्ष की डालों का कि कहीं गुब्बारे में लग कर वे उसे फाड़ न दें।

यह कह कर वे अपने साथियों की ओर उनकी इच्छा जानने के निमित्त देखने लगे। फिलिप की तो यह राय थी कि ऊपरही चढ़ चलें परन्तु हेक्टर और कप्तान जोली नीचे की

ओर जाना अच्छा समझते थे; चका ने कुछ न कहा। वह एक कोने में बैठा बिस्कुट खा रहा था।

सर विल्फ्रेड—नीचे जाना बहुतही उत्तम होगा। वास्तव में इस्के अतिरिक्त और कोई राह प्राण बचाने की नहीं है! ओफोह! देखो तो तूफान कितना शीघ्र बढ़ा चला आता है!!!

यह कहकर उन्हों ने तूफान की ओर इशारा किया, यद्यपि उस अन्धकार में तूफान की कालिमा कुछ भी न दिखाई पड़ती थी परन्तु तारों के जल्दी २ छिपने से तूफान का आगमन जान पड़ता था। इतनेंही में बिजली वेग से चमकी और, चमक कर गुब्बारे के इधर से उधर निकल गई!

सर विल्फ्रेड—अब आगे बढ़ना मूर्खता का काम है, कहीं ऐसा न हो कि बिजली से गेस भड़क उठे; अब शीघ्र नीचे उतरना चाहिये।

यह कहकर उन्होंने लङ्गर फेंक दिया जो वृक्षों में जकड़ कर रह गया। सर विल्फ्रेड ने रस्सी की सीढ़ी नीचे लटका दी और उसी पर से वे उतर आये। नीचे जाकर उन्होंने आवाज दी! "हेक्टर! एक लालटेन जलती हुई और रस्सा लेकर नीचे उतर आओ"। साथही हेक्टर ने जवाब दिया "आया" और तुरन्त ऊपर कही हुई वस्तुओं को लेकर नीचे उतर गया। नीचे जाकर उसने देखा कि लङ्गर भूमि से ३० फीट ऊँचे एक वृक्ष में फँसा हुआ है और सर विल्फ्रेड उसी की डालियों पर बैठे हुये हैं, हेक्टर से रस्सा लेकर उन्हों नें एक बड़ी भारी डाल में

बाँध दिया और रस्से के दूसरे सिरे में लालटेन बाँधकर हेक्टर से कहने लगे कि अब तुम पृथ्वी पर उतरो मैं राह में तुम्हें उजाला दिखाऊँगा। हेक्टर बिना किसी परिश्रम के नीचे उतर आया और पृथ्वी पर खड़ा हो गया।

सर विल्फ्रेड—(ऊपर से) अब तुम इस रस्सी को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहो मैं इसका दूसरा सिरा लङ्गर से बाँधकर अभी आता हूं।

हेक्टर ने रस्से से लालटेन को खोल ली जो इसी के साथही साथ प्रकाश दिखाती सर विल्फ्रेड द्वारा लटकाई गई थी! और बड़ी दृढ़ता से अपनी कमर में लपेट कर पकड़े रहा। अब उसे जान पड़ा कि गुब्बारे का कुल खिंचाव उसी पर है। इसके पैर पृथ्वी से उठे जाते थे वरन् कई बेर तो वह उठते २ रह गया। यह देखकर वह चिल्ला उठा "सर विल्फ्रेड शीघ्र आओ मैं खिंचा जाता हूं"।

सर विल्फ्रेड—लो मैं आ गया।

यह कह कर उन्होंने भी रस्से को दृढ़ता से पकड़ लिया और दोनों व्यक्ति उसे पकड़े हुये वन में इधर उधर किसी खुले मैदान की खोज करने लगे। अभी वे कुछ दूर भी न गये थे कि एक बीस फीट का लम्बा मैदान मिल गया। भाग्य-वश मैदान के एक कोने में एक मोटा और लम्बा गिरा हुआ वृक्ष पड़ा था। सर विल्फ्रेड ने इसी में उस रस्से को जकड़ दिया और दोनों मिलकर गुब्बारे को नीचे खींचने लगे।

खींचते २ यहां तक नीचे उतारा कि खटोलना पृथ्वी से केवल २ फीट ऊँचा रह गया। फिर उन्होंने और भी दृढ़तापूर्वक रस्से को उस गिरे वृक्ष में बाँध दिया। अब फिलिप, कप्तान जोली, और चेको भी खटोलने से उतरे। सर विल्फ्रेड अभी रस्सा लपेट कर सर भी न उठाने पाये थे कि तूफान आ गया, बिजली चमकने लगी और मेघ घहराने लगा।

सर विल्फ्रेड—जल अवश्य बरसेगा! और यहां अग्नि जला लेनी चाहिये जिस्में जङ्गली जानवर हमलोगों के निकट न आवें।

यह कहकर उन्होंने बन्दूकें बाहर निकाल लीं और थोड़ा घास फूस एकत्र करके गुब्बारे से कुछ दूर पर आग जलाई। जल अब रिमझिम २ बरसने लगा परन्तु इससे आग को जो घने वृक्षों के तले बल रही थी कोई हानि न पहुँची। फिलिप खटोलने में गया और सब के कम्बल निकाल लाया।

सर विल्फ्रेड—अपने २ कम्बल ओढ़ लो और सोने की चेष्टा करो हमलोगों को यहां कुछ देर तक ठहरना होगा और सबके पहिले रखवाली करने की हमारी पारी है।

इनकी इस आज्ञा को केवल चेकोही ने माना और वह अशान्ती जो हर एक स्थान में आराम से सोने का अभ्यस्त था तुरन्त आग के सामने कम्बल बिछा कर लेट गया और थोड़ीही देर में खर्राटे लेने लगा परन्तु बाकी के लोग बैठेही रहे और बात चीत करते जाते थे।

हेक्टर—यह केवल आँधीही जान पड़ती है।

सर विल्फ्रेड—ठीक है! यदि बिजली न चमके तो हम यहाँ से अभी चल खड़े हों और घण्टे में चालीस मील के हिसाबसे आगे बढ़ें फिर कलही तक शाडझील पर जा पहुंचेंगे यदि हमारी गेस इसके वास्ते काफ़ी हो, और मुझे तो आशा है कि वह बहुत होगी।

कप्तान—(ज़ोर से) चुप!!! सुनो तो यह शब्द तूफ़ानही का है या कुछ और। सब उसी समय चुप हो गये और अपने कान पृथ्वी पर लगाकर सुनने लगे, तो उन्हें जलवृष्टि के अतिरिक्त ऐसा सुन पड़ा मानों कोई रिसाला आता है।

सब हैरानी से एक दूसरे का मुंह ताकने लगे और खसक २ कर आग के निकट हो गये। परन्तु सर विल्फ्रेड उछल कर अपनी बन्दूक लेने को जो एक वृक्ष के पास रक्खी थी, झपटे!

अभी वे वहां तक पहुँचे भी न होंगे कि एक बड़ा भारी अफ्रिकेन सांड़ एक ओर से अरीता हुवा दिखाई पड़ा। वह अपनी पैनी सींगों से पृथ्वी को खोद रहा था और कुल शरीर उसका झाग से लतपत था।

इस भयानक जन्तु के अचांचक आ जाने से सब भयभीत हो गये और उधर सर विल्फ्रेड ने आवाज़ दी "दौड़ो और अपने को बन में छिपाओ" यह कह कर उन्होंने अपनी बन्दूक उठाई और निकटही के वृक्ष के पीछे छिप गये।

जैसेही वह भयानक जीव आग के पास पहुँचा वैसेही सिवा कप्तान जोली और चेको के सब भागकर इधर उधर छिप रहे ! वह अशान्ती गेंद की तरह सिकुड़ा हुआ पड़ा सो रहा था, और कप्तान साहब सोचते थे कि किधर जांयें ! ऐसा जान पड़ता था कि उनकी बुद्धि ठिकाने नहीं थी, उनके साथियों के चिल्लाहट ने उन्हें और भी हैरान कर दिया था ।

वह सांड़ आँधी के समान चला आ रहा था । चेको के निकट से तो केवल एक बाल की दूरी से वह निकल गया परन्तु कप्तान साहब की ओर, वह बेतौर झुका और जैसेही उसने इन्हें उछालने के लिये अपना सिर नीचे किया वैसेही कप्तान जोली की बुद्धि ठिकाने हुई और उन्होंने एक बड़ी उत्तम चाल की, अर्थात् उस्के गरदन झुकातेही वे तुरन्त उस्की सींग पकड़ उछल कर उस्की गरदन पर चढ़ बैठे और उस्के गरदन के बाल अपने दोनों हाथों में दृढ़तापूर्वक पकड़ लिये ।

सातवां बयान ।

सर विल्फ्रेड यह देखतेही हेक्टर और फिलिप के सहित सांड़ के पीछे दौड़े, अब चेको भी उठा परन्तु उस्की समझ में कुछ भी न आता था । सांड़ कप्तान साहब को सवार किये हुये वन में छिप गया, केवल टापों का शब्द और पत्तों की खड़खड़ाहट, साथही चिल्लाने की आवाज़ तो सुन पड़ती थी कप्तान साहब उस्की सींगो पर से गला फाड़ रहे थे ।

इनका कण्ठस्वर सुनतेही सर विल्फ्रेड ने कहा धन्य ईश्वर कि अभी लों वह जीवित तो हैं ! हेक्टर! जल्दी दौड़ो। बढ़ो! बढ़ो ; हम उसे अब भी बचा सक्ते हैं, और तुम फिलिप चेको सहित गुब्बारे की रक्षा करो।

हेक्टर झपट कर अपनी बन्दूक उठा लाया और सर विल्फ्रेड के साथही साथ वन में शब्द की ओर झपटा। ये लोग कोई पाव मील तक बराबर दौड़ते गये, प्रायः ठहर २ कर शब्द भी सुनते जाते थे परन्तु अब कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था। वन, चुप्पा नगर जान पड़ता था।

सर विल्फ्रेड एक वृक्ष के साथ लग कर खड़े हो गये उनके माथे पर पसीना आ गया और वे बड़े दुःखित स्वर में बोले! हा! बेचारा जोली खो गया अब मुझे कोई आशा नहीं। अब तक वह मुझ से कभी अलग नहीं हुआ था। वह बहुतही अच्छा मनुष्य था, उस्के निमित्त मैं अपनी कुल सम्पत्ति देने को प्रस्तुत हूं। "सुनिये!" हेक्टर ने ज़ोर से कहा! इन शब्दों के साथही साथ बेलून की ओर से एक बड़ी चिल्लाहट सुनाई दी और उस्के उपरान्तही बन्दूक छूटने का शब्द सुनाई पड़ा। अब यह कौन सी नई आफत थीं ?

सर विल्फ्रेड—(चिल्लाकर) गुब्बारा अवश्य किसी कुचक्र में पड़ा ; चलो, लौट चलो, परन्तु खेद का विषय है कि मैं बेचारे जोली को न बचा सका उस्को अब उस्के भाग्य पर छोड़ता हूं! आह। कैसी आपत्ति है! हेक्टर! ईश्वर जानता है कि मैं उस्के लिये कुछ नहीं कर सकता।

अभी यह शब्द अन्त को भी न पहुँचे होंगे कि कुछ दूर से कराहने की आवाज़ आई ! हेक्टर और सर विल्फ्रेड यह सुन्तेही उसी ओर दौड़े गये, तो वहां जाकर देखा कि कप्तान साहब अपनी जाँघों में सिर डाले, पत्तियों के एक ढेर पर बैठे आह ! आह ! कर रहे हैं। इनके चेहरे से घबड़ाहट के चिन्ह प्रगट थे।

इस अचांचक हर्ष से आश्चर्य न था, कि सर विल्फ्रेड की मृत्यु हो जाती ! उन्हों ने तुरन्त कप्तान के दोनों बगलों में हाथ देकर खड़ा कर दिया।

सर विल्फ्रेड—जोली, तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी ?

कप्तान साहब ने अपने अङ्ग की ओर बड़े खेद से देखा और धीरे से बोले कि नहीं मुझे चोट नहीं लगी। परन्तु मेरी हड्डियांही गलें कि यह कैसी भयानक सवारी थी अबलों मैं कदापि जीवित न होता यदि वह साँड़ मुझे अपने उजड्डपन से कहीं इधर उधर फेंक देता।

इतने में गुब्बारे की ओर से दूसरी बन्दूक दगी ! और सर विल्फ्रेड ने कप्तान जोली से पुछा कि तुम चल सक्ते हो ! कृपा कर जितना शीघ्र हो गुब्बारे की ओर आओ। हेक्टर ! तुम कप्तान साहब के साथ आओ मैं फिलिप की सहायता को जाता हूं।

सर विल्फ्रेड यह कह, और इन लोगों से बिना कुछ उत्तर पायेही बड़ी शीघ्रता से गुब्बारे की ओर दौड़े। ऊँची राह

इन्होंने बड़ी शीघ्रता से समाप्त की और वहां पहुँचने पर देखा कि चारों ओर अन्धकार छाया हुआ है और कुछ अङ्गारे इधर उधर छितराये हुये पड़े हैं इन्होंने यह देखकर धीरे से पुकारना प्रारंम्भ किया ; "फिलिप" !!

फिलिप जो वहीं वृक्ष के नीचे छिपा हुआ था बोल उठा कि मैं यहां हूं ; सब कुशल है ! और चेको भी यहीं कहीं छिपा होगा । वृत्तान्त यों है कि जब आप लोग उधर गये तो बहुत से जङ्गली मनुष्य यहां पर आये और उन्हों ने अपना बर्छा मुझ पर चलाया । मैंने उनमें से एक को गोली मार दी और वह, वह देखिये घास पर पड़ा है । दूसरे जङ्गली को मैंने उस्के कुछ देर उपरान्त गोली मारी, परन्तु हमारी जान में वह बच गया, क्योंकि उस्के थोड़ीही देर उपरान्त मैंने पास की झाड़ी में चिल्लाहट सुनी थी । गुब्बारे को उनलोगों ने नहीं देखा, और हां हेक्टर कहां है ? कप्तान साहब का पता लगा या नहीं ?

सर बिल्फ्रेड—बस वे दोनों आतेही होंगे ।

यह कहकर वे उस मरे हुये जङ्गली पर झुके और भली भाँति देखकर कहने लगे कि यह फल्ब जाति में से है, इनके ऐसी भयानक, अफ्रिका में अन्य जातिही नहीं है । ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग इसी भैंसे के शिकार के निमित्त यहां तक पीछा करते हुये आ निकले थे । मुझे भय है कि कहीं उनके और साथी यहां तक न आ जायें । इन कम्बलों को शीघ्र

एकत्रित करो और चेको को बुला लो, जैसेही कप्तान जोली और हेक्टर यहां आयेंगे हमलोग यहां से कूच कर जायेंगे। यद्यपि अभी तूफान थँमा नहीं है परन्तु वह इन जङ्गलियों के आक्रमण से अच्छा है।

आँधी भी अब बड़े वेग से बह रही थी, फिलिप चेको को आवाज़ देता था परन्तु कोई जबाब नहीं मिलता था कि सहसा जङ्गलियों की भयानक चिंघाड़ कान में पहुँची! शब्द से जान पड़ता था कि वे लोग कुछ बहुत दूर नहीं हैं।

सर विल्फ्रेड ने चिल्ला कर कहा कि वे पाजी आ रहे हैं और वे बहुत शीघ्र यहाँ पहुँच जाँयगे, वह बोदा अशान्ती कहां हैं? कप्तान और हेक्टर अभी तक क्यों नहीं आये?

इनके कहने केसाथही हेक्टर इनके सामने आ खड़ा हुआ और इस्के पीछे कप्तान साहब भी लँगड़ाते और काँखते कूँखते आ पहुँचे! अब कुछ दूर पर सब को बड़ा प्रकाश दिखाई पड़ने लगा।

सर विल्फ्रेड—(ज़ोर से) खटोलना और नीचे खींचो कम्बल इकट्ठे करके उस्में डालदो! बन्दूकें भर रक्खो।

इनके यह कहतेही फिलिप खटोलना नीचे खींचने लगा। हेक्टर और सर विल्फ्रेड ने कम्बल इकट्ठे करने प्रारम्भ किये, और बन्दूकें भर लीं। जब खटोलना पृथ्वी से छू गया, तो सर विल्फ्रेड ने उस्में कम्बल फेंक दिये और फिर स्वयं कूदकर भीतर गये इस्के उपरान्त कप्तान जोली का हाथ पकड़ कर उस्में

चढ़ा लिया ! साथही इस्के फिलिप और हेक्टर भी उसमें सवार हुये, और सर विल्फ़्रेड ने एक कुल्हाड़ी उस रस्सी के काटने की इच्छा से जो उस वृक्ष में बँधी थी उठाई। जङ्गली अब केवल बीस गज़ की दूरी पर रह गये थे कि हेक्टर ने कहा रस्सी अभी मत काटिये ! चेको कहां है ?

सर विल्फ़्रेड ने होठोंही होठों में कुछ कहा और क्रोध से चिल्लाये कि मैं उस अभागे को केवल आधे मिनिट का और समय देता हूं ! हमलोगों के प्राण केवल उस्के लिये चक्र में न पड़ेंगे यह कहकर वह गिनने लगे, एक-दो-तीन-चार।"

इतनी देर में हेक्टर और फिलिप ऊँचे स्वर में चेको का नाम ले ले कर पुकारने लगे और जब सर विल्फ़्रेड २६ की गिनतीं तलक पहुँचे कि सहसा वह खोया हुआ अशान्ती एक ओर से कूदता हुआ आया और खटोलने से चमट गया साथही झल्लाये हुये कप्तान साहब ने एक चपत खींचकर ऊपर से सही की।

जङ्गली अब चारही कदम की दूरी पर रह गये, और उन्होने अपनी बरछियां सीधी कीं परन्तु साथही खटोलने से एक बाढ़ बन्दूक की पड़ी कि जिस्से जङ्गलियों की सामने की श्रेणी लोटने लगी और वे झमक २ कर पीछे हट गये। साथही सर विल्फ़्रेड ने रस्से को काट दिया। परन्तु अब एक नई आफ़त और आई ! अर्थात् गुब्बारा केवल दसही फीट ऊँचा उठ कर रह गया। यह देखकर सबके हाथ पाँव फूल गये ! परन्तु

सर विल्फ्रेड ने धैर्यता से कहा ! "वालू की थैलियां फेंको" और उन्हों ने स्वयं एक जङ्गली को जो कि खटोलने पर्यन्त पहुँच गया था और अपनी बरछी ऊपर फेंका चाहता था तमञ्चे से मार गिराया। इधर कप्तान जोली ने वालू का थैला नीचे गिरा दिया और गुब्बारा क्रमशः ऊपर उठने लगा, परन्तु इसके उठते २ नीचे से तीर और बरछियों की बौछार आने लगी जो भाग्यवश बेलून पर्यन्त नहीं पहुँचती थी।

सर विल्फ्रेड—(जल्दी से) दूसरा थैला भी !

साथही दूसरा थैला भी फेंक दिया गया और गुब्बारा अब बड़े वेग से ऊपर चढ़ गया। चारों ओर सिवा तूफान और अन्धकार के और वहां थाही क्या ? सब लोग खटोलने में चुप चाप पड़े हुये थे।

एक घण्टा व्यतीत हो गया, और अब तूफान कुछ कम होने लगा। पानी बन्द हो गया और बिजली तो अब चमकतीही न थी। डरे हुये पथिकों के चित्त में अब फिर आशा और उत्साह का अंकुर उत्पन्न हुआ। उठकर सब अपने २ स्थान पर बैठ गये लालटेन कठिनाई से बली और तब सर विल्फ्रेड ने कम्पास पर दृष्टि की।

सर विल्फ्रेड—(प्रसन्नता से) हमलोग भाग्यवश अब भी अपनी राह पर चले जा रहे हैं हमारी इच्छा अब भी पूरी हो सक्ती है।

कप्तान—(जो अपने चोटों के कारण बड़े क्रोध में थे) अच्छा माना, कि आप शाड झील पर्यन्त पहुँच गये; तब फिर !!!

सर विल्फ्रेड—संतोष करो और देखो !

फिर कप्तान साहब चुप हो गये, बीच में एक बेर बिजली चमकी जिस्से इनलोगों को मालूम हो गया कि हम पृथ्वी से बहुत ऊँचे नहीं हैं।

सर विल्फ्रेड—कुछ और भी ऊपर चढ़ना चाहिये !

यह कहकर उन्होंने एक थैली बालू की और फेंकी जो अन्तिम थी ! गुब्बारा और ऊपर चढ़ा कि इतने में एक ऐसा झोंका वायु का लगा कि सब को पूरी आशा हो गई कि यह गुब्बारे को अवश्य किसी ओर फेंक देगा और सबके सब भय से चिपक कर बैठ गये।

आठवां बयान।

एक घण्टा पर्यन्त सब चुप चाप पड़े रहे, चारों ओर भयानक अन्धकार छाया हुआ था और गुब्बारा वायु में लहराता उस तेज हवा में आगे बढ़ता चला गया। कभी २ पानी का छींटा भी आ जाता था जिस्से बचने के लिये उनलोगों ने अपने ऊपर कम्बल डाल लिये थे।

सर विल्फ्रेड एक कोने में चुपचाप बैठे हुये इस हुल्लड़ को सुन रहे थे इस्के बीच २ में कभी २ दियासलाई बाल कर अपने कम्पास को देखने लगते थे। अब पुनः उनके साथियों के चेहरे के आकार से हर्ष के चिन्ह प्रगट होने लगे।

अर्थात् सर विल्फ्रेड ने एक ऐसा शब्द किया जिस्से उनके साथियों को जान पड़ा कि इन्होंने कोई आश्चर्यजनक बात देख पाई। उनके साथी भी उनके निकट आ गये और जिधर इन्होंने उँगली उठाई उधरही देखने लगे। तो कुछ प्रकाश दिखाई पड़ने लगा। जिस्से यह जान पड़ता था कि यहां कोई बड़ा गाँव बसा है।

सर विल्फ्रेड—यह एक बड़ा नगर है। मैं केवल एक नगरही को जानता हूं जो इधर है, परन्तु आश्चर्य तो इस्का है कि हम इतना शीघ्र यहां आ कैसे पहुँचे।

हेक्टर—क्यों महाशय यह कौन नगर हे?

सर विल्फ्रेड—नगर डोरा, जो बोरा देश में है और यहां से शाड भील केवल २५० मील है। और यह सम्भव है कि यह राज्य बोर न भी हो जिस्की बस्ती ५ करोड़ है इसे एक शोवा जाति ने जो वास्तव में अरब हैं विजय किया है वेही यहां के अधिकारी भी हैं। इस देश में गुलामों की सौदागरी के अतिरिक्त अनाज, रूई, नील, हाथी, घोड़ों और बैल, की भी सौदागरी होती है।

अभी सर विल्फ्रेड यह कहही रहे थे कि गुब्बारा नगर डोरा पर से (यदि वह यथार्थ में वही था तो) चला। और कुछही देर में वह आंखों की ओट हो गया।

सर विल्फ्रेड—अब मैं आराम करूंगा। यदि कोई नई घटना उपस्थित हो तो मुझे जगा देना।

यह कहकर वे एक कोने में सो गये । बाकी और सब लोग उँघ रहे थे जो कोई आश्चर्य की बात न थी। हेक्टर ने उन लोगों को सोने और स्वयं जागते रहने के लिये कहा । चेको और फिलिप ने तुरन्त इस्की सलाह मान ली, परन्तु कप्तान जोर्ला बैठेही रहे और उन्होंने हेक्टर का साथ देना चाहा ।

गुब्बारे में सन्नाटा था, सब सो गये, हाँ जागते थे तो केवल दोनों चौकसी करनेवाले । परन्तु इनमें भी बात चीत बन्द थी। कप्तान साहब एक सींग की नली में तमाखू भरकर सुलगाने लगे । कुछही देर उपरान्त तमाखू सुलग गई, और कप्तान साहब गुब्बारे के एक कोने में बैठ कर उसे पीने लगे और साथही पृथ्वी की ओर भी देखते जाते थे ! उन्हें हाथ भर के दूर की भी कोई वस्तु न दिखाई पड़ती थी।

हेक्टर एक ओर बैठा हुआ अपने ध्यान में डूबा था। लेगोस से चलने के उपरान्त इन दो तीन दिनों में ऐसी घटना पर घटना आन उपस्थित हुई कि उसे निज अवस्था पर बिचार करने का कोई समयही न मिला । लण्डन छोड़े उसे एकही दिन मालूम होता था ! इस्के इस ध्यान ने उस्के घबड़ाये हाथों को गले में पड़े हुये यंत्र की ओर बढ़ाया और वह उसे ठीक उसी प्रकार पाकर प्रसन्न हुआ जैसे कोई कंजूस अपनी अतुल और छिपी सम्पत्ति को देखकर गद्गद होता है ! वह उस यन्त्र की बड़ी रक्षा और खबरदारी करता था यहां तक कि उस्का सच्चा मित्र फिलिप भी इस्बात से बिलकुल अनजान था।

अकस्मात् कप्तान साहब के चिल्लाने से हेक्टर का ध्यान भङ्ग हो गया और वह उनकी ओर देखने लगा।

कप्तान—अहाहा ! देखो कैसा प्रकाश हो रहा है! और भई मेरी हड्डियांही गलें यदि वहां काले देवों का नाच न होता हो!

हेक्टर भी उन्हीं के पास जा बैठा, और वहां से जाकर देखा तो एक जगह जलती आग के चारों ओर बहुत से नङ्गे २ और काले २ जङ्गली नाच रहे हैं।

जैसेही गुब्बारा उनके ऊपर से होकर जाने लगा वैसेही कप्तान साहब ने एक बड़ाही सुन्दर दर्पण ठीक उनके बीच में फेंक दिया जो आग के निकटही जा गिरा, वह आश्चर्ययुक्त जङ्गली उस चमकती हुई वस्तु को लेने के निमित्त झपटे और आपस में लड़ने लगे। कुछही काल उपरान्त वे सब भी आखों से छिप गये। इतने में सहसा किसी ने हेक्टर के कन्धे पर हाथ रख दिया, इसने जो फिर कर देखा तो सर विल्फ्रेड को पाया जो कह रहे थे "हेक्टर ! अब तुम्हारी पारी है जाओ सो रहो।"

हेक्टर और कप्तान दोनोंहीं ने पहरा बदलवाया और जाकर सो रहे। सर विल्फ्रेड चौकसी पर थे!

आकाश निर्मल हो गया था आँधी का कहीं अब नाम भी न था, तारे चारों ओर प्रसन्नता से चमक रहे थे वायु भी इच्छानुसार कोने की ओर चल रही थी। सर विल्फ्रेड चुपचाप बैठे नक़सा और कम्पास देख रहे थे, देखते २ न जाने चित्त

कहां पहुँचा कि उनके नेत्रों से दो चार बून्दें जल की टपक पड़ीं। उर्ध स्वास लेकर अभी उन्होंने अपनी बैठक बदली होगी कि किसी वस्तु को देखकर चौंक गये, और अपने साथियों को जल्दी २ उठाने लगे।

इनके चेहरे से प्रसन्नता झलक रही थी और यह एक ओर को देखते जाते थे। सब साथी इनके जगातेही उठ बैठे, परन्तु केवल चेको एक स्थान से उठकर दूसरे स्थान में जा सोया। सर विल्फ्रेड ने सबको एक ओर कहा "वह देखो"। छोटे झुण्ड की दृष्टि उधर पड़तेही सबके सब बड़ीही प्रसन्नता से चिल्ला उठे, "हमलोग शेड झील पर पहुँच गये! धन्य ईश्वर"-और यह शब्द कुछ इस जोर से कहे गये कि चेको जो सो रहा था चौंक कर उठ बैठा।

इनलोगों को पश्चिम की ओर एक बड़ा हराभरा मैदान दिखाई पड़ा। सूर्य देव की किरनें, जो कुछ ऊँचे हो गये थे उस मैदान में आड़ी होकर पड़ रही थी। अनगिनंती खेत उन गावों के सहित जो जङ्गली जातिओं से बसे हुये थे इधर उधर छिटके दिखाई देते थे। पानी के सोते और छोटे २ नाले जिनके दोनों ओर घने जङ्गल लगे हुये थे चारों ओर फैले दिखाई देते थे। इसी के निकटही जल का एक बड़ा भारी भाग पृथ्वी पर फैला हुआ दिखाई दिया। यही शेड झील थी, बार्थ नामी भ्रमण करनेवाले ने इसका पता लगाया था, लम्बाई इस झील की २०० मील और चौड़ाई इसकी १४० मील की थी। झील

के चारों ओर एक चौड़ा और घना वन लगा हुआ था जिसके मध्य में अनगिनती टापू बड़ीही भयानक जातियों से, जो अपने लूट मार के निमित्त प्रसिद्ध थे बसा हुआ था। सर विल्फ्रेड ने इसी जाति के प्रति कुछ कहना प्रारम्भ किया और कहा इस जाति का नाम बुद्मा है; बस इस्के आगे सर विल्फ्रेड और कुछ न कह सके, उनके मुंह से भय के मारे शब्द न निकलता था उनके साथी भी इस्बात को समझ गये।

सर विल्फ्रेड—अस्तु! जो कुछ हो काम तो हम लोगों ने वह किया जो अभी लों किसी तवारीख़ में लिखा नहीं गया, और न किसी से हो सका, ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने वायु को हमारे इच्छानुसार रक्खा, हम लेगोस से ३० अगस्त की सन्ध्या को ३ बजे चले थे और आज दूसरी सितम्बर है। और अब दिनके नौ बजे हैं। ४२ घण्टे में हमने एक सहस्र मील का मार्ग समाप्त किया। इसमें भी कितने स्थान के बखेड़ों में फँस चुके भला इस्का कोई काहे को विश्वास मानेगा। हम लोगों को दो दिन से भी कम समय, वहां लों पहुँचने में लगा, जहां दूसरे भ्रमण करनेवाले कई मास में पहुँचेंगे।

नवाँ बयान।

झील जब प्रथम देखी गई थी, तो वह गुब्बारे से ६ मील के अन्तर पर थी, और गुब्बारा बड़ीही शीघ्रता से उस्की ओर

उड़ा चला जाता था । यह एक आवश्यकीय बात थी कि गुब्बारे को अब नीचा कर दें ।

सर विल्फ्रेड—हमलोगों को किनारे बहुतही निकट न जाना चाहिये, वहां यदि कहीं बुदमा मिल गये तो फिर एक भी काम न होगा ।

इनका केवल नामही मात्र लेने से चेको काँपने लगा और सर विल्फ्रेड के पैरों से लपट कर बोला " न न वहां मतजाना, उधर सब खराब लोग रहता है, जो चेको को फिर गुलाम बना लेगा और बाकी सबको मार डालेगा " सर विल्फ्रेड ने बड़ीही कठिनता से उस अशान्ती को चुप कराया और अपने साथियों की ओर फिर कर बोले "यह इस बेचारे का दोष नहीं, यह उन लोगों के कठिन बन्धन में चार वर्ष पर्यन्त गुलाम रह चुका है, और मेरी स्वयं इच्छा, उनमें फँसने की नहीं है । अच्छा हेक्टर अब हमें नीचे उतरना चाहिये " ।

हेक्टर ने यह सुन्तेही लङ्गर फेंक दिया और गुब्बारा नीचे उतरने लगा परन्तु अभी यह १०० फीट की ऊँचाई पर रहा होगा कि एक और दैवी दुर्घटना सङ्घटित हुई, अर्थात वायु दूसरी ओर बहने लगी । यह देखतेही कप्तान जोली गला फाड़ के चिल्ला उठे "हाय ! अरे यह कहां जाता है ? यह अच्छा नहीं, ले यारो ; अब पहुँचने की आशा से हाथ धोओ"।

सर विल्फ्रेड—वाह ! इस्से उत्तम और क्या होगा, वायु हमारेही इच्छानुसार चल रही है ! इस ओर एक बड़ा नगर है

वहीं चलके डेरा जमेगा यह कहकर उन्हों ने दूर कुछ मकानों की ओर इंगित किया जो वृक्षों में छिपे हुये थे। अब वे लोग एक बड़े लम्बे चौड़े मैदान पर से जा रहे थे जिस्में झुण्ड के झुण्ड गाय बैलों के चर रहे थे। भला यहां कौन ऐसी वस्तु थी जिस्से लङ्गर अटकता। अब दो आपत्तियां सामने थीं एक तो यह कि यदि लङ्गर नहीं अटकता तो गुब्बारा उतरते २ पृथ्वी तक आ रहेगा, और टूट जायगा! दूसरे यह कि यदि वह उसी ऊँचाई से जिधर कि जा रहा था नगर में पहुँचा तो अवश्य किसी मकान से टकरा कर नष्ट हो जायगा।

गुब्बारा अब ३० फीट की ऊँचाई से उड़ता हुआ नगर में जा पहुँचा। नगरवासी आश्चर्य से मुंह उठाये इसे देख २ कर इधर उधर दौड़ रहे थे बहुत सें इस्में हथियारबन्द थे जो अपनी बन्दूकें छतिया रहे थे। क्रमशः चलते २ जब वे बजारों के ऊपर से चले तो सर विल्फ्रेड ने चिल्लाकर कुछ शोवा भाषा में कहा! जिस्का फल ततक्षण दिखाई पड़ा, अर्थात् वह हुल्लड़ सब मिट गया और हथियार रख दिये गये!

अब इन्होंने लङ्गर के अटकाने की इच्छा की और इन्हे आशा थी कि वह किसी मकान अथवा किसी वृक्ष में अटक जायगा। परन्तु नहीं; जो सोचा था उस्का फल विपरीत हुआ, लङ्गर बड़ीही शीघ्रता से सनसनाता हुआ जा रहा था; और अपनी भयानक चाल से अब उसने हानि प्रारम्भ की! अर्थात् बड़े वेग से जाकर एक मसजिद के गुम्बद से टकराया, जो तुरन्त

लहराकर भूतलशायी हो गया। इस्के नीचे कई मुल्ला और वहुत से मनुष्य जो निमाज पढ़ने आये थे ज़खमी हुये। इस्के उपरान्त २ गुम्वद और चार छतें इसने और गिरा दिये!

यह आपत्ति कुछ ऐसी अचांचक आई थी कि किसी से कुछ करते धरते न वन पड़ा और अव गुव्वारा उसी तरह चौक में जा पहुँचा, यहां सहस्त्रों मनुष्य की भीड़ एकत्रित थीं, कारवारी अपने २ काम में लगे थे। सर विल्फ्रेड ने चाहा कि उन्हें इस आनेवाली आपत्ति से सचेत करदें! पर न हो सका, लङ्गर उसी प्रकार भीषण नाद करता हुआ उनमें जा पहुँचा जिसे देखतेही सव इधर उधर भागने लगे। एक ओर वहुत से गुलाम विक्री के निमित्त विठाये गये थे; लङ्गर उसी ओर चला।

सर विल्फ्रेड ने जल का पीपा ऊपर से फेंक दिया जिस्से गुव्वारा ऊपर उठा! उठने के साथही एक ऐसा झटका लगा जिस्से सव हिल गये। सर विल्फ्रेड ने झपट कर नीचे की ओर देखा तो एक कौतूहलयुक्त दृश्य दीख पड़ा, अर्थात् लङ्गर में एक गुलाम लटक रहा था जिस्की हथकड़ी उस्में फँस गई थी और इस गुलाम के बोझ के कारण गुव्वारा पुनः नीचे उतर गया, और वह बेचारा हवसी केवल दो फीट की ऊँचाई से उड़ता चला जाता था, अव सवको पूरी आशा हो गई कि गुलाम नहीं वच सक्ता कारण यह कि एक विशाल अट्टालिका जो वड़ीही शीघ्रता से निकट आ रही थी उस्से यह टकराये

गा और उस्की खोपड़ी टुकड़े २ हो जायगी। परन्तु उसी समय सर विल्फ्रेड ने उस्के छुटकारे की एक तदबीर निकाली अर्थात् खिलौने, कैंची शीशे, और बहुतसी व्यापार की चीजें उन्होंने उठाकर नीचे फेंक दीं साथही हेक्टर ने मांस का एक बड़ा सन्दूक भी उपर से गिरा दिया। इस शीघ्रता ने उस हब्सी की प्राणरक्षा की अर्थात् गुब्बारा ऊपर उठा और उस मकान के ऊपर से होकर लङ्गर निकल गया। परन्तु इस्के कुछ देर उपरान्त ही एक और नई आपत्ति आई अर्थात् वह लम्बा रस्सा जिस्में गुलाम लटक रहा था बीचों बीच, जाकर एक मकान के छज्जे से अटक गया, जिस्से गुब्बारा आगे न बढ़ सका और वह गुलाम भी इस अकस्मात् के झटके से इधर उधर झूलने लगा और ऊपर से, वे अनेक युक्तियां जो उस रस्से के छुड़ाने के निमित्त की जाती थीं बेकाम हुईं।

उधर नगरवासी बड़ेही क्रोध से अस्त्र शस्त्र लिये गुब्बारे की ओर दौड़े चले आते थे। हेक्टर ने चिल्लाकर कहा "रस्सी की सीढ़ी शीघ्र लगादो मैं उतरकर उस छज्जे से रस्सा छुड़ा दूंगा" यह सुनकर पहले तो सर विल्फ्रेड हिचकिचाये परन्तु हेक्टर ने तुरन्त सीढ़ी लटकाई और जल्दी २ उतरने लगा! और अभी वह छज्जे तक पहुँचा भी न होगा कि उस्के साथी ऊपर से चिल्ला उठे, और अब इसने जो उनके चिल्लाने का कारण देखा तो हाथ पाँवही फूल गये।

दसवाँ बयान ।

एक बड़ा लम्बा हब्शी भयानक सूरत बनाये, अपनी लोहे की तीक्षण तीर द्वार हेक्टर को माराही चाहता था ! कमान कान पर्यन्त खिंच गई थी ! तीर छूटने में अब विलम्बही क्या था, कि साथही बेलून पर से दन्नाटा हुआ ; और सर विल्फ्रेड की बन्दूक से सनसानती हुई गोली ने निकलकर उस हब्शी की खोपड़ी में अपना स्थान बनाया, और वह पलट कर जमीन पर छटपटाने लगा । इस्के पीछे और बहुत से लोग बढ़ आये और अपने साथी का बदला लिया चाहते थे परन्तु हेक्टर की शीघ्रता उनसे कहीं बढ़ी चढ़ी थी, उसने तुरन्त वहां से रस्सा छुड़ा दिया ; रस्सा छूटतेही बेलून ऊपर उठा, और हेक्टर उसी सीढ़ी पर बड़ीही शीघ्रता से चक्कर खाने लगा, परन्तु उस्के साथियों ने तुरन्त उसे ऊपर खींच लिया । इस्के उपरान्त गुलाम भी ऊपर लाया गया और सर विल्फ्रेड ने और कुछ कहने के पहले दो सन्दूक विस्कुट के नीचे फेंक दिये, जिस्से गुब्बारा और भी ऊँचा होकर शीघ्रता से आगे जाने लगा । ६ अरबी सवार भी गुब्बारे के साथही साथ चले पर वे कुछही दूरमें दृष्टि से लोप हो गये । इधर से निश्चिन्त होकर सर विल्फ्रेड; उस हब्शी गुलाम की ओर फिरे । हब्शी, शरीर से दुबला पतला, और रङ्ग का भूरा था उसके सिर के बाल लम्बे और काले थे ! उस्के शरीर से जान पड़ता था कि वह बहुत दिनों पर्यन्त गुलामी में रह चुका है । अभी तक वह अचेतही थां परन्तु ब्रांडी की दस पाँच बूंदों ने

इसे तुरन्त सचेत कर दिया, होश आतेही वह उठा और एक कोने में जा बैठा।

सर विल्फ्रेड—वास्तव में हमसे बड़ीही चूक हो गई ; इस एक गुलाम के कारण हमने शोवा जातिमात्र को अपना शत्रु बना लिया, यह बड़ी कठिनता हुई ! और यह हबशी बुदमा जाति का जान पड़ता है क्योंकि रूपरङ्ग उन्हीं का सा है। मुझे भली प्रकार मालूम है कि बुदमा तथा शोवा जाति में सदैव लड़ाई रहती है।

कप्तान—जी हां ! आप ठीक कहते हैं ! चेको भी यही कहता है।

अब सबने उस अशान्ती की ओर देखा जो उस गुलाम की ओर भय और घृणा से देख रहा था। वह चिल्ला उठा "यह खराब आदमी, बुदमा है बुदमा; मैं इन सब को जानता हूं बड़ा २ टापू में इनका घर—" यह कहकर उस अशान्ती ने चाहा कि उस बुदमा को नीचे फेंक दें, परन्तु साथही सर विल्फ्रेड ने घुड़क दिया।

उस बुदमा को इन बातों से कोई सम्बन्ध न था वह चुप चाप बैठा हुआ पृथ्वी की ओर देख रहा था, और जब कप्तान जोली ने उसे कुछ बिस्कुट दिये तो वह मरभुक्खों की भाँति खाने लगा। इस्की उम्र लगभग २० वर्ष के होगी।

अरबों का नगर यहां से १२ मील के अन्तर पर पीछे छूट गया। नीचे के खुले मैदान में कोई जीव जन्तु नहीं दिखाई

देता था। उनसे पूरब की ओर शेड झील लहरें मार रही थी!

सर विल्फ्रेड—(शान्त भाव से) हम अब झील की ओर बड़ी शीघ्रता से जा रहे हैं और हमारी गेस का अब अन्त है।

हेक्टर—तो आपको भय केवल इस बात का है कि हम लोग कहां उतरेंगे?

सर विल्फ्रेड—हां!

हेक्टर—(फिलिप से) कुछ तो अवश्य करना चाहिये! यदि गुब्बारा झील पर पहुँच गया तो हम सब मारे पड़ेंगे।

सर विल्फ्रेड—हम तीनों ओर से गये, या तो डूबे, या मगर-मच्छों के पेट में जाना स्वीकार करें; और या बुदमा जाति के गुलाम बनना स्वीकार करें।

बेलून अब केवल ३० या ४० फीट की ऊँचाई पर से जा रहा था। सर विल्फ्रेड ने शीघ्रता से लङ्गर में एक और रस्सा बाँधा जिस्से उसकी लम्बाई पचास फीट हो गई! और खड़े होकर उसे बड़े वेगसे फेंक दिया। सबलोग बड़ीही उत्सुकता से उस लङ्गर का जाना देख रहे थे। लङ्गर पृथ्वी पर गिरा और घासों में छिप गया, साथही पानी के चीरने का शब्द सुन पड़ा, और मछलियां तथा अन्य जल के जीव जन्तु पानी के ऊपर भागते दिखाई पड़े।

सर विल्फ्रेड—(चिल्लाकर) तब नहीं तो अब सही! हमलोग कई मील से झील पर चल रहे हैं और हमें बिलकुल जान न पड़ा यह सरकण्डों का बन है, जिसे बार्थ नामी भ्रमण करने

वाला "अपार" कह गया है, और जिस्में उसने स्वयं अप-नेहीं जीवन को नष्ट किया, यदि यहां गुब्बारा गिरा तो हम सब मृत्यु के मुंह में जांयगे, और अब आगे वह देखो झील है। यह कहकर उन्होंने लङ्गर उठा लिया।

सर विल्फ्रेड—गुब्बारा उतरता चला जाता है सब बेकाम चीजें नीचे फेंक दो, बस प्राणरक्षा का यही एक उपाय है, इस्से यदि ईश्वर ने चाहा तो हम उस पार होंगे।

यह सुनकर कप्तान जोली ने दूसरा पानी का पीपा तथा गोलियों के थैले फेंक दिये। इस्के फेंकने से गुब्बारा कुछ ऊँचा हुआ और जल से केवल १५ फीट ऊपर जाने लगा, और कुछही काल के उपरान्त यह पुनः नीचे उतरने लगा।

सर विल्फ्रेड ने अबकी कुल कम्बल फेंक दिये, और दूसरा सन्दूक बारूद का भी फेंक दिया।

अब गुब्बारा २० फीट ऊँचा हो गया और आधे माइल पर्यन्त इसी ऊँचाई पर चला गया, और फिर वह यहां लों नीचा हुआ, कि लम्बे २ सरकण्डे खटोलने के चारों ओर से होकर जाने लगे। कप्तान जोली ने अपनी बन्दूक उठाकर फेंक दी उनकी देखादेखी सर विल्फ्रेड ने भी फेंक दी।

अब गुब्बारा फिर उठा परन्तु साथही सर विल्फ्रेड के मुंह से एक "चीख" निकल गई! उनके साथियों ने देखा कि अब उनसे केवल ५० गज के अन्तर पर खुली हुई झील थी! इस्का दाहिना और बायां किनारा कुछ योहीं सा

दिखाई देता था ! हां अनगिनती टापू अवश्यही बीच २ में दिखाई पड़ते थे। परन्तु उनसे दसही गज के अन्तर पर जहां से झील का जल गहरा हो चला था, झुण्ड के झुण्ड दरियाई घोड़े और मगरमच्छों के समूह इधर उधर जल में खेल रहे थे।

क्रमशः गुब्बारे ने सरकण्डे के वन को समाप्त किया और अब झील के निर्मल जल पर अपनी परछाई डालता आगे बढ़ा चला जाता था। और अब यह जल से केवल बारह फीट ऊँचा था। मगरमच्छ ऐसी आश्चर्यजनक वस्तु को देखकर और मनुष्य की गन्ध पाकर अपने लम्बे २ मुंह खोलकर ऊपर की ओर देखने लगे।

सर विलफ्रेड बड़ीही गम्भीरता से उन्हें देख रहे थे। उन के साथी तो यह दृश्य देखतेही पीले पड़ गये थे और गुब्बारा भी क्रमशः उतरताही जाता था ! सर विल्फ्रेड ने यह देखकर अपने जेब के कुल रुपये पैसे जल में डाल दिये, और यह देखकर उनके साथियों ने भी उन्हीं की नकल उतारी।

ग्यारहवाँ बयान।

इन छोटी २ वस्तुओं के फेंक देने से गुब्बारे पर कोई विशेष असर न हुआ वह अपनी उसी चाल पर जल से ६ फीट ऊँचा आगे चला जाता था, तमाखू के थैले पर अभी किसी का ध्यान नहीं गया था ! हेक्टर की दृष्टि इसपर पड़ गई और उसने

तुरन्त उसे उठाकर नीचे फेंक दिया ! उन घड़ियालों को जो उसे उत्तम भोजन समझे हुये थे खातेही बड़ी घृणा हो गई ! गुब्बारा अब कुछ ऊपर उठा परन्तु फिर तिरछा होकर जल की ओर चला ।

सबने यह निश्चय कर लिया कि अब कोई शक्ति सिवाय परमेश्वर के हमलोगों की सहायक नहीं हो सक्ती ! आशा उत्तर दे चुकी थी ! कि सहसा सब की दृष्टि उस अधमुये बुद्मा पर पड़ी ! और एकही ध्यान उसी समय सब के चित्त में आया कि यदि यह व्यक्ति नीचे फेंक दिया जाय तो आशा है कि उनके प्राण बच जांय ! क्योंकि वास्तव में तो उस्की कोई आवश्यक्ताही न थी । वही बुद्मा जो अपने लूटमार के कारण विख्यात हो रहे हैं ! और उसी जाति का यदि यह मर जावे, तो अवश्य उनकी अतुल संख्या में से एक घट जावेगा । परन्तु नहीं सर विल्फ्रेड ने अपना मस्तक हिलाया और अपने साथियों की ओर देखकर सकोप बोले "नहीं ! यह कदापि न होगा !!! यह बात ठीक हत्या के तुल्य होगी ऐसा भारी कलङ्क अपनी आत्मा पर लगाके जीने से मर जाना उत्तम है ! यदि मैं समझता कि इस्से कोई विशेष लाभ होगा, तो मैं अपनी बची, बन्दूकें बारूद और गोली न फेंक देता, परन्तु इस्के फेंकने से अपने हाथों अपने दुख की चादर को बढ़ाने के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं। ईश्वर पर निर्भर रहो ।

सर विल्फ्रेड के चेहरे पर इस समय एक प्रकार की जोति थी

और उन्होंने अपनी दृष्टि आकाश पर डालकर फिर अपने साथि-यों पर फेरी जिससे यह प्रगट होता था कि मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मर्द को किस प्रकार की मृत्यु से मरना चाहिये।

घड़ियाल और अन्य जल के भयानक जीव, खटोलने के चारों ओर, जो जल से केवल ३ फीट ऊँचा था, जमा हो रहे थे। जहां लों दृष्टि काम करती थी चारों ओर काले २ धब्बे दिखाई देते थे। चेको गुब्बारे की रस्सियों से लटका हुआ गला फाड़ २ कर चिल्ला रहा था, ऐसा जान पड़ता था कि मानो ईश्वर इन वायु पर भ्रमण करनेवालों को अपने सृष्टि की विरुद्धता करते देखकर क्रुद्ध हुआ है और वह अब इन्हें दण्ड दिया चाहता है। जब कि वे सभी इस दैवी कोप में फँसे हुये थे तो ऐसे समय हेक्टर उछल पड़ा, और जोर से कहने लगा कि अब भी एक उपाय बाकी है। हम लगभग एक सौ पाउंड का बोझ नीचे फेंक सक्ते हैं! खटोलने को काट दीजिये! और गुब्बारे के रस्सों में लटक कर बैठ जाइये।

सर विल्फ्रेड—लड़का उचित कहता है! बस यही अन्तिम उपाय है। उन्होंने हेक्टर को इसके बदले गले से लगा लिया! और जैसेही यह उपाय ध्यान में आया वैसेही उसके अनुसार कार्य भी प्रारम्भ हो गया। सर विल्फ्रेड ने नकसा और कम्पास अपनी जेब में डाल लिया, बन्दूकें और कारतूस के थैले गुब्बारे की रस्सियों से बाँध दिये गये! रस्सी की सीढ़ी हेक्टर ने अपने कमर में लपेट ली! अब कप्तान जोली ने उस बुढ्मा को पकड़

कर रस्सियों पर बैठाना चाहा परन्तु उसने इतना उपद्रव मचाया कि विवस हो इन्हें उसे उसी खटोलने में छोड़ देना पड़ा।

सर विल्फ्रेड—अजी क्यों व्यर्थ उद्योग करते हो, भला वह कभी तुम्हारे बैठाये उपर बैठनेवाला है। इसे खटोलनेही में रहने दो, और फिर खटोलने के चारों ओर मोमजामा लगा है इससे वह डूबेगा भी तो नहीं। और तबसे वह डोंगे जो दूर दिखाई देते हैं इसे पकड़ लेंगे। बस अब तुमलोग ऊपर चढ़ो।

सर विल्फ्रेड के यह कहने की कोई आवश्यक्ता न थी। सब के सब एकदम रस्सों पर-चढ़ गये! चेको सब से आगे था। वह बन्दर की भाँति गुब्बारे के सबसे ऊंचे भाग में जा टँगा।

जैसेही गुब्बारा खटोलने से छूटा वह लहराता हुआ ऊपर चला, कुछ देर पर्यन्त तो सबको यही ज्ञात होता था कि अब मृत्यु में कुछ विलम्ब नहीं। परन्तु ईश्वर सहायक हैं! वे बचे! और उन घड़ियालों के मुंह से एक बहुतही उत्तम भोजन निकल गया! निकल इसलिये गया कि हेक्टर ने उन रस्सों को जिनके साथ खटोलना बँधा था और जिसे जल पर तैरने के कारण घड़ियाल लोग पकड़ा चाहते थे एक के उपरान्त दूसरे को छुरी से काट दिया।

गुब्बारा बीस फीट की उँचाई पर वायु के झोंके के साथही साथ पूर्व दिशा की ओर जाने लगा। वह बुदमा खटोलने में बैठा जल पर वह रहा था कि इतने में कुछ डोंगे

उस्की ओर छूटे ! यह देखकर सर विल्फ्रेड ने कहा, कि उस्के मित्र अब उस्की प्राण रक्षा कर लेंगे।

कप्तान—और ठीक उसी का उलटा हमारे साथ भी तो करेंगे।

डोंगे पर बैठे हुये जङ्गलियों ने अपनी बरछियां गुब्बारे की ओर सीधी की परन्तु वह उनके सिर पर से निकल गया, और उस टापू की ओर चला जो आध मील के अन्तर पर था। यह टापू किनारे २ एक हरे भरे वन द्वारा ढँका हुआ था, और वह गुब्बारा बिना खटोलने के जिस्की रस्सियों में ५ मनुष्य लटक रहे थे एक बड़ाही विचित्र दृश्य, दिखला रहा था !

हेक्टर—हमलोग उस टापू तक अवश्य पहुंचेंगे पर कहीं ऐसा न हो कि गुब्बारा किसी वृक्ष से टकरा जाय।

सर विल्फ्रेड—जो कुछ हमलोगों पर बीते, उसे ईश्वर के धन्यवाद के साथही साथ सहन करना होगा, जिसने हमारे प्राण उन भयानक जन्तुओं से बचाये, और आशा है कि वही हमें इस निर्दयी जाति के हाथों से भी बचायेगा।

समय बात चीत करने का न था, गुब्बारा ऐसा सीधा टापू के ओर जा रहा था जैसे कोई गुप्त हाथ उसे वहां पहुँचा रहा है। इस्के सामनेही डोंगो का एक बड़ा झुण्ड खड़ा था और उन्हीं के उपरान्त किनारे से होती हुई एक चौड़ी सड़क टापू के भीतर की ओर चली गई थी।

शीघ्रता से उड़ता हुआ गुब्बारा पानी पर से होकर उस किनारेवाले वन को भी पार कर एक बस्ती में जा पहुँचा। यहां सहस्रों जङ्गली एकत्रित थे और ऐसा जान पड़ता था कि मानों वे इनके आने की बाट जोह रहे थे। इनके पहुँचतेही उन्होंने अपनी तीर तथा बरछियां उठाई और बड़ा भारी हुल्लड़ मचाया, कि इतने में एक ने उनमें से एक बड़ा भारी पत्थर उठाया, और उस गुब्बारे पर खींच कर मारा। पत्थर के लगतेही गुब्बारा बड़ीही शीघ्रता से पृथ्वी की ओर चला और वे पाचों व्यक्ति रस्से लिपटे लिपटाये, पृथ्वी पर आ रहे। उस समय की चिल्लाहट का वर्णन किसी प्रकार नहीं हो सक्ता चारों ओर की चिङ्घाड़ से कान के पर्दे फटे जाते थे। बेचारे पथिक अब एक २ करके क्रमशः गुब्बारे के बाहर निकलने लगे, और निकलतेही उन पर गाली गलौज की चारों ओर से बौछार होने लगी। सब बाहर निकल आये और उन बुदमाओं ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। उनकी दृष्टि से जान पड़ता था कि वे बड़े क्रोध में हैं परन्तु वे कोई शारीरिक कष्ट इन लोगों को नहीं पहुँचाते थे। इस समय की यदि कोई तस्वीर खींचता तो बड़ीही भली होती। वह बड़ा गुब्बारा जो किसी समय तूफान को चीरता वायु में अठखेलियां करता आकाश में उड़ता था अब कैसे एक बुरे ढेर की भांति पृथ्वी पर पड़ा है! वही पांचों पथिक जो उप्पर बैठे २ मनोहर दृश्य देखा करते थे। अब कैसे चोरों की भांति उसी के निकट खड़े कांप रहे हैं। और

वे पिशाच जिन्होंने उनका भ्रमण ऐसी कुटिलता में रोक दिया था उनके चारों ओर जिव्हा निकाले खड़े थे और उनके रक्त पीने की चिन्ता अपने चित्त में कर रहे थे।

चेको तो अधमुवों की भांति पृथ्वी पर लोट गया परन्तु उन चारों मनुष्यों की अवस्था इससे कहीं पृथक् थी। हेक्टर तथा फिलिप का मुंह तो भोला था और हमारे कप्तान साहब बहादुर की कान्ति में खिसियानापन झलक रहा था। परन्तु सर विल्फ्रेड इस प्रकार खड़े थे कि मानों वे अपनी मित्रमण्डली के साथ हैं, या यों कहिये कि मानों वे वक्तृता दे रहे थे और उनकी प्रशंसा करते हुये सुननेवाले उनके चारों ओर खड़े थे। उन्होंने पलट कर अपने साथियों से कहा कि कोई बात ऐसी मत कहना जिस्से यह जाति रुष्ट हो जाय। जो ये कहे सो करो और अपना भय न प्रगट होने दो।

पांच मिनिट पर्यन्त तो वे जङ्गली उन्हें घेरे हुल्लड़ मचा रहे थे कि इतने में और १२ मनुष्य जो देखने में उनसे भी भयानक थे और हाथों में लम्बी २ बर्छियां लिये हुये थे आये और उस भीड़ को हटाकर अपने कैदियों पर कड़ाई से हाथ रक्खा। अब चारों ओर सन्नाटा हो गया।

बारहवां बयान।

पहिले तो उन कैदियों को विश्वास हो गया कि हम अभी मारे जायँगे। परन्तु नहीं उस गारद के सिपाहियों ने उनको गांव के दूसरे

ओर पर ले जाकर एक झोपड़े में ढकेल दिया और स्वयं पहरा देने लगे।

सर विल्फ्रेड—प्यारे भाइयो! उत्तम होगा कि अब अपनी अवस्था मैं तुम लोगों को स्पष्ट रूप से समझा दूं! यह जाति बड़ीही निर्दई होती है। यह किसी को कैद नहीं रखते, वरन् वध कर डालते हैं। बड़ेही भयानक मनुष्यों से हमारा पाला पड़ा है!

इस बात को चेको ने भी सकारा। उस बेचारे के मुंह से कोई शब्द न निकलता था। वे लोग उसी प्रकार उस अन्धकार में पड़े हुये थे और बाहर सहस्रों जङ्गलियों की भयानक चिङ्घाड़ सुन पड़ती थी कि सहसा उनकी चिल्लाहट और भी बढ़ गई।

सर विल०—यदि हमारा ध्यान ठीक है, तो हम लोगों के भाग्यों का निर्णय हो गया और ये जङ्गली उसी की प्रसन्नता मना रहे हैं—

सर विल्फ्रेड यह कहतेही थे कि झोपड़े की ओर आते बहुत से पैरों का शब्द सुन पड़ा। कैदी लोग उठ खड़े हुये। उधर झोपड़े का द्वार खुला और बहुत से बुदमाशों ने प्रवेश कर दो दो ने एक एक कैदी पर अधिकार जमा लिया, और बाहर ले चले। इसमें भी बेवकूफ चेको तनिक कठिनता से हाथ लगा। कुल राह जङ्गलियों से भरी हुई थी परन्तु जैसेही वे लोग सामने पहूँचे उन लोगों ने जाने के लिये राह

वना दी। यह लोग उसी अवस्था में उस स्थान पर लाये गये जहां गुव्वारा गिरा था और जो वहीं उसी तरह पड़ा हुआ था।

कप्तान जोली के चञ्चल नेत्र सहसा एक ऐसी वस्तु पर आ पड़े जिसे देखतेही वे एकदम चिल्ला उठे, "हाय मेरी हड्डियांही गलें!" इनकी इस वेतुकी हांक पर सव ने उस ओर दृष्टि फेरी तो देखा कि खटोलना भी वहीं पड़ा हुआ है। इतने में एक लम्वा जङ्गली एक दूसरे जङ्गली युवक के हाथ में हाथ दिये इन लोगों के निकट आया। यह जङ्गली युवक वही था जिस्को इन लोगों ने अकस्मात् अरवों के हाथ से छुड़ाया था। वह दूसरा लम्वा व्यक्ति और जङ्गलियों की अपेक्षा बुद्धिमान जान पड़ता था और वस्त्र इत्यादि भी वहुत उत्तम पहने हुये था। वह छुड़ाया हुआ युवक आगे वढ़ा और उसने सर वि-ल्फ्रेड का हाथ पकड़ लिया और अपने पिता अर्थात् उस लम्वे व्यक्ति की ओर इंगित कर के किसी विचित्रही भाषा में वातचीत करनी प्रारम्भ की। इस्का उत्तर भी सर विल्फ्रेड ने उसी भाषा में देना प्रारम्भ किया जिसे देखकर उनके साथियों को वड़ाही आश्चर्य हुआ। सर विल्फ्रेड के साथी उनका एक भी शव्द नहीं समझते थे, और वे हैरान थे कि यह किस विषय पर २० मिनिट तक वादाविवाद कर रहे हैं। अन्त वह लम्वा व्यक्ति और युवक वुदमा अलग हुये, और यह प्रगट हुआ कि वातें समाप्त हुईं।

सर विल्फ्रेड ने अब अपने साथियों की ओर देखा और धीरे से बोले, "अपनी असली अवस्था को छिपाओ, इन लोगों पर यह न प्रतीत होवे कि तुम बड़े प्रसन्न हो, ईश्वर ने हम लोगों की प्राणरक्षा की। कैसा उपयुक्त हुआ कि मैं एक वर्ष पहिले इस भाषा में मेहनत कर चुका था, और वह युवक बुदमा भी इस्का ज्ञाता है कदाचित् इसे उसने अर्वी द्वारा प्राप्त की होगी। भला बताओ तो वह है कौन ? तुम्हारा ध्यान भी नहीं पहुँच सक्ता। फिर उस लम्बे व्यक्ति की ओर इंगित करके बोले यह काशांगो इस बुदमा जाति का राजा है और वह लम्बा छुड़ाया हुआ युवक इसी का पुत्र अर्थात् राजकुमार है जो एक अर्बी लड़ाई में, अर्वों के हाथ पड़ गया था। कासांगो यह जानता है कि हम लोगों ने राजकुमार को जान बूझ कर छुड़ाया है और राजकुमार भी इस्के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता, अस्तु जो कुछ वे जानते हैं उन्हें जानने दो। राजा साहब ने अनेक प्रकार के प्रश्न हमसे गुब्बारे तथा उस्के बारे में पूछे, मैंने भी साफ २ अपने भ्रमण का हाल कह सुनाया। वह हमारा बड़ाही अनुगृहीत है उसने अनेक प्रकार की सहायता उस खोये हुये व्यक्ति के पता लगाने के बारे में देने को कहा है। वह दृढ़प्रतिज्ञ भी जान पड़ता है। अस्तु जो हो इस समय तो कोई भय हम लोगों को इनसे नहीं है। ईश्वर ने चाहा तो सब काम ठीक हो जायगा। परन्तु सावधान कोई चिन्ह भय इत्यादि के न प्रगट होने पायें!

पाठकगण ! आप स्वयं अनुमान कर सक्ते हैं कि इन मनुष्यों को कितनी प्रसन्नता प्राप्त हुई होगी, जो अभी क्षण भर हुआ अपनी भयानक मृत्यु की वाट जोह रहे थे ।

राजा ने अपनी मित्रता यों प्रगट करनी प्रारम्भ की, कि सर विल्फ्रेड के कथनानुसार पहिले गुब्बारे तथा खटोलने को भली प्रकार लपेट कर रख देने की आज्ञा दी, और इसे उन जङ्गलियों से बड़ीही उत्तमता से प्रतिपालन किया । इस्के उपरान्त राजा ने अपने हाथों से बन्दूकें तथा अन्य वस्तु रस्सियों से खोलीं और सर विल्फ्रेड के हवाले कर दीं । सर विल्फ्रेड ने एक बन्दूक तो स्वयं ली और दूसरी कप्तान जोली के हाथ धरी, और तीसरी हेक्टर के हवाले की, कारतूस तथा गोलियों का थैला फिलिप के सुपुर्द किया गया । गुब्बारे की रक्षा के लिये सिपाहियों की एक गारद खड़ी कर दी गई ! उधर वे जङ्गली गला फाड़ २ कर आस्मान सिर पर उठाये थे, जो अपने हिसाब से बड़ी प्रसन्नता प्रगट कर रहे थे ।

राजा ने अपने दोस्तों का हाथ पकड़ लिया और फिर अपने महल की ओर चले । यह महल एक बड़ा भारी झोपड़ा था । पृथ्वी पर लकड़ी के तख्ते लगे हुये थे उनपर जङ्गली जानवरों की खालें बिछी हुई थीं और दीवार पर भिन्न २ प्रकार के हथियार सजावट के लिये टँगे हुये थे । राजा अपने पुत्र सहित एक शेर बबर की खाल पर बैठा, और अपने दोस्तों को अपने सामने बैठने के लिये कहा ।

सहसा राजा ने ३ तालियां बड़े ऊँचे शब्द से बजाई और साथही दो गुलाम हाथों पर भोजन की सामग्री उठाये वहां आ पहुँचे, भोजन में चावल, शहद, मठा, और मछली का मांस था जो एक प्रकार की लकड़ी की थाली में सब के सामने रक्खा गया। सर विल्फ्रेड आश्चर्य से उन गुलामों की ओर देखने लगे जो रङ्ग के काले, घुंघराले बाल वाले, और बड़ेही सुन्दर थे।

भोजन देखतेही सब के मुख पर प्रसन्नता झलकने लगी और सब ने राजा सहित खूब तन के भोजन किया।

भोजन का अन्त हुआ और अब यह सब दोस्त एक दूसरी कोठरी में जा बैठे।

सर। म[illegible]ड—(हेक्टर से) तुम्हें मैं एक समाचार सुनाऊं? [illegible]ारे कु[illegible] कहीं से उड़ता हुआ समाचार पाया है कि यहां [illegible] जानता, [illegible] शाड झील के दक्खिन और पूर्व के कोने में किसी जाति के पास एक सुफेद व्यक्ति कैद है।

यह जाति कैसी? वा कितनी दूर है? यह कशाङ्गो नही जानता, इतना मालूम है कि नदी शारी जहां से निकलती है वहीं कहीं इस जाति के रहने का स्थान है, और वह भाग एफ्रिका का अभी लों किसी ने नहीं देखा। कशाङ्गो कहता है कि वहां जाना अपने को जान बूझ कर कुचक्र में डालना है। परन्तु इसपर भी वह सहायता के निमित्त तैयार है। जहां तक मैं अनुमान करता हूं निस्सन्देह वह सुफेद मनुष्य तुम्हारा पिताही होगा। वह पानी की बोतल जो चेको द्वारा मुझे प्राप्त हुई थी

नदी नाइजर से कैसे यहां वह के आई . मुझे इसका बड़ा आ-श्चर्य है। इसमें एक बड़ा भेद जान पड़ता है परन्तु ईश्वर ने चाहा तो सब खुल जायगा। परन्तु काशाङ्को ने हमें एक झोपड़ा दिया है और उसी में सोने की सब सामग्री एकत्रित है तो चलो अब वहीं चलें!

सर विल्फ्रेड ने कुछ बातें राजा से कीं जिस्के कुछ मनुष्य उन्हें उस झोपड़े तक ले गये जो राजमहल से मिला हुआ था। दसही मिनिट के उपरान्त वे लोग निद्रा देवी की गोद में अचेत हो जा पड़े! और उधर सूर्यदेव ने भी अस्ताचल में जा, अपने मुंह पर नीली चादर तान ली।

तेहरवाँ बयान।

जिस समय ऊपर लिखी घटना राजमहल ... । उधर ने ... रही थी ठीक उसी समय नगर के बाहर भी ... विचित्रही घटना अपना विस्तार फैला रही थी।

राजा की शरण में वे पथिक रातभर, और उस्के उपरान्त दोपहर पर्यन्त खूब पैर फैलाये मीठी नींद सो रहे थे। अब ये सब दोपहर को सोकर उठे और अपने झोपड़े से निकलकर राजा के दरबार में आये।

यहां उत्तम से उत्तम भोजन रक्खे हुये थे और सब लोग मानों उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजा ने सब से हाथ मिलाया और अपने पास बैठा लिया, उधर एक चोबदार ने बाहर की खड़ी भीड़ को पुकार कर कहा।

"वायु में उड़नेवाले वह विचित्र आदमी अब शयनागार से निकले हैं"।

वहुत देर सोने के कारण इनलोगों की मानो गई हुई शक्ति फिर शरीर में आ गई! वह सब प्रसन्न जान पड़ते थे, और चेको तो अपने साथियों की ऐसी स्वागत देखकर फूला न समाता था।

भोजन के उपरान्त सर विल्फ्रेड तथा राजा में इधर उधर की बातें प्रारम्भ हुईं। सर विल्फ्रेड ने राजा से उस सुफेद व्यक्ति के बारे में कुछ प्रश्न किये परन्तु कोई उत्तर इच्छानुसार न मिला। परन्तु उसने इसबात की शपथ कर ली कि जब तुम उस मनुष्य की खोज में जाओगे तो मैं भली प्रकार तुम्हारे गुब्बारे की रक्षा करूंगा। राजा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे वह खूब जानता था कि निरर्थक होगी क्योंकि ऐसे भयावने स्थान से इनलोगों के फिरने की उसे बिल्कुल आशाही न थी। इसलिये सर विल्फ्रेड नें गुब्बारे के बारे में जैसा वादा चाहा तुरन्त पूरा कर दिया गया।

गुब्बारे से निश्चिन्त होकर सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों से आगे बढ़ने के लिये सलाह लेनी प्रारम्भ की और कुछही देर में यह स्थिर हो गया, कि कुछ दिन राजा के मेहमान रह कर और इनसे नाव इत्यादि लेकर हमलोग चल खड़े हों। सर विल्फ्रेड को राजा की बातों पर बड़ा विश्वास था परन्तु शोक का विषय है कि जिस आपत्ति को आना था अब वह एकबारगी सिर पर आ पहुँची थी।

सन्ध्या को चार बजे एक भेदिये नें राजा को हाल पहुँचाया कि ६ अरब हाथों में हरी डालें लिये जो शान्ति का चिन्ह है डोंगों पर सवार इस ओर चले आ रहे हैं।

राजा को यह सुनकर बड़ाही आश्चर्य हुआ, उसने अपने मेहमानों को भीतर रहने के लिये कहा, और कुछ सभ्य व्यक्ति को उन आनेवालों की अगवानी करने के लिये भेजा।

सर विल्फ्रेड के चित्त में यह सुनतेही भय सा उत्पन्न हुआ, परन्तु उन्हों ने उसे प्रगट न होने दिया। अभी लों चारों ओर शान्ति थी पर सहसा एक बड़ा भारी हुल्लड़ प्रारम्भ हुआ और जंगलियों के झुण्ड के झुण्ड इधर उधर दौड़ने लगे।

सर विल्फ्रेड धीरे २ दरवाजे पर्यन्त गये परन्तु उस गारद ने जो दर्वाजे की रक्षा कर रहा था इन लोगों को भीतरहीं रहने को इंगित किया।

चारो ओर अब घटाटोप अन्धकार छा गया। हां नगर में स्थान २ पर प्रकाश हो रहा था। बहुत देर तक तो केवल वादाविवाद के शब्द सुन पड़ते थे परन्तु अब बड़े क्रोध से जंगलियों की चिल्लाहट सुनाई देने लगी।

सर विल्फ्रेड खड़े सोच रहे थे, सहसा बोल उठे, कि मैं अवश्य जानूंगा कि इसका अर्थ क्या है? तुम लोग जहाँ हो वहीं रहो, मैं अभी आता हूं।

यह कह कर सर विल्फ्रेड किसी रास्ते से बाहर निकल गये। और एक खिड़की से जो नीचेवाले मैदान पर खुलती थी

देखने लगे । इधर उनके साथी बड़ीही उत्सुकता से उस हुल्लड़ को सुन रहे थे । ये लोग भूखे भी थे क्योंकि केवल इन्होने दोपहरही को भोजन किया था सहसा फिर भारी कोलाहल हुआ, और सर विल्फ्रेड ने अन्धकार में अपनी ओर एक साये को बढ़ते देखा, यह देखतेही वह वहां से हटे, और तुरन्त अपने साथियों में जा मिले ।

सर विल्फ्रेड—दोस्तो ! बड़े बुरे समाचार सुन पड़े हैं! हमने जो राजकुमार के बचाने के निमित्त उस अरबी नगर को हानि पहुँचाई थी उस्का फल अब मिलता है । मैंने सब हाल खिड़की से, अपनी आँखों देखा । सहस्त्रों जंगली उन अरबों के चारो ओर एकत्रित हैं । जो कुछ मैंने सुना उस्से यही प्रतीत होता है कि अरब लोग राजा से हमलोगों को मांग रहे हैं और वे हमें भूत प्रेत प्रमाणित कर रहे हैं । उनकी वक्तृता का असर जंगलियों पर भली भांति जम गया है । काशांगो की बात कोई भी नहीं सुनता । ईश्वर जाने हम लोगों की क्या दशा होगी । परन्तु देखो हमारे पास ३ बन्दूकें हैं । यह अच्छी तरह ध्यान रखना कि हम अपने प्राण बड़ेही भारी मूल्य पर बेंचेंगे ।

सर विल्फ्रेड की बातें सुनतेही सबका रक्त सूख गया और चेका ज़ोर से चिल्ला उठा ।

हेक्टर—तो क्या ये वही अरब हैं ? कि जिनसे बुदमा जाति से सदैव समर होती रही ! उनको यह साहस कैसे हुआ कि बैरी के नगर में चले आये ? काशांगो उनके पकड़ लेने की आज्ञा क्यों नहीं देता ?

सर विल्फ्रेड इस्का कुछ उत्तर दियाही चाहते थे, कि सहसा बाहर ऐसा बड़ा कोलाहल हुआ कि इनके मुंह से बात न निकली, और साथही उस झोपड़े का दरवाजा धड़ाके के के साथ खुला। और काशांगो ने कोठरी में प्रवेश किया। उसने सर विल्फ्रेड से बहुत शीघ्र कुछ बातें कीं और सर विल्फ्रेड ने तुरन्त फिरकर अपने साथियों से कहा "जिस बात से भय था वही आगे आई! अरबों की वक्तृता ने जंगलियों के चित्त पर भली भाँति अपना रंग जमा दिया है। राजा को कोई ध्यान में नहीं लाता। इसने अरबों को पकड़ने की भी आज्ञा दी परन्तु इस्को प्रजा ने अस्वीकार किया। किन्तु अब भी कुछ आशा है काशांगो हमें बचाने के लिये कह रहा है। परन्तु न जाने कैसे?

सर विल्फ्रेड के बात करते २ राजा चला गया था और क्षणैक उपरान्त पुनः लौट आया। इसबार उसके साथ एक गुलाम भी था। राजा एक बन्दूक, एक बारूद और गोलियों का थैला और एक बर्छा अपने साथ लेता आया था। बन्दूक तथा बारूद का थैला तो उसने फिलिप को दिया और बर्छा चेको के हवाले किया। उस गुलाम के पास भी एक ढाल और एक बर्छा था।

काशांगो ने उसकी ओर इंगित करके कुछ बातें कहीं और वह उन लोगों को लेकर झोपड़े की पिछली दीवार तोड़कर निकल गया।

सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों से कहा, सावधान! अब यह समय अपनी २ वीरता प्रगट करने का है। काशांगो ने

इस गुलाम से प्रण किया है कि यदि यह हमें कदाचित् झील के किनारे तक पहुँचा देगा तो यह गुलामी सेभी काम न लिया जावेगा। गये।

और कुछ कहने सुनने का समयही न था। जङ्गली वुदमा, अपने आखेट को पकड़ने के लिये कोलाहल मचाते उसी ओर आ रहे थे।

काशांगो जब अपने महल की चहारदीवारीं के पास पहुँचा, तो उसे अपने अतुल वल द्वारा एकही धक्के में गिरा दिया। जिसमें से छओ पथिक एक के उपरान्त दूसरे निकल आये।

सर विल्फ्रेड उस वीर वुदमा को, विदा कहने के निमित्त क्षण एक ठहर गये, क्योंकि विलम्ब करने में स्वयं इन्हीं के प्राण पर आ बनती।

"विदा" कहतेही छओ मनुष्य बड़ीही शीघ्रता से नगर के वाहर भागे और झील का रास्ता पकड़ा। इनके पीछे का आकाश, सहस्त्रों मशालों के प्रकाश से लाल हो रहा था और अनगिनती पैरों के पड़ने से पृथ्वी काँप रही थी।

दौड़ते २ ये लोग नगर के वाहर पहुँचे, और अब जङ्गल में घुसे, कि सहसा भयानक कोलाहल नगर की ओर से सुन पड़ा; इसका कारण जान लेना कोई वड़ी वात न थी. उन जङ्गलियों को आखेट के भाग जाने का पता लग गया और वे अब कोलाहल मचाते जङ्गल की ओर, अर्थात् इन भागनेवालों के निकट चले आते थे।

'सर विल्फ्रेड ...गनेवाले, और भी शीघ्रता से भागे, और कितं-
सहसा बाहर ... पर बड़ी २ ठोकरें खाईं पर इस्का ध्यान उन्हें उस
निकली ... के ...ने, जो क्षण २ इनके निकट होता जाता था बिलकुल
...न होने दिया।

चौदहवां बयान।

अब इन लोगों को दृढ़ आशा हो गई कि भागना असम्भव है। वे कुछ दूर गये थे कि कुछ मशालों का प्रकाश उनके आगे हो गया। सर विल्फ्रेड घबड़ाकर चिल्ला उठे, "हमलोग घिर गये, सब एक साथ हो जाओ, और अपने निशाने ताक २ के लगाओ"। परन्तु वह गुलाम नहीं ठहरा, और जिधर वह प्रकाश दिखाई पड़ता था उसी ओर बढ़ा, और एक चीख़ मारी जिस्का तात्पर्य यह था कि "मत ठहरो आगे बढ़े आओ।"

यद्यपि सर विल्फ्रेड आगे बढ़े परन्तु साथही दो खाली बन्दूकें हवा पर छोड़ीं, जिस्का परिणाम बहुतही लाभदायक हुआ। अर्थात् वह झुण्ड, जो आगे से आ रहा था, चिल्लाकर अपनी २ मशालों को वहीं पृथ्वी पर पटक इधर उधर भाग गया।

जब यह भागनेवाले उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने पृथ्वी पर पड़ी एक जलती हुई मशाल उठा ली। सर विल्फ्रेड ने इस्के प्रकाश में एक दृष्टि अपने साथियों पर डाली और सबको अपने साथ पाकर फिर आगे दौड़ना प्रारम्भ किया।

वे जङ्गली मनुष्य जो आगे से आ रहे थे कदाचित् किसी अन्य स्थान के रहे होंगे जिन्हें इन बखेड़ों से कुछ भी काम न था और वे बन्दूक का शब्द मात्र सुनकर इधर उधर भाग गये।

अब वन ऐसा सघन मिला कि उन्हें जङ्गलियों की मशाल नहीं दिखाई देती थी यद्यपि कोलाहल अभी तक सुन पड़ता था। वास्तव में इन लोगों के भाग्य बहुत अच्छे थे कि उपयुक्त राह दिखानेवाला साथही और एक मशाल भी मिल गयी थी नहीं तो वे उस अन्धकार में भटक जाते और एक २ करके उन जङ्ग-लियों के आखेट बनते।

यद्यपि कोई राह दिखाई न पड़ती थी परन्तु वह गुलाम बेखटके मानों किसी जानी बूझी सड़क पर दौड़ा जाता था।

भागनेवालों को यह नहीं मालूम था कि यह टापू इतना लम्बा होगा। जो अनुमान उन लोगों ने उस्की लम्बाई के बारे में किया वह ठीक न निकला, क्योंकि यह लोग एक माइल से भी कहीं ज्यादा दौड़ते हुये आ चुके थे परन्तु अभी किनारा नहीं दिखाई प-ड़ता था। अब राह ऊपर को जाने लगी मानों वह किसी पहाड़ी पर गई है और यह चढ़ाई बड़ीही कठिन थी। अनगिनती प-त्थरों के ढोंके पड़े थे, सहस्रों झाड़ियां इधर उधर छिटकी हुई थीं। पीछे फिरकर ध्यान देने से इन्हें आनेवालों का कोलाहल भी नहीं सुन पड़ता था। जिस्से इन्हें पुनः साहस हो गया और किसी भांति वह पहाड़ी पर चढ़ गये। बस अब समाप्त हो गया, और उस गुलाम ने खड़े होकर पीछे की ओर इङ्गित किया तो

देखा कि तमाम 'वन मशालों से प्रकाशमय हो रहा है। कोलाहल न आने का कारण यह था कि वे बुदमा इन्हें चुपचाप धोखा देकर पकड़ा चाहते थे, इनके हाथ की मशाल उन राक्षसों को राह दिखा रही थी। अब वे सब पुनः कोलाहल करने लगे।

सर विल्फ्रेड—(गुलाम से) हम लोग किनारे से कितनी दूर हैं?

इस प्रश्न के उपरान्त उन्हें यह ध्यान आया कि गुलाम तो हमारी भाषा जानताही नहीं। परन्तु वह इनका इशारा समझ गया और इस्के उत्तर में जो इशारा उसने किया उस्से जान पड़ा कि किनारा बहुत दूर नहीं है। सर विल्फ्रेड ने चिल्ला कर कहा, भागो जल्दी भागो, वे पिशाच बहुत शीघ्र आ रहे हैं हिम्मत न हारो भील का किनारा बहुत निकट है।

कप्तान जोली, जो बेतरह हाँफ रहे थे, और जिनके मुहँ से साँस, एक छोटे अञ्जन के तुल्य आती जाती थी बोले "मै नहीं—चल सक्ता मैं थक—गया हूं मुझे—यहीं—छोड़ दो—तुम अपनी रक्षा—करो—हाय मैं क्यों—मैं क्यों मैं ऐसी— खराब जगह—आया—(और इस्के उपरान्त वह फिर हाँफने लगे।)

सर विल्फ्रेड— यह सब व्यर्थ है, जोली तुम्हें अवश्य दौड़ना होगा, नहीं तो, ध्यान रक्खो कि ये राक्षस तुम्हें धीमी आँच पर चुरायेंगे और तुम्हरा हड्डियों का भोजन होगा। हेक्टर और फिलिप तुम दोनों कप्तान की सहायता करो।

इस बात का भारी असर कप्तान साहब पर पड़ा और सर विल्फ्रेड उनलोगों को बोलता छोड़ कर सबके आगे भागे।

अब वे लोग पहाड़ी पर से उतर कर मैदान में पहुँचे कि सहसा सर विल्फ्रेड को ठोकर लगी और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। मशाल भी इनके साथही गिरी और बुझ गई। अब वह दूसरा प्रकाश कहां से लायें अतः बेचारों को अन्धकारही में दौड़ना पड़ा। इतने में हेक्टर चिल्ला उठा "वह आते हैं" और वास्तव में इनसे कुछही अन्तर पर जङ्गलियों का झुण्ड पहाड़ी पर से उतर रहा था। सर विल्फ्रेड को बड़ाही क्रोध आया और वह कहने लगे "इन पाजियों को अवश्य उचित शिक्षा देनी होगी," और अपने साथियों को लम्बी कतार में बन्दूकें हाथ में लिये बुदमाओं के पहुँचने तक खड़ा कर रक्खा। उन जङ्गलियों ने जब इनकी मशाल बुझी हुई देखी तो क्रोध से चिल्लाने लगे क्योंकि अन्धकार में उन्हें अपने आखेट का पता नहीं चलता था।

जैसेही राक्षसों के आगे की श्रेणी सर विल्फ्रेड से २० गज के अन्तर पर आई वैसेही उन्होंने एक बारगी बन्दूकें सर कीं और उनके ८ मनुष्य भूतलशायी हो गये बहुत सी मशालें बुझ गईं और बड़ा शोर उठा! कुछ काल पर्यन्त बुदमा जिस स्थान पर थे, वहीं खड़े रहे। सर विल्फ्रेड ने यह देखकर कहा, "बस बहुत है अब फिर जल की ओर दौड़ो।" और पुनः यह लोग गुलाम सहित जो आश्चर्य से बन्दूकों का चलना देख रहा था किनारे की ओर भागे। भागने में सबने बड़ी [illegible]ता की क्योंकि वे जानते थे कि कुछही देर के उपरान्त उनके जीवन का

वारा न्यारा होनेवाला है। कप्तान जोली तो अधमुये से हो गये थे जिन्हें हेक्टर तथा फिलिप घसीटे लिये जाते थे । चेको जो सब से तेज़ था सर विल्फ्रेड के साथही साथ दौड़ रहा था। यहां पर वृक्ष बहुत कम थे, और भूमि के चौरस होने के कारण उन्हें ठोकर न लगती थी। इनके पीछे कुछ गज़ों के अन्तर पर बुदमाओं के झुण्ड के झुण्ड झपटे चले आते थे । अब उनका हुल्लड़ नहीं जान पड़ता था केवल मशालों की रोशनी और हथियारों की खड़खड़ाहट जान पड़ती थी।

इतने में वह गुलाम ज़ोर से चिल्ला उठा और फिर चुप हो गया। सर विल्फ्रेड इसका कारण जानने के निमित्त उसकी ओर झपटे पर जैसेही वह चार कदम चले थे कि एक ६ फीट के नीचे, स्थान में गिर पड़े। यहां किनारा ढालुआँ था जिससे उन्हें कोई चोट न आई वे तुरन्त उठ बैठे और उस स्थान से सबको सचेत कर दिया । सब ठहर गये और एक२ करके उस ढालुयें स्थान से खिसकते हुये उनके निकट जा पहुँचे। अब भूमि बलुई मिलने लगी। इनके ठीक सामने कुछही दूरी पर शेड झील लहरें मार रही थी । गुलाम पानी के किनारे खड़ा था और सर विल्फ्रेड कुछही देर में अपने साथियों सहित उसके पास पहुँच गये। आह! यह कैसे आनन्द का स्थान था कि जब वे लोग प्राणबचानेवाले दो बड़े२ डोंगों के निकट खड़े थे! इस समय इनके पीछे तो इनके पकड़नेवाले आ रहे थे और इनके आगे झील, जिसमें इनके छुटकारे की राहें बनी दिखाई

देती थीं। यद्यपि डोंगे घास और सर्कण्डों द्वारा छिपे हुये थे परन्तु गुलाम को पहलेही से मालूम था और वह बलिष्ट व्यक्ति उसे एक धक्के में साफ और गहरे जल पर ले आया। एक नाव पर कप्तान जोली और वह गुलाम बैठे, तथा दूसरी पर औरों ने अधिकार जमाया। डोंगियों में डाँड़े रक्खे हुये थे, और ठीक उस समय जब बुद्मा किनारे पर पहुँचे, उनकी नावें तीर के समान किनारे को छोड़कर झील के बीच में जा रहीं थीं।

पन्द्रहवाँ बयान।

जङ्गालियों ने जब अपना उद्योग व्यर्थ होते देखा तो उन्होंने कुछ बर्छे, पत्थर, और तीर उन भागनेवालों की ओर फेंके, परन्तु निरर्थक! वह डोंगियां बड़ी शीघ्रता से जल को काटतीं आगे बढ़ी चली जाती थीं।

हेक्टर—भई! इतनी चोट चपेट के उपरान्त भी हम कैसे अपने भुजाओं को काम में ला रहे हैं। इस्के पहले मुझे कभी इतना दौड़ने का अवसर नहीं पड़ा था।

सर विल्फ्रेड—अभी क्या है? तुम्हारा बाहुबल आगे चल के देखा जायगा अभी तो यहां से श्रीगणेशही है।

यह कहकर वह नाव की तलाशी लेने लगे, उन्होंने देखा कि आठ फीट लम्बी तथा पाँच फीट चौड़ी एक चटाई उस्में बिछी हुई थी। इसे उन्हो ने उठाया तो इस्के नीचे बारह फीट लम्बा तथा ताँबे की मुंदरी में जड़ा बाँस दिखाई पड़ा जिसे देखतेही

वह बोल उठे "तो भई । पाल के सामान भी मिल गये यह इस्का डण्डा है और यह इधर पाल भी रक्खी हुई है। समय पर यह बड़ाही काम देगा।

हेक्टर—क्यों महाशय अन्त हम जाते कहां हैं? क्या दुश्मन हमारा पीछा नहीं करेंगे उनके पास भी तो बहुत से डोंगे हैं।

सर विल्फ्रेड—मुझे भय है कि वे अवश्य पीछा करेंगे। परन्तु हम उनसे बहुत आगे हैं और ठीक शेरी नदी की ओर जा रहे हैं। यह नदी पूर्व दिशा की ओर है। यह शेड झील १०० माइल के लगभग लम्बी है इस हिसाब से हम अस्सी या नब्बे माइल के अन्तर पर नदी शेरी से हैं।

कप्तान जोली—परन्तु खाना पीना तो ईश्वर का नाम है, एक टुकड़ा रोटी का ढूंढ़िये तो न मिलेगा! तो क्यों महाशय सर विल्फ्रेड साहब! क्या हम लोगों को भूखों मरना होगा?

सर विल्फ्रेड—नहीं जी भूखों क्यों मरने लगे; आज प्रातःकाल हम लोग बहुत अच्छी तरह भोजन कर चुके हैं जो एक वा दो दिन के निमित्त बहुत होगा। परन्तु हम अपना समय व्यर्थ की बकवाद में क्यों नष्ट कर रहे हैं। मेरी इच्छा है कि सब कोई एकही डोंगे में आ जावें, एक तो यह बहुत-लम्बी है और दूसरे एक पाल दो नाव के लिये नहीं पूरी पड़ सक्ती। इस लिये एक नाव में सबकें आजाने से निश्चिन्ततापूर्वक हमलोग आगे बढ़ेंगे।

सर विल्फ्रेड का ध्यान बहुतही ठीक था और सब ने इनकी राय मानी। वह दूसरा डोंगा झील पर उलटा करके छोड़ दिया गया। जहाँ लों दृष्टि जाती थी कोई प्रकाश झील के इधर नहीं दिखलाई पड़ता था। और ये लोग बारी २ नाव चलाते बढ़े जाते थे। पहले सर विल्फ्रेड, कप्तान जोली, और फिलिप; और फिर हेक्टर और दोनों गुलाम खेते थे।

इस अदला बदली से नाव तीर के समान जा रही थी और वह लम्बी तथा पतली नाव बनाई भी ऐसेही समय के लिये गई थी; पानी इस्से बड़ीही आसानी से कटता था। अब रात आधी से भी ज्यादा जा चुकी थी और सर विल्फ्रेड बैठे, अपने साथियों का साहस बढ़ा रहे थे उनको दृढ़ आशा थी कि वह पाल के चढ़ाने पर शेरी तक चौबीस घण्टे में जा पहुँचेंगे। इतने में कप्तान जोली ने इधर उधर देखकर टाँगे फैलाई और कुछही देर के बाद खर्राटे लेनें लगे। यह देखकर चेको से भी न रहा गया और उसने भी कुछही देर के उपरान्त उनका साथ दिया। दूसरे लोगों ने अपनी इस इच्छा को रोका और दम ले लेकर परिश्रम करने लगे।

सर विल्फ्रेड किसी बड़ेही गम्भीर विषय पर ध्यान कर रहे थे आपस में किसी प्रकार की बात चीत न होती थी। वह केवल एक दफे बोले और वह बात शाह काशांझो के बारे में थी वह उस्का धन्यवाद और उस्के प्रण के दृढ़ता की बड़ी प्रशंसा करते थे। उसने अपने लड़के की जान बचानेवालों को

अपना एक भण्डार ; अर्थात् गुलाम, बन्दूक, और बारूद कृपा करके दे दी थी ।

सर विल्फ्रेड—यद्यपि यह बादशाह इन्हीं असभ्य निर्दयी और भयानक जाति में से है परन्तु वह सभ्य जातिओं के बहुत से लोगों से अच्छा है । यह पृथ्वी भी क्या विचित्र वस्तु है ।

फिर इसके उपरान्त कोई बात चीत आपस में न हुई यहाँ लों कि प्रातःकाल हो गया । आह ! वह कैसा समय था कि जब अफ्रीका का जलता बलता सूर्य निकलतेही उनकी खोपड़ियों को चिटकाने लगा, पानी अदहन हो गया परन्तु इस समय इनको सहायता भूख ने की। अर्थात् वे भूखे रहने के कारण विशेष परिश्रम करते थे क्योंकि उन्हें यह भली भाँति मालूम हो गया था कि बिना किसी जगह उतरे भोजन का ठिकाना लगना कठिन है । भाग्यवश झील का पानी मीठा था इसलिये उन्हें प्यास का कष्ट नहीं उठाना पड़ता था ।

सूर्य के निकलतेही धीरे २ कुहरा फटने लगा और उनके चारो ओर का दृश्य जो अब तक नेत्रों से छिपा था क्रमशः साफ दिखाई देने लगा । कि इतने में सर विल्फ्रेड की दृष्टि पश्चिम ओर गई और उन्हें ६ डोंगे अपनी ओर शीघ्रता से आते दिखलाई दिये, इसे देखतेही उन्होंने जोर से कहा "वह आ रहे हैं; सब कोई डाँड़े अपने हाथों में लेलो कोई खाली न रहे" यह कहकर वे स्वयं परिश्रम और शीघ्रता से डाँड़े चलाने लगे ।

कप्तान जोली की मूर्ति उस समय देखनेही योग्य थी। जब वह अपने बलिष्ट और मोटे २ हाथों से डाँड़ों को खे रहे थे तो उनका मोटा चेहरा सिंदूर से रङ्गा हुआ जान पड़ता था।

इस भागाभाग के एक घण्टा उपरान्त, उन ६ डोंगों में से पाँच डोंगे अब केवल एकही माइल के अन्तर पर रह गये। आने वाले, भागनेवालों की अपेक्षा बहुत शीघ्रता से बढ़ रहे थे। उन पाँचों डोंगों पर बारह मनुष्य सवार थे जिनमें आधे तो अरब थे और आधे बुद्दमा; इन अरबों के हाथ में बन्दूकें भी थीं जिन्हें उन्होंने भरकर और डोंगे को तेज करके इन भागनेवालों पर दागी परन्तु गोलियां इनसे कुछ दूर पर जा गिरी।

सर विल्फ्रेड—कुछ परवाह नहीं! बढ़े चलो!

यह कहकर उन्होंने अपनी तथा अपने साथियों की बन्दूकें भर लीं और उनको आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये उन लोगों के पास रख दीं क्योंकि बैरियों के डोंगे बड़ीही शीघ्रता से झपटे चले आ रहे थे।

सोलहवां बयान।

वह लोग यह अनुमान नहीं कर सके थे कि उनके पीछा करनेवाले उनसे कितनी दूर है क्योंकि सर विल्फ्रेड ने किसी को इधर उधर देखने के लिये मना कर दिया था। उधर वे जङ्गली इस विजय से जिस्की कि उन्हें पूरी आशा थी; बड़ेही प्रसन्न हो रहे थे।

सर विल्फ्रेड ने जब देखा कि अब वह सब केवल चालीस गज़ के अन्तर पर पहुँच गये तो अपनी बन्दूक उठाई और निशाना ताक कर जो दाग़ी तो एक बड़ा अरब जो डोंगें में सबके आके खड़ा था चिल्लाता हुआ डोंगे में गिर पड़ा । इससे उन लोगों की चाल में कुछ फर्क आ गया, और जब दूसरे व्यक्ति उस ज़ख्मी अरब को सँभाल रहे थे तो उनमें से दो चार ने अपनी बन्दूक उठाई, इधर सर विल्फ्रेड ने यह देखकर अपने साथियों से कहा "मत घबड़ाओ ठीक पूर्व दिशा की ओर खेते चले जाओ डोंगे को तिर्छा मत होने दो !" यह कहकर उन्होंने फिर बन्दूक दाग़ी। जिससे कि वे वहशी अरबों सहित चिल्ला उठे परन्तु इसके उपरान्तही उन लोगों ने भी बाढ़ मारी । तीन गोलियाँ तो ईश्वर की कृपा से इधर उधर निकल गईं परन्तु एक कप्तान जोली के हाथ में आ लगी और बड़े खेद का विषय है कि वह इसके लगतेही चिल्लाकर उछल पड़े और वहाँ से जो नीचे आए तो पानी के भीतर जा पड़े । और जबसे उनके साथी डोंगे को रोके २ तब से तो वह लगातार कई गोते खा गये । उनका स्थूल शरीर पानी के बहुतही भीतर चला गया । वह दोनों डोंगों के बीच में पड़े हाथ पैर मार रहे थे कि उनसे दस फीट पर एक सर्राटा सुनाई दिया और साथही एक लम्बा घड़ियाल उनपर झपटता दिखलाई पड़ा । जोली के तो प्राण पखेरू यह देखकेही हवा

हो गये उस बेबसी में और क्या कहते ज़ोर से चिल्ला उठे "सर विल्फ्रेड मुझे बचाओ"।

वास्तव में उनका प्राण इस समय बहुतही आपत्तियों में फँसा था। यद्यपि उन्हें तैरना आता था परन्तु इस समय वे चौंधिया गये थे। उनका हाथ भी थोड़ा बहुत बेकाम था और उनकी जेबें जो छोटे गोलियों से भरी हुई थीं और भी उन्हें बोझल बनाये हुये थीं।

उनके बैरी अब उनके सिरही पर पहुँचा चाहते थे, उधर घड़ियाल से भी कुछ विशेष अन्तर न रह गया था। सर विल्फ्रेड ने कप्तान जोली के गिरती समय कितनीही चेष्टा की कि डोंगा खड़ा हो जाय परन्तु निरर्थक! डोंगा न खड़ा हुआ! यहाँ लों कि वह अभागा कप्तान, अपने बैरी तथा मित्र दोनोंही से बराबर के अन्तर पर रह गया। इस घटना ने मित्र और बैरी दोनों को एकही प्रकार अपनी ओर झुका लिया था वे एक टक लगाये उस मनुष्य को जल के साथ बल की परीक्षा करते देख रहे थे।

इतने में सर विल्फ्रेड गरज उठे! "पीछे हटो! डोंगे को घुमा दो और ऐसा ज़ोर लगाओ कि जैसा कभी न किया हो" इस समय उन्हें कप्तान जोली को छुटकारा दिलाने के सिवा और कुछ न सूझता था। उधर कप्तान जोली अबलों चीखते चिल्लाते और हाथ पाँव मारते जाते थे साथही उस आते हुये घड़ियाल की ओर भी बेतरह पानी उछाल रहे थे जिस्से उस घड़ियाल

की चाल में कुछ फर्क आ गया था। इतने में सर विल्फ्रेड वहाँ पहुँच गये और जब घड़ियाल कप्तान जोली से केवल तीन फीट के अन्तर पर रहा तो उन्होंने ताक कर अपनी बन्दूक से निशाना लगाया।

इस निशाने में ईश्वर की अवश्य कोई सहायता थी वह गोली घड़ियाल की आँख को चीरती हुई भीतर चली गई, और वह भयानक जन्तु अपने रक्त में नहा कर गरजने लगा।

सर विल्फ्रेड—(चिल्लाकर) कप्तान जोली! मत घबड़ाना! हम पहुँच गये।

इतने में हेक्टर ने चिल्लाकर कहा "सर विल्फ्रेड देखिये घड़ियाल में अभी प्राण है शीघ्र दूसरी गोली मारिये"।

सर विल्फ्रेड ने अब जो कुछ देखा उससे वे निराश हो गये अर्थात् वह घड़ियाल यद्यपि मृत्यु के निकट था तथापि उस अभागे को अपने भयानक पञ्जों में पकड़ाही चाहता था और यह लोग उससे केवल दस फीट के अन्तर पर उस समय थे।

सर विल्फ्रेड अब कुछ नहीं कर सक्ते थे जब तक वह अपनी बन्दूक भरें २ तबसे तो वह घड़ियाल कप्तान साहब को अपने चंगुल में ले लेगा। सबको उनकी मृत्यु का विश्वास हो गया और सब तस्वीर की तरह खड़े थे कि इतने में चेको ने जो सर विल्फ्रेड के पैर के पास बैठा था उठकर और एक मिठाई के छोटे सन्दूक को जो उन्हें बड़ाही प्रिय था और जिसे उक्त कप्तान साहब ने नाव के एक कोने में बड़ेही

हिफाजत से रख छोड़ा था अपने दाहिने हाथ में लेकर एक चीख के साथही साथ उस घड़ियाल के मुहं की तरफ फेंका।

भाग्यवश जैसा सोचा था वैसाही हुआ वह सन्दूक घड़ियाल के खुले हुये मुंह में जा पड़ा और अब वह कप्तान साहब को अपने मुंह में नहीं दबा सक्ता था।

मृत्यु के निकट पहुँचा हुआ जन्तु अब पहिले से भी कुछ विशेष क्रोधित हुआ और उसने अपने लम्बे शरीर से जल में हलचल डाल दिया। उन लहरों ने कप्तान साहब को अलग फेंक दिया और सर विल्फ्रेड ने तुरन्त उनके निकट पहुच कर उन्हें डोंगे में खींच लिया।

अभी वह भली भाँति डोंगे में चढ़े भी न होंगे कि सहसा रक्त की गन्ध पाकर बहुत से घड़ियाल और मगर पानी पर जा पहुँचे और अपने घायल साथी को खा गये।

उन लोगों को अपने मित्र की जान बचाने पर कितनी प्रसन्नता हुई होगी? उस्को आप स्वयंही अनुमान कर देखिये।

परन्तु अब सर विल्फ्रेड की आँख खुली और वे समझ गये कि हमने कितना बड़ा धोखा खाया। जिस समय यह लोग अपने मित्र की प्राणरक्षा कर रहे थे उस समय वैरीलोग उनके निकट होते जाते थे। अब वह लोग इनसे तीस फीट के फासले पर थे और पाँच बन्दूकें तथा बहुत से बर्छे इनकी ओर सीधे थे।

सर विल्फ्रेड की बन्दूक कुछ दूर पर रक्खी थी यदि इसे लेने के लिये वे उठें तो अपने प्राण से हाथ धोयें उधर वह अरब इन्हें ताके हुये धीरे २ इनकी ओर बढ़ रहे थे।

इस समय सर विल्फ्रेड की विचित्र अवस्था थी, वे निराश हो गये। अरबों की यह इच्छा थी कि इन्हें जीवित धर लें और फिर बड़ेही कष्ट से बध करें। इन लोगों को सिवाय अपने को उनके हाथ में दे देने के और तदबीरही क्या थी, वह सोच रहे थे कि आह ! यदि एक बाढ़ भी इस समय हम मार सक्के तो कितना अच्छा था।

इतने में एक ईश्वरी सहायता इन लोगों को पहुँची अर्थात् वह बुदमा जो सर विल्फ्रेड की बन्दुक से घायल हुआ था और नाव में पड़ा चिल्ला रहा था, उछल कर पानी में गिर पड़ा और जब लों उसके साथी उसे रोकें २ तब से तो वह पानी पीकर कई गोते खा गया।

उसके जल में गिरने और घड़ियालों के उसकी ओर झपटने से पानी में हलचल पड़ गई और अब उनमें से कोई हिचकिचाता भी न था। उन के एक साथी का रक्त उनके मुँह लग चुका था इस लिये वे बेधड़क उस बुदमा पर आ टूटे उसे तो टुकड़े २ कर खा गये और आपस में झगड़ने लगे।

इसी समय एक ऐसी विचित्र घटना सङ्घटित हुई कि जिसे देखकर सबके रोंये खड़े हो गये और सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि किसी को घटना का मुख्य कारण न जान पड़ा। जब वे घड़ियाल लड़ रहे थे और जल में एक हुल्लड़ मचा था तो उसी समय एक डोंगा अपने बैठनेवालों सहित पानी पर उलट गया और पलक झपकते सब गोता खाते दिखलाई पड़े।
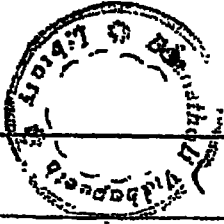
इस्के उपरान्त जो कुछ हुआ इस्का वर्णन नहीं किया जा सक्ता डूबते हुओं की चिल्लाहट, घड़ियालों की उछल कूद और उनकी आपस की लड़ाई, बेवसों का प्राण बचाने के निमित्त हाथ पैर मारना और खून से मिले हुये पानी की लहरें कुछ ऐसी चीजें थीं कि जिसे देखकर सबकी आखें झपक गईं।

डूबते हुओं में से ५ मनुष्यों ने किसी तरह अपने को उस उलटे हुये डोंगे तक पहुँचाया और उसके साथ अपने २ पैर पानी से उठा कर लपट गये और ज़ोर से चिल्लाने लगे।

सर विल्फ्रेड को उनकी इस अवस्था पर बड़ाही दुःख हुआ और वे चाहते थे कि अपनी डोंगी उनकी तरफ फेरें लेकिन फिर उनके साथियों, को उनके निकट पहुँचते देखकर इन्होंने अपने साथियों से कहा "भागो! बस यही समय है वे लोग अपने मित्रों की प्राणरक्षा कर लेंगे और ईश्वर ने चाहा तो वायु की चाल हमारे इच्छानुसार होगी और इसतरह हम पाल भी लगा सकेंगे"।

इस आशा से भरी हुई वाणी ने सबकी हिम्मतें बढ़ा दीं। बेचारे कप्तान तो कुछ करही न सक्ते थे, वे नाव में पड़े हुये चेको को उस मिठाई के सन्दूक के फेंकने पर बहुतही खफा हो रहे थे हाँ उनके साथी नाव को बिजली की तरह ले जा रहे थे। इतने में सर विल्फ्रेड ने पीछे देखकर कहा कि उन जङ्गलियों ने अपने साथियों को उठालिया और वह देखो फिर

आ रहे हैं परन्तु हिम्मत न हारना मुझे पूरी अशा है कि हम बच जाँयगे"।

कुछही देर में भागनेवालों को दो टापू दाहिने ओर बाँयें दिखलाई दिये। उन टापुओं के बीच में केवल एक मील का अन्तर था और यह एक निश्चय बात थी कि यह लोग उसके मध्य से होकर जाँयगे। यहाँ पर सर विल्फ्रेड को एक दूसरा भय जान पड़ा उनका ध्यान यह था कि यदि कहीं ये टापू भी इन्हीं जाति से बसे हुये हों और वह हमारा आना देख रहे हों तो कहीं वे बढ़कर हमारी राह न रोक दें और तब फिर हम बे-तौर फँसें! क्योंकि इनका पीछा करनेवाले इनसे केवल आध मील की दूरी पर थे और बड़ीही शीघ्रता से इनकी ओर बढ़े आते थे।

सर विल्फ्रेड ने फिर अपनी बन्दूकों को भली प्रकार देखा और उन्हों ने यह निश्चय कर लिया कि यदि वे लोग निकट पहुँच गये तो हम इस अग्नि-शस्त्र द्वारा उनसे अवश्य छुटकारा करा लेंगे।

जब इनकी डोंगी दोनों टापुओं के बीच में पहुँची तो जान पड़ा कि दोनों टापू बड़ेही लम्बे थे और उनके बीच जैसा ऊपर कहा गया केवल एक मील का अन्तर था।

सर विल्फ्रेड ने अपनी डोंगी को बीचों बीच रक्खा और इसी प्रकार बराबर आध मील पर्यन्त चले गये। बार २ के पीछे देखने से यह भी मालूम हुआ कि पीछेवाली डोंगियां

बहुत निकट पहुँच गई हैं और साथही आगे जो दृष्टि उठाई तो उधर क्या देखते हैं कि उस टापू के दूसरे सिरे से कुछ काली काली वस्तु इधर आ रही हैं जो यथार्थ में कुछ डोंगे थे।

सत्तरहवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड ने यह देखकर कहा कि अब भी एक राह बचने की है। ये आगे आनेवाले डोंगे बीच धार से चले आते हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमसे उनसे अवश्य एक टक्कर होगी वह लोग हमसे अभी कुछ अन्तर पर हैं वायु अब प्रबल होती जाती है मैं पाल लगाता हूं और कुछही देर के उपरान्त वायु इतनी प्रचण्ड हो जायगी कि जब तक वे बीच धारा में पहुँचें २ हमलोग अलग हटकर साफ निकल जाँयगे।

सर विल्फ्रेड की बातें यद्यपि हमारे पाठक पाठिका गण को आशा दिलानेवाली न मालूम हों परन्तु उनके साथियों को उनकी भविष्यवाणी पर पूरा विश्वास था। उस थोड़े काल में कि जिस्में उन लोगों का सर विल्फ्रेड से साथ रहा उनलोगों ने उनपर कष्ट तथा दुःख के समय भरोसा रखने का एक अच्छा पाठ सीख लिया था इसलिये उन ऊपर लिखी बातों के सुन्तेही वे शीघ्रता से डाँड़े मारने लगे। पाठकगण पर यह भी विदित रहे कि अभी लों कल के दोपहर से इनलोगों के मुंह में एक खील भी उड़कर नहीं गई थी और भूख से इनका बुरा हाल था। बुदमा बड़ीही शीघ्रता से इनके पीछे चले आते थे और

वह डोंगियाँ जो आगे दिखलाई पड़ीं और जो गिनती में चारही थीं बराबर बीच धारे की ओर बढ़ती चली आती थीं।

इतने में हेक्टर ने कहा वायु की चाल अब बढ़ती जाती है और वास्तव में ऐसाही था। सर विल्फ्रेड ने इसपर ध्यान नहीं दिया था और अब हेक्टर की बात सुन्तेही तुरन्त उन्होंने चेको की सहायता से पाल चढ़ाई। इस समय पीछेवाले डोंगे केवल सौ गज के अन्तर पर थे; और जब उनलोगों ने इन्हें पाल चढ़ाते देखा तो और भी शीघ्रता से खेने लगे।

पहले तो ऐसा जान पड़ा कि पाल से कोई सहायता नहीं मिलती वरन् वह और भी उनकी शीघ्रता को रोक रही है परन्तु कुछही देर के उपरान्त वायु के झोंके आने लगे और नाव के दोनों ओर बड़ीही शीघ्रता से पानी कटता, पीछे की ओर जाता दिखलाई पड़ा।

हेक्टर—आहा! हमलोग कितनी शीघ्रता से आगे बढ़ रहे हैं ज़रा नाव के बाहर तो देखो। हमें तो अब खेने में कुछ परिश्रमही नहीं मालूम होता।

यह सुनकर सबनें जो पानी की ओर दृष्टि की तो देखा कि वह बड़ी तेज़ी से पीछे को दौड़ रहा है और नाव सनसनाती हुई आगे बढ़ रही है।

जब बुदमाओं ने अपने शिकार को अपने भयानक चंगुल से यों उड़ जाते देखा तो वे बड़े ज़ोर से चिल्ला उठे और अपनी पूरी ताकत नाव के आगे बढ़ानें में खर्च करने लगे परन्तु

इससे क्या लाभ! उनमें पाल लगाने का दस्तूरही न था, न जाने कैसे शाह काशांगो ने इस पाल को अपने डोंगे में रख छोड़ा था।

अब वे बुदमा इतना पीछे होने लगे कि देखते २ उनमें एक मील का अन्तर हो गया। भागनेवाले अपने पीछे के दुश्मनों से तो निश्चिन्त हुये पर अब उन्हें अपने आगे के वैरियों का ध्यान सताने लगा, और जिनसे वास्तव में बचना कठिनही था। डोंगों से अब केवल पाव मील का अन्तर रह गया था, और यह निश्चय हो गया कि उनसे अवश्य टक्कर लगेगी।

सर विल्फ्रेड ने पहले तो युद्ध करने की इच्छा की परन्तु उस गुप्तही रक्खा और यहाँ लों कि आनेवाले डोंगे बिलकुल निकट पहुँच गये और यह भली भाँति मालूम हो गया कि आनेवाले भी बुदमा थे उनकी इच्छा इनकी डोंगी को चारों ओर से घेर लेने की थी।

यदि यह भागनेवाले लड़ाई पर कटिबद्ध होते तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि विजयपताका इन्हीं के हाथों में लहराती परन्तु सर विल्फ्रेड में व्यर्थ मारकाट की आदत न थी और जहाँ लों बन पड़ता वह लड़ाई से परहेज़ करते थे।

इन्होंने शीघ्रही अपनी राय ठीक कर ली; और नाव में एक ओर बन्दूक गलीहर लेट गये और अपने साथियों को भी ऐसाही करने की प्रारम्भ दे दी। सबने अपने डाँड़े रख दिये और नाव में लेट ।

इनकी नाव पानी कटाती अपनी उसी ऊपर लिखी चाल पर जा रही थी यहाँ लों कि वह उन चारों डोंगों के बीचों बीच, जो दोनों ओर बीस २ गज़ के अन्तर पर थे पहुँच गई। इन वहशियों ने अपने नाव की चाल भी तेज़ की परन्तु जब देखा कि यह निरर्थक होगा तो तीर कमान और बर्छे लेकर खड़े हो गये।

एक बौछार; तीर, बर्छे, और पत्थरों की नाव की ओर आई! जिस्में चेको के हाथ में तो एक पत्थर लगा और एक तीर नाव के एक ओर की दीवार को भेदता हुआ हेक्टर की आस्तीन में लगकर उस्के सहित दूसरे ओर के नाव की दीवार में गड़ गया इस्के अतिरिक्त और कोई हानि डोंगी या उसमें बैठनेवालों की नहीं हुई।

ये लोग आगे निकल आये और बुदमाओं के आगे पीछेवाले डोंगे एक हो गये और वह सब मिलकर इनकी ओर बढ़े, परन्तु क्या लाभ था।

सर विल्फ़्रेड ने कहा ये लोग बड़ेही पाजी हैं शायद हमारा पीछा ये झील के किनारे तक न छोड़ेंगे। परन्तु हम इनसे आगेही हैं और अब कोई भय का स्थान नहीं।

जैसा कि अर्ल (राजा) या सर विल्फ़्रेड ने कहा था वे जङ्गली बड़ी दूर तक इनका पीछा करते रहे। परन्तु वह इनसे पीछेही होते जाते थे यहाँ तक कि वे [illegible] की दृष्टि के बाहर हो गये। अब कोई भय नहीं था जहाँ [illegible] दृष्टि जाती थी कहीं

किसी टापू का चिन्ह नहीं दिखलाई पड़ता था। इतनी देर में चेको ने यह मालूम किया कि वह गुलाम उससे बात चीत कर सक्ता है। और जब यह सर विल्फ्रेड को मालूम हुआ तो वह चेको के द्वारा से उस गुलाम से प्रश्न करने लगे, और दोनों की बात चीत से जो बात मालूम हुई वह यह थी कि उस गुलाम का नाम टाँकोलो था जिस्को घटा कर सर विल्फ्रेड टौंक के नाम से पुकारने लगे। इस्का मकान कहीं शेरी के पश्चिमी किनारे पर था। वह दस वर्ष पर्यन्त गुलामी की अवस्था में रहा और जिस स्थान में वह रहता था वहीं चेको भी कुछ दिन अपने गुलामी के जीवन को काट चुका था और यही मुख्य कारण था कि दोनों एकही भाषा के ज्ञाता थे। काशागों ने टौंकही को सर विल्फ्रेड के साथ इसलिये करदिया था कि वह उधरही से अपने घर भी पहुँच जाये। क्योंकि जिधर और जिसजगह सर विल्फ्रेड जानेवाले थे उसी ओर उस्का मकान भी था। टौंक ने कहा कि वह उन्हें नदी शेरी के मुहाने तक ले जायगा और यह भी कहा कि जिस नाव पर वे सवार हैं वह काशाङ्गोही की है।

खेने की अब कोई आवश्यक्ता न थी इसलिये नाव पाल पर छोड़ दी गई ; ठीक चार बजे थे जब उन्हें शेड झील के दूसरे किनारे की काली २ झलक दिखाई पड़ने लगी। अब फिर उन्होंने खेना प्रारम्भ किया और शीघ्रता से उसी ओर चले।

टौंक इन लोगों को वहाँ के सब हालात बतलाता जाता था उसने यह भी कहा कि अब नदी शेरी का मुहाना कुछ दूर नहीं है परन्तु उस दरिया के दोनों ओर और विशेष कर उस्के मुहाने पर भी सरकण्डे का बड़ा भारी वन है जिस्में से होकर निकल जाना तनिक काम रखता है वहाँ केनिउ (डोंगे) को ढकेलते हुये ले जाना होगा।

एक घण्टे के उपरान्त उन्हें वह सरकण्डे का वन दिखलाई देने लगा। पाल अब उतार ली गई थी और उसी को बिछाकर कप्तान साहब और चेको खर्राटे ले रहे थे। सर विल्फ्रेड और उनके साथी बराबर डाँड़े चला रहे थे। धीरे २ जैसे २ नाव आगे बढ़ने लगी वैसेही वैसे अब झील की चौड़ाई कम हो चली, जिस्से यह मालूम होता था कि नदी शेरी का मुहाना अब पहुँच गया।

सर विल्फ्रेड ने एक दृष्टि उस झील की ओर डाली कि जो साफ और नीले आस्मान के प्रतिबिम्ब (साया) से एक अच्छे हाथों की रङ्गी तस्वीर जान पड़ती थी, उस्का वह चमकता हुआ साफ पानी वायु के चलने से कहीं २ चमकते सूर्य की किरनों में झिलमिला रहा था। परन्तु खेद का विषय है कि ईश्वर के ऐसे अच्छे शृङ्गार में वे भयानक टापू भी छिपे हुये हैं जिनकी वासस्थली पर भयानक से भयानक जाति अपना घर बनाये अपना जीवन निर्वाह करने के साथही दूसरों के जीवन का भी अन्त करते हैं। सर विल्फ्रेड ने टोपी

उतारकर शेड झील से विदा माँगी और नाव खेते एक ऐसे स्थान में ले गये जिस जगह जल के ऊपर सरपत की छत सी बन रही थी। यह छत जल से आठ दस फीट ऊंची होगी परन्तु उसपर भी रास्ते को उसने बहुतही रूँध रक्खा था।

बस यही स्थान इनकी रक्षा का था। रात की भयानक अँधियारी में बुदमा इस में इन्हें नहीं पा सक्ते थे। इतने में एक बड़ी चिड़िया को टौंक ने अपने डांड़े से मार गिराया परन्तु वहां कोई ऐसा स्थान न था कि जिस जगह आग जलाई जा सके इसलिये उन मरभुक्खों ने उसे कच्चाही खा कर पेट की जलती अग्नि की कुछ शान्ति की।

इस्के उपरान्त उन्होंने फिर खेना प्रारम्भ किया और जिस राह का वह आगे देखते थे वह धीरे २ पीछे हटकर दृष्टि से लोप होता जाता था इतने में किसी भारी झाड़झाड़ में उनकी नाव जकड़ गई और जितना उद्योग उस्के निकालने का उनलोगों ने किया सभी निरर्थक हुआ।

सर विल्फ्रेड—यह तो बहुतही बुरी हुई! ऐसा जान पड़ता है कि अब रात यहीं काटनी पडेगी यदि कुछ प्रकाश होता और हम आग बना सक्ते—तो—हाय!—

इनकी बात अभी समाप्त भी न हुई थी कि बड़ा कोलाहल उनसे कुछही अन्तर पर सुन पड़ा, गौर से सुनने पर ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई उस बन को रौंद रहा है।

अठ्ठारहवाँ बयान ।

यह हुल्लड़ कुछ ऐसा अचांचक हुआ कि नाव का प्रत्येक मनुष्य सन्नाटे में आ गया और जबसे सर विल्फ्रेड झपट कर अपनी बन्दूक उठायें २ तबसे एक बड़ा भारी जानवर उसी आवाज़ की सूध से आया और मनों पानी उछालता हुआ दूसरी ओर निकल गया और सरपत के रौंदे जाने की चरचराहट बड़ी देर तक सुनाई पड़ी।

सर विल्फ्रेड— ऐसा जान पड़ता है कि हमलोगों के आने से ये जन्तु भाग रहे हैं या और कुछ कारण हो परन्तु हमलोग बचे बहुत ! मेरी इच्छा है कि इस वन से निकल चलूं।

यह कहकर वह टोंक से इस्बारे में राय लेने लगे परन्तु उसने कहा कि रात को सिवाय इधर उधर ठोकर खाने के सीधी राह या खुली जगह का मिलना असम्भव है, इस लिये यही उत्तम है कि हमलोग इसी सरकण्डे की छत के नीचे रात काटें। सबसे विशेष भय घड़ियालों का था परन्तु टौंक ने यह कहकर इधर से भी निश्चिन्त करा दिया कि घड़ियाल डोंगी पर नहीं आयेंगे और इस्के अतिरिक्त सबने पारी २ बन्दूक ले कर पहरा देने का भी बन्दोबस्त कर लिया।

अब सर विल्फ्रेड को भी कुछ थकावट सी मालूम होने लगी; और ये टौंक को प्रत्येक वस्तु से सचेत कर स्वयं एक कोने में थकावट मिटाने के निमित्त लेट गये परन्तु टौंक

से यह भी सहेज दिया था कि ज़रा से खटके में भी तुम हमें तुरन्त जगा देता।

सब लोग टैंक के अतिरिक्त जो एक मूरत की तरह चुपचाप बैठा था सोने लगे, उनलोगों ने वह चराई जो नाव में बिछी थीं ओढ़ ली। थके हुये मुसाफिर अभी कुछही देर सुख से लेटे या सोये होंगे कि किसी ने जोर से सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ कर हिला दिया और वह मुस्तैद व्यक्ति तुरन्त आँखे मलता उठ बैठा देखा कि टैंक खड़ा है। जगाने का कारण पूछने पर उसने चुपचाप पश्चिम की ओर ऊँगली उठाई तो अर्ल ने क्या देखा कि पश्चिम दिशा में बहुत दूर आ-काश लाल हो रहा है और एक विचित्र प्रकार की दुर्गन्धि से वायु भरी हुई थी।

सर विल्फ्रेड ने इस लालिमा को देखकर अनुमान किया कि कदाचित् सूर्य देव निकल रहे हैं परन्तु जैसेही उनकी दृष्टि उस धुंयें पर पड़ी जो आकाश को इनकी दृष्टि से छिपाये हुये था तो वह असल बात को समझ कर काँप गये। सहस्रों पक्षी अपने २ खोतों या बसेरा लेने के स्थान से उड़ २ कर इधर उधर फटफटाते हुये चिल्ला रहे थे और इस वन के चारों ओर से विचित्र प्रकार की चिंघाड़ें सुन पड़ती थीं।

सर विल्फ्रेड यह सब देख और बात को अच्छी तरह समझकर ज़ोर से चिल्लाये "परमेश्वर हमें बचाइयो। कैसी भयानक मृत्यु हमारे आगे है। वे बदमाश अरब और पाजी

बुदमा यहां तक हमारे पीछे आये और अन्त हमें न पाकर इस जङ्गल में आग लगा दी। ईश्वर! ये लपटें कैसी डेरावने तौर से निकल रही हैं।

इनके कोलाहल मचाने से इनके साथी भी सब चौंक पड़े। और जब उनको उस आफत की जिसमें वे फँसे हुये थे खबर हुई तो वे बड़ेही निराश होकर एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

अग्निशिखा के भड़कने की आवाज उन्हें स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती थी और उसके प्रकाश से कुल वन जगमगा रहा था।

सर विल्फ्रेड—कोई स्थान वा कोई बचने की तदबीर अवश्य करनी चाहिये यहां रहना तो अपने आप मृत्यु के मुंह में डालना है। जल्द डांड़े मारो।

यह कहकर उन्होंने अपनी डोंगी को जो फँसी हुई थी अच्छी तरह ऊपर नीचे देखा और बिना किसी की सहायता के तुरन्त निकाल कर बाहर कर दिया। अब इनके साथी नाव को खेकर एक खाड़ी में ले गये जो इस अग्निशिखा से दिखलाई पड़ती थी। कुछ देर तक तो इनकी डोंगी इस शीघ्रता से चली कि सर विल्फ्रेड को एक प्रकार की आशा हो गई कि हमलोग अवश्य बच निकलेंगे, परन्तु हा दैव! आगे बढ़कर तो वह खाड़ी इतनी सकरी होगई कि लाचार इन्हें डांड़े बन्द कर देने पड़े और स्वयं सिमट कर एक ओर हो गये।

अब चिनगारियां भी इनके इधर उधर गिरने लगीं और धूंये की एक मोटी चादर ने इन्हें अपने घेरे में ले लिया। मगर तथा घड़ियाल इनके आस पास जल में बड़ीही बेचैनी से इधर उधर दौड़ते फिरते थे। गैंड़े तथा सांपों के झुण्ड सनसनाते हुये जिधर मुँह उठता भागे जाते थे। वायु इतनी गर्म हो गई थी कि मुंह झुलसा जाता था। इन आफतों से अब इन की हिम्मत छूट गई और अब उन लोगों का ठहरना कठिन हो गया।

अभाग्यवस ये लोग राह भूलकर खाड़ी से एक सकरे नाले में चले गये। अब कोई जीव जन्तु भी नहीं दिखलाई पड़ता था, अब कोई इनका साथी या इनके पास भी न था इसपर सब से भारी आफत यह हुई कि नाव फिर एक झङ्खाड़ में फँस गई और वहां से लाख २ सिर मारने पर भी न टसकी न टसकी।

इनके चारों ओर के सरपत सूखकर खङ्खड़ हो रहे थे और केवल एक चिनगारी उन्हें धधका कर इन लोगों की जान लेने के लिये बहुत थी। चेको अपने चीखने चिल्लाने से आकाश सिर पर उठाये हुये था। बेचारे के नङ्गे बदन पर जो चिनगारियां पड़ती थीं उनसे जल २ कर वह नाव में लोट रहा था, कि सहसा इनसे केवल दो फीट के अन्तर पर पीछे एक सरपत के जुट्टे में आग लग गई और वह बड़ी शीघ्रता से धांय धांय जलती हुई आगे को फैलने लगी। अब सर विल्फ्रेड कुछ

बोले. परन्तु उनके साथियों को अग्नि के हुंकार के कारण कुछ न सुन पड़ा केवल उनके होंठ हिलते दिखलाई दिये।

इतने में टैंक नाव से उछल कर पानी में जा रहा इस्पर उस्के साथियों ने अनुमान किया कि वह आग में जलने से पानी में कूदकर प्राण त्यागने में विशेष सुबीता समझता था परन्तु नहीं टौंक की कुछ औरही इच्छा थी. इस्के ध्यान में वह बात आई जो किसी को न सूझी थी।

टौंक जल में उतर कर खड़ा हो गया जो इस्के छाती तक था। इसने अपनी दृढ़ भुजाओं से पेंदे को पकड़ के नाव बाहर निकाल लिया और बड़ेही आश्चर्ययुक्त और असामान्य बल से उसे खींचता हुआ आगे ले चला। पृथ्वी इस्के पैरों से निकली जाती थी, वह साहसी मनुष्य नाव को तीस फीट तक खींचता हुआ ले गया। इस्के दोनों ओर आग भड़क रही थी परन्तु इसने इस्की कुछ परवाह न की और वह आग तथा पानी दोनोंही को चीरता हुआ आगे बढ़ा जाता था।

अब वे लोग एक २० फीट की चौड़ी झील में पहुंच गये थे जिस्के बीचों बीच कुछ फीट लम्बा एक बालू का टापू था। सर विल्फ्रेड और उनके साथी इसे देखतेही आनंन्द की किलकारियाँ मारने लगे।

ईश्वर की कृपा से यहां मैदान खुला था इस लिये सबके सब डाँड़ा चलाने लगे और जब टापू के निकट पहुँचे तो क्या देखते हैं कि इस्पर बहुत से घड़ियाल साँप तथा गेंड़े घूम रहे

हैं। लेकिन इन्हें देखतेही सब एक २ करके भागे और इधर नाव इस शीघ्रता से आ रही थी कि टापू के निकट पहुँचकर इसपर कई फिट ऊपर चढ़ गई।

नाव के ठहरतेही सर विलफ्रेड टापू पर उतरे और कहने लगे "उस करुणामय जगदीश्वर का असंख्य धन्यवाद है कि हमलोगों को मृत्यु के मुंह से निकालकर एक रक्षा के स्थान में पहुंचा दिया। इसके उपरान्त सब डोंगी से बाहर आये और अपने प्राण के बचने का धन्यवाद करने लगे।

टौंक ने यथार्थ में बड़ीही वीरता का काम किया था परन्तु अब यह समय प्रशंसा करने का न था सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों की सहायता से डोंगी खींचकर टापू पर कर ली और फिर सबको एकत्रित करके ऊपर औंधी कर दी। इसके उपरान्त इन्होंने चटाई को भिगोकर नाव की पेंदी पर लगा दिया और आप भी उलटी हुई डोंगी के भीतर चले गये और अपने साथियों से कहा कि अपने २ सिर बालू में कर लो।

उस औंधी डोंगी के भीतर वे ऊपर मुंह किये पड़े थे और बाहर की भड़कती हुई आग का कोलाहल सुन रहे थे। यह कोलाहल प्रत्येक क्षण बढ़ताही जाता था यहाँ तक कि वह अब इनके चारों ओर मालूम होने लगा। इस समय इनकी यह डोंगी तवे के समान तप रही थी और वायु तो इतनी गर्म थी कि ईश्वर की शरण।

नेको मारे गरमी के तिलमिला उठा और इतनी उछल कूद मचाई कि यदि सर विल्फ्रेड उसे थाँम न लेते तो डोंगी उलट देता। इस समय का प्रत्येक क्षण जो उन छिपे हुओं पर बीतता था वह उनके हिसाब एक २ युग से कम नहीं था। हमारी कलम में इतनी ताकत नहीं है जो उनके दुःख का किसी प्रकार उल्लेख कर सके। यह उनके चित्तही से पूछा जाय तो ठीक था जो अपने जीवन में कई बार भयानक से भयानक स्वरूप में मृत्यु का सामना कर चुके थे।

अन्त यह बला टली! आँच कम जान पड़ने लगी हुल्लड़ भी कम मालूम होने लगा। इसपर सर विल्फ्रेड ने कहा कि यद्यपि आफत टल गई है परन्तु अभी जिस स्थान पर सब लोग हो वहीं रहो"।

"अब आफत टल गई है!" आहः! इन दो चार शब्दों में कितना अमृत कूट कूट कर भर दिया गया था! और इस अमृत से नहाये हुये शब्दों ने कितना असर जाकर उन टूटे हुये हृदयों पर किया जो अभी २ अपने मृत्यु के लिये प्रस्तुत थे, यह बयान से बाहर है!!!

ये लोग बहुत देर तक इसलिये अपनी जगह से नहीं हिले कि कहीं दूसरी आफत में न फँस जाँय। इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड सबसे पहिले बाहर निकले। इधर उधर देखकर, और एक २ करके उन्होंने अपने साथियों को बाहर निकाला।

उन्नीसवाँ बयान। ,समझ लिया

का दूसरा भाग

वायु तो अब भी गरम थी और खा

बहुतही असह्य थी परन्तु लपटें उनसे कुछ ऐसी २ बातें कहीं
औ वे लपटें उस लालिमा के सा की भूख प्यास बन्द हो गई।
लने का समाचार दे रही उन वृक्षों के छाये में, जो नदी के
उस वन को भूमि जो, ले जा रहे थे। कोई जीव जन्तु अ-
कड़ी हो गई थी, इन्हें रास्ते में न दिखलाई दिया। और न
से काला हो रह नहीं जानता था कि इन वृक्षों के पीछे क्या है।

यह देख दो घण्टे पहिले सर विल्फ्रेड ने ठहरने की
डोंगे का पेंद वह बहुत देर से कोई सुरक्षित स्थान निशा व्य-
कर डाला के लिये देख रहे थे और अब उन्हें एक छोटा
प्रकाश अच. धारा में था दिखलाई दिया, जिसपर दो बड़े २
वन को ह कुछ पत्थर की चट्टानें पड़ी हुई थीं। हमारे दोस्तों न
अग्नि ने रु लिये इसी स्थान पर अपना डेरा जमा दिया।
भस्म कर स्थान एक छोटे सुरंग के भाँति था। यदि जल से
ओर शे क्रमण किया जाय तो यह भली भाँति उस आक्रमण
कि बहुत के थे।

कुल झाड़ी उतरने के पहिले सर विल्फ्रेड ने अपनी डोंगी
हमारे किनारे पर लगाई और अपने साथियों के निमित्त
आगे बढ़ाई ने के लिये वन में पैठे। अभी वह कुछही दूर गये
कहीं २ से धुँव.जल की मुरगियों का एक झुण्ड दिखलाई

चेका गाढ़ी थीं। अब हमारे पथिकों को राह मिलने में कोई कूद मचाई कि यां वे ईश्वर का धन्यवाद अपने प्राण के बच उलट देता। इस समय ़़र डाँड़े चला रहे थे। पर बीतता था वह उनके हि था। हमारी कलम में इतनी ताकत सा है? जिन लोगों को वे बुद्मा का किसी प्रकार उल्लेख कर सके। यह राख कर चुके थे वे उसी जाय तो ठीक था जो अपने जीवन में क नाव पर बैठे बराबर भयानक स्वरूप में मृत्यु का सामना कर चुके

अन्त यह बला टली! आँच कम जान पड़ने स्थल दोनोंही के भी कम मालूम होने लगा। इसपर सर विल्फ्रेड ने मनोहर पथ यद्यपि आफत टल गई है परन्तु अभी जिस स्थान परभ जानेवाले हो वहीं रहो"। अपनीही प्र-

"अब आफत टल गई है!" आह! इन दो च था जल में कितना अमृत कूट कूट कर भर दिया गया था! दृश्य था। अमृत से नहाये हुये शब्दों ने कितना असर जाकर दो मील हुये हृदयों पर किया जो अभी २ अपने मृत्यु के लिये थे, यह बयान से बाहर है!!! उस नदी

ये लोग बहुत देर तक इसलिये अपनी जगह ेत था जा हिले कि कहीं दूसरी आफत में न फँस जाँय। इसके मील पीछे सर विल्फ्रेड सबसे पहिले बाहर निकले। इधर उधर वन दिख- और एक २ करके उन्होंने अपने साथियों को बाहर ध्यान भी

सर विल्फ्रेड—उनलोगों ने हमें अवश्य मुरदा समझ लिया है और अब हमलोगों को अपने भ्रमण का दूसरा भाग प्रारम्भ करना है।

इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने कुछ ऐसी २ बातें कहीं जिन्हें सुनकर उनके साथियों की भूख प्यास बन्द हो गई। वे लोग अपनी डोंगी को उन वृक्षों के छाये में, जो नदी के दोनों ओर उगे हुये थे, ले जा रहे थे। कोई जीव जन्तु अथवा कोई मनुष्य इन्हें रास्ते में न दिखलाई दिया। और न इनमें का कोई यही जानता था कि इन वृक्षों के पीछे क्या है।

सन्ध्या से दो घण्टे पहिले सर विल्फ्रेड ने ठहरने की आज्ञा दी। वह बहुत देर से कोई सुरक्षित स्थान निशा व्यतीत करने के लिये देख रहे थे और अब उन्हें एक छोटा टापू जो बीच धारा में था दिखलाई दिया, जिसपर दो बड़े २ वृक्ष और कुछ पत्थर की चट्टानें पड़ी हुई थीं। हमारे दोस्तों ने रात भर के लिये इसी स्थान पर अपना डेरा जमा दिया।

यह स्थान एक छोटे सुरंग के भाँति था। यदि जल से इसपर आक्रमण किया जाय तो यह भली भाँति उस आक्रमण से बच सक्ते थे।

टापू में उतरने के पहिले सर विल्फ्रेड ने अपनी डोंगी नदी के बाँयें किनारे पर लगाई और अपने साथियों के निमित्त कुछ भोजन लेने के लिये वन में पैठे। अभी वह कुछ ही दूर गये होंगे कि उन्हें जल की मुरगियों का एक झुण्ड दिखलाई

दियां। इससे अच्छा और क्या मिलता उन्होंने तुरन्त उसमें से तीन या चार मार लीं और उन्हें लेकर फिर अपने साथियों सहित टापू पर आये।

टापू पर पहुँचकर यह मालूम हुआ कि यहाँ लकड़ी जलाने के लायक बहुत है। पहले तो सर विल्फ्रेड आग जलाने से हिचकिचाते थे कि कहीं इर्द गिर्द के जङ्गलियों को समाचार न मिल जाय पर अन्तमें लाचार होकर आग जलानीही पड़ी। वह मुरगियाँ जिन्हें चेको ने अच्छी तरह साफ कर दिया था आग पर भूनी गईं और सब ने मिलकर खाईं।

भोजन के तैयार होतेही सर विल्फ्रेड ने तुरन्त आग बुझा दी और कहने लगे कि मैं निश्चय नहा कर सक्ता कि कब और कैसी आपत्ति हम लोगों पर आ जावे। केवल अग्नि का प्रकाश और धुँवा हम लोगों का समाचार जङ्गलियों पर्यन्त पहुँचा सक्ता है अब हम रात को तो आगे का मञ्जिल देखा करेंगे और दिन को विश्राम करेंगे।

इसके उपरान्त सब एक जगह होकर और आनन्द से पैर फैलाकर चटाई ओढ़ के सो रहे हाँ सर विल्फ्रेड अपनी बन्दूक लेकर और एक ऊँची चट्टान पर बैठकर पहरा देने लगे। एक घण्टा उनका निर्विघ्नता पूर्वक समाप्त हुआ हाँ बीच २ में जङ्गली जन्तुओं की भयानक चिघाड़ इनके कानों तक पहुँच जाती जिसे सुनकर इन्होंने अनुमान कर लिया कि इर्द गिर्द कोई जङ्गली जाति नहीं बसता है।

अब धीरे २ एक ओर से चाँद निकला। जिस्के निकलतेही नदी का जल चाँदी के पानी की तरह चमकने लगा चारों ओर वन में एक सुफेदी बरसने लगी सच तो यों है कि ठण्ढी २ वायु के साथ चन्द्रदेव की शीतल किरनें एक ऐसे स्थान में बड़ी ही भली जान पड़ती थीं।

सर विलफ्रेड ने यह सब देखकर अनुमान किया कि अब यहाँ बैठकर रखवाली करना व्यर्थ है। यदि यहाँ वे जङ्गली होते तो कभी का हम पर आक्रमण कर दिये होते, अब चल के सोना चाहिये। यह विचार कर वह अपने स्थान से उठे, और अपने साथियों के निकट जो पाल और चटाई ओढ़े हुये सोये थे लेट गये, और अपनी बन्दूक वहीं निकटही के पत्थर से लगा कर रख दी, कि इतने में एक कड़कड़ाहट की आवाज़ सुनाई पड़ी!

यह अचाञ्चक आनेवाली आवाज यद्यपि बहुत धीमी थी परन्तु इसे सुनतेही सर विलफ्रेड के रोंगटे खड़े हो गये उन की नींद आँखों से भाग खड़ी हुई। "काटो तो लहू नहीं बदन में।"

उन्होंने अनुमान किया कि कदाच यह कोई जानवर होगा जो तैर कर यहाँ आ गया है। फिर उन्हें ध्यान आया कि वे कुल झाड़ियों की, भोजन के योग्य जानवर की खोज में तलाशी ले चुके हैं, और इसके अतिरिक्त जल में से तैर कर कोई जङ्गली पशु यहां आनेही क्यों लगा। फिर उनका ध्यान

इस बात पर गया कि कदाच उनके साथियों में से किसी ने यह आवाज निकाली हो, परन्तु एकही दृष्टि में उन्हें यह भलीभाँति मालूम हो गया कि वे सब निद्रादेवी के सुखमय अंचल के नीचे पैर फैलाये आनन्द से सो रहे हैं।

सर विलफ्रेड यद्यपि बड़े वीर पुरुष थें और किसी आपत्ति की कुछ परवाहही न किया करते थे परन्तु इस घटना ने जिस का कुछ आदि अन्त समझही में न आता था उनके शरीर में एक कँपकँपी सी डाल दी। वह उठे और अपनी बन्दूक की ओर बढ़े!

ये ध्यान उनके चित्त में उस समय से भी, जितने में कि ऊपर की वह पंक्तियां पढ़ी गईं! कुछ और जल्दी आये। उन्होंने अपने साथियों को इसलिये नहीं जगाया कि कदाच यह धोखाही धोखा हो। यही सोचते उन्होंने अपनी बन्दूक भरी और उसी पहिली चट्टान के पास जाकर टहलने लगे।

चाँद, बालू तथा जल पर बहुतही साफ़ चमक रहा था परन्तु टापू के उन दोनों वृक्षों के नीचे अन्धकार था। सर विलफ्रेड धीरे २ इर्दगिर्द की झाड़ियों की ओर बढ़ रहे थे। अब लों उन्हें कोई सन्देह को पूरा करनेवाली वस्तु नहीं दिखलाई पड़ी थी। अब वह उन झाड़ियों के निकट पहुँचाही चाहते थे कि फिर वैसीही तीक्ष्ण कड़कड़ाहट उनसे दो गज के अन्तर पर हुई।

इसे सुनतेही सर विलफ्रेड ने तुरन्त घोड़ा चढ़ाया और बन्दूक के लबलबी पर हाथ रख दिया। इसके उपरान्त वे उन दोनों वृक्षों को देखने लगे जो इनसे केवल ३ गज के अन्तर पर थे। उनको ऐसा जान पड़ता था कि वह शब्द इन्हीं दोनों वृक्षों के बीच से आया था।

एक मिनिट पर्य्यन्त वह चुपचाप खड़े थे और वह अपना निशाना ताकनेहीं को थे कि इनके नेत्र में एक प्रकार का अन्धकार आ गया और निशाना हिल गया। अब इन्होंने फिर जो आँख मलकर निशाने के देखने के लिये उधर दृष्टि उठाई तो जो कुछ उन्हें दिखलाई पड़ा उससे उनके प्राण सूख गये।

वे देखते क्या हैं कि जिस स्थान पर दो वृक्ष खड़े थे उनके बीच में एक और उन दोनों वृक्ष से छोटा खड़ा हो गया है।

बीसवाँ बयान।

सर विलफ्रे. के रोंये यह देखकर खड़े हो गये, उनके हाथ काँपने लगे और वे बन्दूक दागना भूल गये। परन्तु "क्या यथार्थ में यह वृक्षही है?" उनके चित्त में उसी समय यह प्रश्न उत्पन्न हुआ। इतनेही में वह कृत्रिम (नकली) वृक्ष, सहसा इनकी ओर शीघ्रता से झपटा, जिससे सर विलफ्रेड एक ओर नदी के किनारे पर बड़े जोर से गिर पड़े और जिस्से कुछ काल पर्य्यन्त उन पर मूर्छा सी रही। उधर बन्दूक जो इनके हाथ से पृथ्वी पर गिरी तो वह गिरतेही तुरन्त छूट गई।

मूर्छा के उपरान्त सर विलफ्रेड उठाही चाहते थे कि एक बड़े लम्बे जङ्गली मनुष्य ने इन्हें दबोच लिया। वह जङ्गली इतना लम्बा था कि सर विलफ्रेड को अपनी बुद्धि पर सन्देह होता था, तो भी उस बुड्ढे या कम से कम अधेड़ बेरेन (राजा) ने अपने प्राण बचाने के निमित्त, उस जङ्गली को एक ऐसा अड़ङ्गा लगाया कि जिससे वह कई पग पीछे हट गया।

अब सर विलफ्रेड ने चाहा कि झपट कर अपनी बन्दूक उठा लें, परन्तु वह जङ्गली इनका मतलब समझ गया और फिर इन पर झपटा, इसी छीन झपट में ये दोनों जल में जा पड़े।

सर विल्फ्रेड यद्यपि बलिष्ट थे, वरन उन्हें इसका घमण्ड भी था परन्तु पन्द्रहही मिनिट की लड़ाई में उन्हें यह भली प्रकार मालूम हो गया कि जङ्गली इनका भी उस्ताद है। उन्हें ऐसा जान पड़ता था कि यह जङ्गली केवल माँस और हड्डियोंही से बना हुआ है।

यह दोनों चुपचाप अपने २ बल को आजमा रहे थे, अपने २ बल पर दोनोंही को घमण्ड था। वह जङ्गली मारे भय के न चिल्लाता था। और इधर यह बूढ़ा अंग्रेज अपनी जाति के रीत्यनुसार अपने वैरी से अकेलाही समर किया चाहता था। वह छिछले जल में इधर से उधर चितपट कर रहे थे, और वह हबशी सर विल्फ्रेड से लड़ता तो क्या एक प्रकार का खेल खेल रहा था। हां सर विल्फ्रेड अपने बल के व्यय करने

में न हिचकिचाते और वह पूरा २ बल लगाते थे, कि सहसा हब्शी ने सर विलफ्रेड को क्रोध में आकर पृथ्वी की ओर ढकेल दिया और सर विलफ्रेड गिरतेही बेहोश हो गये।

कुछ देर के उपरान्त जब इनकी आंखे खुलीं तो क्या देखते हैं कि वह हब्शी इनपर झुक रहा है। अन्त उसने इन्हें साफ उठा लिया और जल की ओर ले चला। सर विल्फ्रेड उस्के हाथों में एक बच्चे की भाँति तड़प रहे थे और अब इन्होंने चिल्लाने की इच्छा की परन्तु जङ्गली इनकी यह इच्छा समझ गया और उसने तुरन्त इनके मुंह पर हाथ रख दिया।

अब छुटकारे की केवल एक राह बाकी थी, और वह यह कि जब वह हब्शी गहरे जल में पहुंचा तब सर विल्फ्रेड ने पुनः बल करना प्रारम्भ किया, कि जिस्से उस जङ्गली की पकड़ कुछ तो ढीली हो गई और कुछ छूट गई। सर विल्फ्रेड ने एक और ऐसा जोर किया कि जिस्से वह छूटकर पानी में जा रहे और गिरते २ सँभल कर खड़े हो गये। जङ्गली ने चाहा कि इन्हें जल के भीतरही दबा दें, और सच मुच दबाही दिया, कि एक काई लगे पत्थर पर दोनो के पैर पड़ गये और दोनोंही फिसल कर गट पट हो कर गिर पड़े, और उस टापू से कुछ दूर हो गये, परन्तु वह जङ्गली उछल कर फेर इनकी खोपड़ी पर आ पहुँचा।

इस गड़बड़ में दोनों ने उस शकल को, जो चट्टान पर से कूद कर उन की ओर बढ़ रही थी नहीं देखा और निकट था

कि सर विल्फ्रेड का अबकी बेर अन्तही हो जावे, कि अकस्मात् कहीं से उस हबशी के सिर पर बन्दूक का कुन्दा बड़े बेग से आ लगा कि जिस्से वह हबशी बेहोश हो गया; और जिन हाथों ने कि हबशी पर वार किया था वेही अब सर विल्फ्रेड की सहायता के निमित्त बढ़ रहे थे।

यह हेक्टर और टैंक थे, बाकी और सब इनके साथी किनारे पर खड़े होकर तमाशा देख रहे थें। सर विल्फ्रेड ने हेक्टर के हाथों को चूम लिया और कुछ शब्द धन्यबाद के कहे इस्के उपरान्त यह भी कहा कि जङ्गली को जल में से उठाकर टापू में ले चलो मेरी ओर से निश्चिन्त रहो मुझे तनिक सी चोट लग गई हैं।

वे तीनों उस हबशी को खींचते हुये टापू पर ले आये। इतनी बड़ी लाश को देखकर सबके तन से प्राण निकल गये वह लम्बा व्यक्ति एक देव की भाँति पृथ्वी पर पड़ा हुआ था। सर विल्फ्रेड ने इस्का कुल वृत्तान्त अपने मित्रोंसे से कह सुनाया और अन्त में यह भी कहा कि "अपने जीवन भर में मुझ से ऐसे मनुष्य से कभी साक्षात नहीं हुआ था और आपलोग सच जानें कि इस्के हाथों में मैं एक बच्चे के समान था। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं इस्के हाथ पैर को देख के आपलोग स्वयं अनुमान कर सक्ते हैं। जान पड़ता है कि यह अभी कहीं गुलामी से भाग के आया हैं इस्के पैरों में बेड़ियों के चिन्ह हैं। जो हो; परन्तु क्या देवजाद जवान है। यह ठीक आठ फीट

लम्बा होगा। यह अभी केवल बेहोश है इस्के हाथ पैर भी तो बाँध दिये जाँय"।

उसी समय पाल के रस्से लाये गये और उनसे उस्के हाथ पैर जकड़ दिये गये। टौंक बड़े ध्यान से उस्की ओर देख रहा था, और फिर सहसा काँपने लगा, इस्के उपरान्त वह एक किनारे जाकर चेको से कुछ बात चीत करने लगा। टौंक ने जो कुछ कहा उसे सुनकर चेको भी काँपने लगा और फिर एक भय भीत दृष्टि उस देव पर डाल कर उस्से दूर जा बैठा।

सर विल्फ्रेड—(चेको से) अबे कुछ पागल तो नहीं हो गया है, इस बेवकूफी का तेरे तात्पर्य क्या है?

वह असान्ती यह सुन्तेही सर विल्फ्रेड के निकट आया और कहने लगा कि टौंक कहता है, कि यह व्यक्ति मनुष्यों को खानेवाला है और टौंक के गाँव के निकट से आता है बहुत से मनुष्यों के खानेवाले वहाँ रहते हैं। सुफेद मनुष्यों की तरह उनके हथियार हैं।

सर विल्फ्रेड—यह सब कहानी है!

परन्तु फिर इस्के उपरान्त वे चेको को बीच में रख के टौंक से बातें करने लगे और उन्हे इस्से यह मालूम हुआ कि उस्के गाँव से तीन दिन की राह पर जिधर से कि सूर्य निकलते हैं उधरही एक लम्बा पहाड़ है, और उसी के पीछे लोग कहते हैं कि लाल पत्थरों का बना हुआ एक बहुत बड़ा नगर है उस्में इसी देव के भाँति एक जाति मनुष्य के खाने वालों

की बस्ती है। टौंक को निश्चय था कि यह मनुष्य भी उसी जाति में का है। उस नगर की राह केवल एक राह के जिसे मृत्यु की घाटी कहते हैं और कोई नहीं, यह मृत्यु की घाटी बड़ीही अँधेरी है जिस्से जल्दी किसी का जाना असम्भव है। टौंक की बातों से जान पड़ा कि आजतक उस नगर को किसी ने देखा नहीं, परन्तु उस्का विश्वास सबको है कि एक ऐसी जाति और लाल नगर पहाड़ के उस ओर अवश्य हैं। जिरह करने पर भी उस्की बातों में कोई फर्क नहीं मालूम हुआ।

सबलोग टौंक की जबानी इस कहानी को सुनकर आश्चर्य में आये परन्तु सर विल्फ्रेड ने कहा, कि मुझे न तो मृत्यु की घाटी और न लाल नगरही के होने पर विश्वास है हाँ मनुष्यों की खानेवाली जाति अवश्य हो सक्ती है, जिस्का उदाहरण यह हमारे सामने पड़ा है।

हेक्टर—मैं अनुमान करता हूं कि कहीं इस जाति के और लोग भी यहाँ न हों।

यह कहकर उसने फिलिप को साथ लिया और कुल टापू छान डाला। इधर अब इनका कैदी भी होश में आया और इनलोगों की ओर भयानक दृष्टि से देखने लगा। उस्का चेहरा ऐसा डरावना था कि किसी की हिम्मत उस्के पास जाने की नहीं पड़ती थी यद्यपि वह भली भाँति बँधा हुआ भी था।

कप्तान—भई मेरी हड्डियाँही गलें। यदि यह मनुष्यों को खानेवाला न हो।

ईश्वर जाने हवशी ने इन शब्दों का क्या अर्थ निकाला कि उसने तुरन्त उठकर अपने बन्धन तोड़ डाले और जोर से चिल्ला कर जल में कूद पड़ा। इस्के उछलतेही कप्तान जोली जो नदी के किनारेही खड़े थे लुढ़कते पानी में चले, और चिल्ला उठे "हाय मार डाला। चेको तथा टौंक ने चिल्ला कर झाड़ियों का रास्ता ताका। हां हेक्टर ने तुरन्त बन्दूक उठा ली और जब उस मनुष्य भक्षक या राक्षस ने अपना सिर पानी में उठाया तो वह गोली माराही चाहता था कि सर विल्फ्रेड ने रोक दिया और बोले "ना !!! जाने दो, उस्की स्वतन्त्रता उस्से मत अलग करो, मुझे बड़ा शोक है कि मैं उस्से बात चीत न कर सका। हेक्टर ने कहा जी ठीक है वह आपका ऐसाही तो दोस्त है और आप से बातही चीत करने के लिये तो पर और आखों या कम से कम हाथों पर उठाये जाता था।

बहुत देर तक सब उस्को तैरता देखते रहे। सब को आशा थी कि वह घड़ियालों का शिकार हो जायगा परन्तु नहीं वह बड़ीही शीघ्रता से तैरता हुआ उस पार पहुँचा और फिर सबकी आँखों से छिप गया।

इस्के उपरान्त चेको तथा टौंक फिर दम दिलासा देकर झाड़ियों के बाहर लाये गये और ये लोग दिन भर उसी टापू पर रहे। बीच में टौंक तथा सर विल्फ्रेड दूसरे किनारे से कुछ शिकार भी कर लाये और आग पर भून के सब ने खाया।

सन्ध्या समय सब कोई मिलकर फिर डोंगी पर सवार हुये और आगे बढ़े।

इक्कीसवाँ बयान।

नवम्बर (अंग्रेजी का ग्यारहवाँ महीना) के पहिले सप्ताह में सर विल्फ्रेड अपने साथियों सहित नगर "लीवा" में जहाँ वसूरी जाति बसती है पहुँचे। यह नगर नदी शेरी की एक साखा पर बसा हुआ है। झील शाड से यह स्थान ६०० मील के अन्तर पर है

अब यह लोग वहां पहुंचे तो इनकी अवस्था बड़ीही न थी। किसी को घाव से दुःख पहुंचता था कोई बोखार से पीड़ीत था। तात्पर्य यह कि एक २ दुःख सभी को लगा हुआ था।

इनकी पीछे छोड़ी राह में कोई ऐसी दिलचस्प घटना नहीं हुई परन्तु हां जो जो कष्ट धूप तथा भूख में उन्हें उठाने पड़े उनका न कहनाही अच्छा है।

वह केवल रात को अपनी राह चलते, खाने के निमित्त जो फल फूल मिलता उसी पर दिन काटते। मछली या अन्य जन्तुओं का माँस इन्हें बड़ीही कठिनता, से प्राप्त होता कारण यह कि वह बन्दूक हत्याही नहीं छोड़ सके थे। प्रथम तो इससे आस पास के जङ्गलियों को खबर हो जाती, दूसरे इनके पास बारूद और छर्रे भी बहुत कम थे। एक बार वे

एक जङ्गली जाति के हाथों फँस गये थे परन्तु बड़ी कड़ी लड़ाई के उपरान्त वहां से छुटकारा मिला। हां टैंक ने सहैन इनके साथ जान लड़ाई। और सच तो यों है कि यदि वह साथ में न होता तो इनलोगों का रास्तेही में अन्त हो जाता। वह रास्ते से भली प्रकार परिचित था और यह भी जानता था कि किस स्थान पर कौन और कैसी जाति बसती है।

भ्रमण के अन्तिम ७० मील इन्होंने पैदल चलकर समाप्त किये, कारण यह कि नदी की साखा का जल इतनी शीघ्रता से वह रहा था कि उसपर नाव चढ़ाना तनिक काम रखता था।

अन्त एक दिन लड़खड़ाते हुये ये लोग नगर लीवा में जाही तो पहुंचे। टैंक इसे देखतेही प्रसन्नता से उछल पड़ा क्योंकि यही उसकी जन्म भूमि थी जिसे आज भाग्यवश कितनेही वर्षों के उपरान्त उसने देखा था।

वसूरी जाति बड़ी दगाबाज और पाषाणहृदय होती है परन्तु टैंक के पिता के कारण जो यहां एक सर्दार की भांति रहता था इन सुफेद मेहमानों को किसी प्रकार का कष्ट उन लोगों से न उठाना पड़ा। वरन् जब टैंक ने कुल हाल इनके भ्रमण का आदि से लेके कह सुनाया तो उस जाति को इनसे एक प्रेम सा हो गया।

सर विल्फ्रेड एक महीने तक जब वहां सुख की घड़ी बिता चुके तो अब इन्होंने आगे चलनें की इच्छा की। नगर लीवा पहाड़ों में बसा हुआ है और वहां का जल वायु भी

ईश्वर के अनुग्रह से बहुतही अच्छा था इसलिये ये लोग एकही महीने में हृष्ट पुष्ट हो गये। हमारे सर विल्फ्रेड थे भी बड़ेही तीक्ष्णबुद्धि के मनुष्य, इन्होंने रास्तेही में टौंक की भाषा अच्छी तरह सीख ली थी। औ अब इस जाति से खूब घुल २ कर बातें करने लगे। इन्होंने बहुत से मनुष्यों से मृत्यु की घाटी और लाल नगर के बारे में अनेकानेक प्रश्न किये परन्तु जो कुछ यह सुन चुके थे उससे विशेष एक शब्द भी मालूम न हो सका, इसलिये ये लोग एक महीने के उपरान्त एक बेजाने और भयानक देश के भ्रमण के लिये तैयार हुये, जो बसूरी नगर से पश्चिम और दक्षिण कोने पर है।

सर विल्फ्रेड लेगाश से चलती समय बुद्धिमानी करके एक पेनसिल तथा कुछ कागज अपने साथ लेते आये थे इससे वे नित्य प्रति की घटनाओं को लिखते परन्तु अब उस्की आवश्यक्ता न थी इसलिये नगर लीवा छोड़ने के पहले उन्होंने इस रोजनामचे को सरदार बसूरी के हवाले किया और सहेज दिया कि यदि हमलोग मृत्यु की घाटी से लौटकर न आयें तो इस रोजनामचे को समय मिलने पर किसी सुफेद आदमी के हवाले कर देना।

छठीं दिसम्बर के प्रातः काल; सामनेही एक बड़ाही मनोहर दृश्य दिखलाई पड़ता था। तमूरान पर्वत की बरफ से ढँकी हुई चोटियां सूर्य की किरनों से भिन्न २ प्रकार के रंगों से चमक रही थी। नगर के चारों ओर एक घना और सोहाना

वन लहलहा रहा था, और वह छोटी सी नदी इस्के बीच से वहती हुई बड़ीही रमणीक जान पड़ती थी। सभ्य संसार में यद्यपि बड़े २ नगर हैं जैसे लन्दन और पेरिस इत्यादि। परन्तु उनमें यह सौन्दर्य कहाँ? और हो भी तो कैसे हो? कहाँ उस सर्वगुणसम्पन्न जगदीश की सुन्दर रचना; और कहाँ तुच्छबुद्धि मनुष्य के एक लगातार परिश्रम का उदाहरण। भला इसका औ उस्का मेल क्या सम्भव है?

जब सूर्य देव धीरे २ नीले आकाश में ऊँचे हो रहे थे, तो उस समय दो बड़े २ डोंगे जिनपर सर विल्फ्रेड वसूरी जाति के, बड़े सरदारों सहित बैठे थे, धीरे २ दूसरे किनारे की ओर जा रहे थे। उस किनारे पर पहुँच के वसूरी जातिवालों को विदा करने के निमित्त वे ठहर गये।

इस समय वहाँ सहस्रों घण्टे और ढोल बज रहे थे और वह कोलाहल मच रहा था कि कान पड़ा शब्द न सुन पड़ता था; और यह बात उस जाति की ओर से किसी विशेष प्रतिष्ठितही मनुष्य के निमित्त की जाती थी। अन्त ये लोग वहां से आगे बढ़े और टौंक के राह दिखलाने से ये कुछही काल के उपरान्त अपने मित्र वसूरियों के नेत्रों से ओझल हो गये।

हमारे दृढ़चित्त पथिकों के पास कुछ ऐसा विशेष असबाब भी न था। सर विल्फ्रेड, फिलिप, तथा हेक्टर के पास अंग्रेजी, उत्तम राइफेल्स (बन्दूकें) थीं। कप्तान जोली के पास, शाह

कसांगो की दी हुई पुराने चाल की एक बन्दूक थी। चेको और टौंक कमान तीर तथा वरछे से सुसज्जित थे।

सर विल्फ्रेड की किफायत से इस समय भी ५०० कारतूस ३ वदूकों के वास्ते बच रहे थे, और कप्तान साहव के पास एक थैला वारूद तथा गोलियों का मौजूद था। इस्के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति के पास एक २ थैला खाने पीने की वस्तुओं तथा अन्य आवश्यकीय चीज़ों से भरा हुआ था।

देश के जिस प्राँन्त में वे इस समय भ्रमण कर रहे थे वह वड़ाही हरा भरा और उपजाऊ था, परन्तु वहाँ कोई जाति उन देवों के भय से नहीं वसती थी। इन लोगों ने अन्त रात को एक स्थान पर डेरा डाला। कप्तान साहव एक वड़ा और मोटा हिरन मार लाये जिस्का कबाब वनाया गया और सबने मिलकर भोजन किया। रात को पारी २ सबने पहरा दिया और फिर तड़का होतेही आगे के लिये कूच !!!

दूसरे दिन, इन्हें पहाड़ी भूमि मिलने लगी जो और भी हरी भरी थी और इस्में वहुतसी वहुमूल्य लकड़ियाँ भरी पड़ी थीं। इसी भाँति भ्रमण करते हुये, ये लोग एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ से भूमि लगातार पहाड़ की ओर ढालुवाँ होती चली गई थी। यहीं पर एक छोटा परन्तु गहरा जल का सोता भी वह रहा था। इनलोगों ने यह देखकर अपने दूसरे पड़ाव के लिये यही स्थान स्थिर किया।

टैंक ने अब बड़े भय के चिन्ह दिखलाने प्रारम्भ किये उसने इनलोगों को आग जलाने के लिये मना किया जिस्से सब को बड़ाही क्लेश हुआ, फिर भूमि पर सोने से रोका और लाचार उनलोगों को वृक्षों पर चढ़ के बसेरा लेना पड़ा। सच मुच भूमि पर सोना बड़ाही भयानक निकला; क्योंकि रात को अनेक जङ्गली पशु इनलोगों के वृक्षों के नीचे आये और प्रातः काल पर्यन्त इन्हीं की ताक में नीचे बैठे रहे। परन्तु कुशल हुई, वे लोग सबेरा होतेही विना किसी हानि पहुँचाने के लौट गये।

प्रातःकाल सबने वृक्ष से, उतर कर उस सोते में स्नान किया और कुछ खा पी कर फिर आगे बढ़े।

राह अब बहुतही ढालुवाँ होने लगी यहां तक कि उन्हें मालूम होता था कि हम ऊंचे २ पहाड़ों के बीच में हो गये हैं। कुछही दूर जाने पर वही राह जो अब तक ढालुई थी सकरी भी होने लगी। होते २ वह एक जगह से दाहिनी ओर को घूम गई। हमारे सर विल्फ्रेड सबके आगे थे, और जब वे इस मोड़ पर पहुँचे तो "अरे!" कहकर खड़े रह गये।

इनसे पाव मील के अन्तर पर यह रास्ता एक सकरे और अन्धकारमयी गुफा के दरवाजे पर जाकर समाप्त हो गया था। इस रास्ते के दोनों ओर, दो बड़े ऊंचे २ पहाड़; बड़े २ वृक्षों और हरी २ लताओं से सिर से पैर तक ढँके खड़े थे। उसके बीच से नीला आसमान, इन हरेभरे पहाड़ों की चोटियों

पर शामियाने की तरह तना हुआ था। उन पहाड़ों की ऊंचाई उस स्थान से, जहां ये मनुष्य खड़े थे ठीक १५००० फीट की थी।

सर विल्फ्रेड—(अपने साथियों से), मृत्युघाटी का दरवाजा देखो वह तुम्हारे सामने है। और—अरे! यह इसकी रखवाली करनेवाला कौन बैठा है?

बाईसवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड की अन्तिम बात सुनकर सब चौंक पड़े। उनलोगों ने अनुमान किया कि कदाच् देवों की कुछ फौज इस घाटी का पहरा दे रही है। परन्तु जब उस ओर दृष्टि की तो जान पड़ा कि एक बड़ा शेर बबर ठीक गुफा के द्वार पर बैठा हुआ इनलोगों को घूर रहा है। और जब इनलोगों को उसने आगे बढ़ते पाया, तो वह भी सामना करने के लिये खड़ा हो गया।

सर विल्फ्रेड—मृत्यु की गुफा के वास्ते यह कैसा ठीक दरबान है। अब इस रखवाले से अवश्य हमें लड़ाई मोल लेनी होगी, क्योंकि मैं उसे दिखलाया चाहता हूं कि मैं भी वीरता तथा साहस से तुम्हारी गुफा में घुसा चाहता हूं।

कप्तान—परमेश्वर बचाइयो! देखो तो! अजी उसकी तरफ देखो, यह कैसा मुझे आँखें निकाल २ कर घूर रहा है। ईश्वर जाने क्यों मुझसे ईश्वर की सृष्टि मात्र शत्रुता मानती है। हे भगवान!

सर विल्फ्रेड अपने साथियों सहित बराबर आगे बढ़ते चले गये, यहाँ लों कि अब उस्से केवल बीस गज़ का अन्तर रह गया। तब वह एक बारगीही उठा, और इधर उधर देखकर हवा में दुम हिलाता गुफा के भीतर चला गया।

सर विल्फ्रेड—अरे! ये महाशय तो स्वयं अपनेही घर में घुस गये। अब यह आवश्यकीय बात है कि हम इनसे सचेत रहें, मैं तो इन्हें यहाहीं ढेर कर दिये होता परन्तु मेरी इच्छा बन्दूक दागने की नहीं है।

अब वे गुफा के दरवाजे पर जा खड़े हुये। सबपर यह भली भाँति विदित था कि वह कैसे भयावने स्थान में जाने के लिये खड़े हैं। टौंक का चेहरा पीला हो रहा था और चेको सबके पीछे खड़ा बेंत की तरह काँप रहा था।

सर विल्फ्रेड—यह स्थान कुछ भी भयानक नहीं जान पड़ता, इधर के रहनेवालों के चित्त पर इन देवों का कुछ ऐसा भय जम गया है, कि वे भाँति २ के बे सिर पैर के, मन गढ़त किस्से कहते हैं। तुम स्वयंही देखो! यह केवल एक गुफा है जो भीतरही भीतर चक्कर खाती दूसरी ओर निकल गयी है।

टौंक—वारा ऐल गोरो (मृत्यु की गुफा)।

यह कई बार वह कहकर पीछे हटा, परन्तु सर विल्फ्रेड उसी तरह वहाँ खड़े रहे और जब उन्होंने अपने दिलही दिल कुछ निश्चय कर लिया तो निधड़क आगे बढ़े, और मृत्यु की

गुफा में जाने को प्रस्तुत हो गये । एक के उपरान्त दूसरा, योंही सभी ने गुफा में प्रवेश किया । चेको भी मचलता हुआ सबके पीछे चला ।

वह रास्ता केवल ३० फीट चौड़ा और बहुतही ऊँचा था । पत्थर के बड़े २ ढोंके इधर उधर पड़े हुये थे । हरियाली कहीं नाम को भी नहीं दिखलाई देती थी । दोपहर को इस्में ऐसा मन्द प्रकाश आ रहा था कि मानों सन्ध्या हो गई है; और सच तो यों है कि वहां से दिन का अनुभव करना सर्वतो भाव से असम्भव था । गुफा की छत में कहीं २ छेद भी थे जिस्से, झर २ करती ठंढी २ वायु शीघ्रता से आती थी ।

ये लोग बराबर इसी तरह चले गये, और ६ माईल जाने के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने अनुमान किया कि मृत्यु की गुफा का अब अन्त हो गया परन्तु वह राह भुलभुलैयां की तरह बल खाती चली गई थी, दो घण्टे उस्के उपरान्त भी हो गये, परन्तु फिर भी गुफा के अन्त होने का कोई चिन्ह न दिखलाई दिया ।

अब सन्ध्या के चार बजे थे और सर विल्फ्रेड बड़ीही हैरानी और थकावट से रास्ता चल रहे थे । इनके साथी अब हिम्मत हारने लगे । इनलोगों की बुद्धि कुछ काम न करती थी, क्योंकि जब उन्होंने गुफा में प्रवेश किया था तो उनका मुँह पश्चिम की ओर था और अब वे दक्खिन की ओर जा रहे थे ।

यद्यपि सर विल्फ्रेड के चित्त में भी, भाँति २ के भय, इस गुफा के अन्त न होने पर, आ २ कर उनके चित्त को हिलाये देते थे; परन्तु उन्होने कोई चिन्ह इस प्रकार का अपने चेहरे से प्रगट न होने दिया।

अब ५ बजे थे क्योंकि सर विल्फ्रेड के पास घड़ी थी और उस्से समय मालूम होता था। अब वे एक स्थान पर खड़े हो गये और सोचने लगे कि हमें राल्फ हाल्डेन की खोज में आगे बढ़ना चाहिये या यहीं से बैरङ्ग वापस लौटना चाहिये। यदि यह रास्ता इसी तरह अपना विस्तार बढ़ाता जायगा तो बड़ी कठिनता होगी, हमलोग भूख और सर्दी से मर जाँयगे। (कुछ और ठहरकर) परन्तु क्या परवाह है! मरदों की बात एक होती है! मैं आगे अवश्य बढ़ूंगा।

हमारे सर विल्फ्रेड में भली बातों के लिये हठ भी बहुत थी। सर विल्फ्रेड—सुना भाइयो! मैं अब यहाँ से न लौटूंगा जिस्को हमारा साथ देना हो हमारे साथ चला आवे और जिसे साथ न देना हो वह लौट जावे अन्त यह राह कहीं न कहीं तो समाप्ति को अवश्यही पहुँचेगी।

यह सुनकर सब मरनें मारने पर कमर बाँधकर आगे बढ़े, अभी ये लोग कुछही दूर और आगे गये होंगे कि टैंक जो आगे था उछल पड़ा, और इसने सर विल्फ्रेड को, जो इस्के पीछे थे इशारे से अपने पास बुलाया। सर विल्फ्रेड झपट कर जब उस्के पास पहुँचे तो क्या देखते हैं कि एक बड़ा वृक्ष

उस्के पासही पड़ा हुआ है । यह देखकर वे बहुतही प्रसन्न हुये और बोले "भाई वाह ! क्या सौभाग्य है, न जाने कितने वर्षों का यह सूखा वृक्ष हमलोगों की राह में पड़ा है। आज की रात हम यहीं वितावेंगे । चेको ! इस्में से लकड़ियाँ तोड़ कर तनिक आग तो जलाओ।"

आग जलाई गई । सबने अपना भोजन जो साथ लाये थे बड़ीही प्रसन्नता से अग्नि पर गरम कर के खाया। पानी अब विलकुल समाप्त हो गया । इस्के उपरान्त सोने की तैयारी होने लगी । सर विलफ्रेड ने कहा रात भर आग धधकती रहे । जो व्यक्ति पहरे पर रहे उसे इस्का ध्यान अवश्य चाहिये ।

कप्तान—(जो बड़े प्यासे थे) मुझे ऐसा जान पड़ता है कि जैसे कहीं जल बहता हो ।

यह सुनकर सबने उस ओर ध्यान दिया परन्तु कुछ भी न सुन पड़ा, इस्से उनलोगों ने अनुमान किया कि यह केवल कप्तान साहब की दिल्लगी है, परन्तु सर विल्फ्रेड ने फिर कान पृथ्वी पर लगाया और बोल उठे "कप्तान साहब ठीक कहते हैं।" अवश्य जल कहीं निकटही बहता है। हेक्टर ! तनिक वह जलती लकड़ी उठाकर मेरे पीछे तो आओ" ।

हेक्टर ने एक जलती हुई लकड़ी मशाल की तरह उठाई, और फिर अपनी बन्दूक लेकर सर विल्फ्रेड के आगे हो लिया, टौंक भी इनके साथ २ हो गया, और जैसे २ ये लोग आगे बढ़ते थे वैसेही वैसे पानी की आवाज और स्पष्ट रूप से सुन

पड़ती थी; यहाँ लों कि वह एक खाई के किनारे पहुँचे और यह मालूम हो गया कि इसी में से वह आवाज़ आती है।

सर विल्फ्रेड घुटनों के बल झुक कर मशाल की रोशनी में नीचे देखने लगे परन्तु कुछ दिखलाई न दिया।

सर विल्फ्रेड—मुझे तो कुछ भी नहीं दिखलाई देता। परन्तु जल है अवश्य; प्रातः काल इस्का पता लगेगा।

हेक्टर—और कोई उस्पार जाने का रास्ता भी अवश्यही होगा क्योंकि वह देव लोग आखिर किसी चीज पर से तो होकर आते जाते होंगे।

सर विल्फ्रेड—तो क्या वह आते भी हैं? मुझे तो आशा नहीं।

यह कुछ आगे कहा चाहते थे कि एक भयानक आवाज़ ने इनकी आवाज़ बन्द कर-दी। और उसी समय एक बड़ा शेर बबर दहाड़ कर दाहिनी ओर से इनके सामने आया। इस्का सामने आना टौंक के हक में विष हो गया, वह मशाल फेंक कर पीछे हटा; और पीछे हटतेही बड़ेही खेद का विषय है कि उस गहरे और अँधेरे खाई में जा रहा।

इसने गिरते समय हाथ फैला दिये और खाई के आगे निकले हुये पत्थरों में जोरसे चमट गया। परन्तु कुछ न हो सका! वह क्षण २ पर नीचे को फिसलताही जाता था।

सर विल्फ्रेड के हाथों के तो जैसे तोते उड़ गये। परन्तु अब क्या हो सक्ता है। टौंक! बेचारा टौंक! पत्थरों से चिमटा हुआ सहायता के लिये चिल्ला रहा था।

तेईसवाँ बयान ।

उसके चिल्लाने से कलेजा फटा जाता था और वह बेचारा अब या तब गिरनेही पर लगा था। जो हो, ऐसे समय सहायता भी बड़ी कठिनता से की जा सक्ती थी। वह मशाल जो अबतक पृथ्वी पर पड़ी हुई जल रही थी, शेर के आक्रमण को रोके हुई थी। उधर वह खड़ा क्रोध से काँप रहा था और मानों मशाल के बुझने की प्रतीक्षा कर रहा था। सर विल्फ्रेड ने उसी समय अपने को पृथ्वी पर गिरा दिया, और दोनों हाथ से टॉम की कमर थाँभ कर हेक्टर से बोले "शीघ्र बन्दूक मारो! जबतक मशाल जल रही है उसे मार डालो। आँख पर गोली लगे।"

हेक्टर को भला ऐसी दुर्घटना से काहे को कभी सामना पड़ा होगा, परन्तु इस ध्यान ने, कि इतनी जानें केवल उस्के निशाने की सचाई पर बचती हैं! उसे हिम्मत दिलाई, और उसने निशाना साध कर बन्दूक छोड़ दी।

मशाल अब बुझ गई थी और शेर झपटाही चाहता था, कि एक तड़ाके की आवाज़ आई और शेर ऊपर उछला, और फिर पृथ्वी पर गिर कर तड़पने लगा। हेक्टर भी इसी गड़बड़ मे भूमि पर गिर पड़ा, परन्तु मारे भय के तुरन्त लुढ़क कर उस स्थान से तनिक दूर हट गया। उस्के दिल मे हर घड़ी हौल उठता था, कि शेर अब उस्के ऊपर आया, और अब आया! परन्तु नहीं, वह एक कोने में पड़ा तड़प रहा था। इतने में सहसा

एक भारी चीख और फिर एक धमाका सुन पड़ा, और उस्के उ-
परान्त मौत का सा सन्नाटा चारों ओर फैल गया।

अब हेकुर को केवल अपनी ही साँस चलती हुई सुन प-
ड़ती थी, और कहीं से कोई शब्द या खटका न सुन पड़ताथा।
उसे निश्चय था, कि धड़ाके की आवाज़ शेर के खाईमें गिरने की
थी। शायद वह तड़पता हुवा उसमें जा गिरा हो। इस्पर वह
धीरे से उठा और चारों ओर आँखें फाड़ २ कर देखने लगा,
परन्तु कुछ भी न दिखाई पड़ता था, अन्त वह रह न सका,
और पुकार उठा टैंक! सर विल्फ्रेड! आप कहा हैं? । परन्तु इ-
स्पर भी कोई उत्तर न मिला, उसने फिर जोर से आवाज़ ल-
गाई; परन्तु बेकार! अब हेकुर के बदन मे कँपकँपी आ गई!
इस्की बुद्धि ने जवाब दे दिया, और वह बदहवासी के साथ
वहीं चित्रपट की भांति खड़ा रह गया।

कुछ देर उपरान्त इसने अपने पीछे से कुछ शब्द सुने,
और साथही प्रकाश भी जान पड़ने लगा। यह देख कर उसने
अनुमान किया, कि कोई नई आफत आती है, परन्तु नहीं,
कुछही देर के उपरान्त उसे अपने पहिले अनुमान पर ल-
ज्जित होना पड़ा। यह आनेवाले सब उसके बाकी के साथी थे,
अपने २ हथियार और बलती हुई लकड़ियां हाथों मे लिये
सब बढ़े आते थे।

कप्तान जोली सबके आगे थे, और उन्हों ने जैसेही शेर को;
जो बेजान आगे पड़ा हुआ था, देखा, चौंक कर पीछे हटे!

और वीरवर चेको तो उसे देखतेही वहीं गिर पड़ा; परन्तु कुछही देर के उपरान्त उन्हे मालूम हो गया कि यह सर्द है। यह जान सब आश्चर्य से उस्के गोली के घाव को देखने लगे। फिर उनकी दृष्टि हेक्टर पर पड़ी, जो आँखें मींचे दीवार से लगा खड़ा था। कप्तान जोली उस्के पास गये और बाँह हिलाकर चिल्ला उठे! "सर् विल्फ्रेड कहां हैं? यह बात क्या है?"

इन लोगों ने अभी तक उस खाई को नहीं देखा था। इसलिये हेक्टर ने चेको के हाथ से मशाल ली और उस खाई पर झुक गया।

जो उसने सोचा था अभाग्यवश वही ठीक भी हुवा! सर विल्फ्रेड ने टोंक की सहायता करने में अपनी भी जान गँवा दी!!! शोक!! महा शोक!! उस समय हेक्टर के चित्त पर जो कुछ बीतती थी वह उस्के हृदयही को कुछ खूब मालूम होगा! उस्के चित्त पर यहां लों ठेस पहुँची कि वह बेहोश होकर एक ओर गिर पड़ा। इस्पर कप्तान जोली भी रोने लगे, यद्यपि उनकी समझ मे असल बात तो न आई थी परन्तु कुछ २ वे अवश्यही समझ गये।

कुछ देर के उपरान्त हेक्टर ने नेत्र खोले। उस्के नेत्रों से अश्रु धारा लुढ़कती चली आती थी, और उसने रोते २ अपना कुल वृत्तान्त कह सुनाया जिसे सुनतेही कप्तान साहब की बुरी गति हो गई। वे पछाड़ें खाने लगे और बहुत ही रोये पीटे, अन्त वह अपनी जान बिलकुल आपत्ति मे डाल कर उस खाई

मे मशाल हाथ मे लेकर कमर तक झुक गये, और बड़ी ज़ोर से सर विल्फ़ेड का नाम लेलेकर पुकारने लगे । परन्तु कोई फल न हुआ ! यहां तक कि उनकी आवाज़ बैठ गई । अन्त उनके साथियों ने बहुत कुछ समझाया बुझाया, और सर विल्फ़ेड का सच्चा मित्र, कप्तान जोली—रोता और हिचकियाँ लेता हुआ वहाँ से हटकर अपने स्थान पर आ बैठा ।

हेक्टर—क्या अब उनके जीवित मिलने की कोई आशा नहीं है ?

फिलिप—प्रातः काल पर्यंत तो तुम कुछ नहीं कर सक्ते !

हेक्टर—प्रातः काल को भी तुम क्या कर लोगे, सिवा इस्के कि उनके मुर्दे मिलें और क्या हो सक्ता है और मुझे तो इस्में भी सन्देह है ।

कप्तान जोली और हेक्टर को जो दुखः था वह हमारी लेखनी से लिखा नहीं जा सक्ता,—और हेक्टर तो भला, कुछ दूरदर्शिता के कारण इससमय अपना दुखः प्रगट नहीं होने देता था, परन्तु कप्तान साहब का तो यह हाल था, कि वे मानतेही न थे । वह तो उस खाई में अपने मित्र को ढूँढ़ने के निमित्त उतरने को थे परन्तु सबने घसीट कर उन्हें अलग बैठा दिया ।

कप्तान—हाय ! क्या मेरा मित्र मर गया ? उफ ! ऐसी मृत्यु ? नहीं नहीं ! भला यह भी कभी सम्भव है ! वह मरही नहीं सक्ता । मुझे विश्वास नहीं होता ! हाय ! वह कैसा बुद्धिमान, दयाशील, उच्चकुल का भूषण और वीर पुरुष था ।

हेक्टर—आह ! मुझे यह सब अच्छी तरह मालूम है कि वे कैसे थे, उनकी बहादुरी कोई मेरे हृदय से पूछे ! और सच तो यों है कि इन थोड़े दिनों में, मैं सर विल्फ्रेड पर आशक्त हो गया था। अपने पिता से भी कुछ विशेष उनपर मेरा प्रेम था।

कप्तान—हेक्टर ! तुम भी दुखी हो ! बेशक दुखी हो ! और हमारे इस अपार दुःख के तुम साथी हो। हाय हेक्टर! मैं अपना हृदय किसे चीर कर दिखाऊँ कि कितना दुःख मुझे हुआ है !

यह कहकर रोते २ कप्तान साहब ने हेक्टर का हाथ अपने हाथ में ले लिया। उधर चेको एक ओर अँधेरे में बैठा हुआ अपने बाल नोच रहा था उस्की आँखों से भी बराबर अश्रुधारा निकल रही थी।

इस्के उपरान्त ये लोग, अपने पड़ाव की ओर फिरे, लेकिन फिरती समय सहसा हेक्टर की दृष्टि फिलिप पर पड़ी जो शेर के निकट की पड़ी हुई किसी वस्तु को उठा रहा था। उसी समय हेक्टर का ध्यान अपने जन्तर पर पड़ा कि जिसे वह प्राण स भी कुछ विशेष प्रिय रखता था। यह ध्यान आतेही तुरन्त उसने अपने गले में हाथ डाल कर टटोला तो, जन्तर वहाँ न पाया, यह देखतेही वह झपट कर आगे बढ़ा और कहने लगा "ऐं ! मेरा जन्त्र ! फिलिप ! तुमने कहीं मेरा जन्तर तो नहीं देखा है ?

फिलिप—तुम्हारा यन्त्र ! इस "तुम्हारा" का मतलब, कदाच् सर विल्फ्रेड से है ।

हेक्टर—नहीं २ वह तो मेरा यन्त्र है, मैं बहुत दिनों से इसे पहिने हुआ हूं इसमें जो तस्वीर है वह मेरी माता—"

फिलिप—ऐं ! तुम्हारी माता की वह तस्वीर है ?

हेक्टर—हाँ हाँ ! मेरी प्यारी माता का वह चित्र है ! वह देखो उस्का तागा; अबतक मेरी गरदन में मौजूद है ।

फिलिप ने वह यन्त्र हेक्टर के हवाले कर दिया परन्तु देती समय उस्का हाथ काँप रहा था और उस्का रंग बिलकुल पीला पड़ गया था । इस्के उपरान्त सब कोई पड़ाव पर पहुँचे और वहाँ पहुँचकर हेक्टर ने सबको आराम करने की सलाह दी ! परन्तु सिवा चेको के ऐसी अच्छी बात किसी ने न मानी ! और रात भर सब सर विल्फ्रेड के दुःख से जागते रहे ।

जैसेही सबेरा हुआ अर्थात् जब गुफा के बाहर एक पहर दिन चढ़ गया तो वह सब फिर उस खाई पर आये । कप्तान साहब ने दो चीखें खूब कसके उस मुर्दा शेर बबर पर लगाईं जो इनकी बरबादी का कारण हुआ था । अब हेक्टर ने जो झुक कर भली भाँति उस खाई के भीतर देखा तो जान पड़ा कि चालीस या पचास फीट के नीचे एक पानी का सोता बड़ेही वेग से बह रहा है । जिस्की परीक्षा उसने एक लकड़ी डालकर कर ली, जो गिरतेही आँखों से छिप गई ।

हेक्टर—उनका यहाँ पता कहाँ ? या तो वे गिरतेही डूब गये होंगे या बह गये हों । परन्तु उनकी लाश का अवश्यही पता लगाना होगा ।

इस्के उपरान्त खाई के उस पार जाने का विचार होनें लगा। इधर उधर घूमकर देखने के उपरान्त जान पड़ा कि एक पुल बायें कोने पर बना है। यह पुल क़ाहे का था ? तनिक वह भी सुन लीजिये। किसी लता के चार बड़े और मोटे २ रस्से इकठ्ठा किये गये थे, ये रस्से लम्बाई में लगभग दस फीट के होंगे और इसी को खाई का पुल बनाके दोनों कोनों पर दो बड़े २ पत्थर के टुकड़ों से दबा दिया था । इनलोगों को सब से ज्यादा ताज्जुब उन पत्थर के टुकड़ों पर हुवा कि वे यहाँ कैसे आये ।

हेक्टर—निस्सन्देह यह देवों का काम है !

कप्तान—(काँप कर) और जो उनके बराबर के हैं वेही उन्हें परास्त भी कर सक्ते हैं ।

हेक्टर—अच्छा ! अब हमें क्या करना चाहिये । यह सोता या नदी, पूर्व दिशा की ओर बहती है और यह गुफा भी उसी ओर घूमती हुई जा रही है । हमारी जान इस गुफा का मोहरा और यह सोता कहीं पासही पास निकलता है और सम्भव है कि हमें टौंक तथा सर विल्फ्रेड के मुर्दे भी वहीं कहीं मिल जावें, और दूसरे; (हिंचकिचाकर) जो काम सर विल्फ्रेड ने

प्रारम्भ किया था उसे भी मैं पूरा करूंगा; अपने पिता की मैं अवश्य खोज करूंगा।

यह कहकर हेक्टर अपने साथियों की ओर देखने लगा।

कप्तान—हेक्टर निश्चिन्त रहो! मैं भी अपने मित्र सर विल्फ्रेड का इच्छा को, जो उसे यहाँ तक खींच लाई थी पूरा करूंगा। और जहाँ तुम्हारा पसीना बहेगा वहाँ अपना खून टपकाऊंगा। मेरी हड्डियाँही गलें जो मैं अपनी बात से फिरूं! और मैं आशा करता हूं कि फिलिप की भी यही राय है।

फिलिप—(सिर हिलाकर) भई मेरी तो यह राय है कि अब पीछे फिर चलो। सर विल्फ्रेड के बिना हमलोगों से कुछ करते धरते न बन पड़ेगा। और—"

कप्तान—(क्रोध से) लड़के! यह चालाकियां कहीं और दिखाना मुझ बुड्ढे खरौंट पर, जिसने बहुत से समुन्दरों का जल पिया है तेरी एक भी चाल काम न करेगी। जो कुछ तुम्हारे दिल में है उसे मैं अच्छी तरह समझता हूं। तुम्हारी यह इच्छा है कि अब मैं सभ्य संसार में जाकर सर विल्फ्रेड की असंख्य सम्पत्ति से खूब मजे उड़ाऊं, क्योंकि अब उनके वली वारस जो है एक तुम्ही है। लेकिन सोचने की बात है कि क्या ऐसे मनुष्य के मिट्टी की खोज, जिस्के अतुल सम्पत्ति से तुम ऐश्वर्य भोग करोगे न करनी चाहिये?

फिलिप—(लाल होकर) यदि तुम्हें उनके मुरदे के मिलने की आशा है तो मैं तुम्हारे साथ हूं।

हेक्टर—ले महाशय कप्तान साहब, अब क्षमा कीजिये और चलने का सामान कीजिये।

यह सुन्तेही झटपट बिस्तरे अस्बाब झोले में डाल दिये गये और सब आगे बढ़े। सर विल्फ्रेड की राइफल कप्तान साहब के पास थी और कप्तान साहब की चेको ने ले ली। वही चेको जो सदैव पीछे रहता था रैफल हाथ में आतेही तीन कदम सब से आगे हो गया।

योंही बढ़ते हुये सब उस भयानक पुल के निकट जा खड़े हुये। दो रस्सों पर दोनों पैर जमाकर उस पार जाना चाहिये। कैसा भयानक समय था। और सब तो कदाच् उस पार चले भी जावें, परन्तु कप्तान साहब का जाना तनिक टेढ़ी खीर थी।

हेक्टर ने उसी समय एक तदबीर सोची, रस्सी की सीढ़ी का एक सिरा तो स्वयं पकड़ा, और दूसरा चेको को थँभाकर उस्पार भेजा। यह तो एकही फुरतीला जवान था, देखते २ उस्पार जा खड़ा हुवा। और वहां हेक्टर के आज्ञानुसार रस्सी के सिरे को उस चट्टान के ऊपर जिस्में कि पुल दबा था, एक दूसरी चट्टानमें खूब कसके बाँधकर रख दिया। इधर हेक्टर ने भी अपनी ओर का सिरा किसी चीज़ में मजबूती से कस दिया। अब यह रस्सी एक डंडे की तरह हो गई। पुल पर का चलनेवाला एक हाथ से इसे पकड़ कर धीरे २ उस्पार जा सक्ता था। इसी तरह हेक्टर तथा फिलप उस्पार उतर गये। इनलोगों के उप-

रान्त कप्तान साहब भी चले, परन्तु बीच में आते २ उनके पैर डगमगाये, पैरों के लड़खड़ाते ही इन्हों ने रस्सी की सीढ़ी को दृढ़ता से पकड़ लिया। और उसी के सहारे पर हो गये। परन्तु रस्सी पर जोर पड़तेही वह अपनी जगह से टूट गई और कप्तान साहब एक चीख़ मार कर नीचे जा रहे।

चौबीसवां बयान।

केवल कप्तान साहब की पकड़ ने कप्तान साहब के प्राण बचाये। यदि वे रस्सी को दृढ़ता से पकड़े न होते तो निस्सन्देह नीचे जा रहते। अब वे रस्सी पकड़े हुये नीचे झूल रहे थे और सहायता के निमित्त बार २ चिल्लाते जाते थे। हेक्टर तुरन्त इनकी सहायता को पहुँचा, और सबने मिल कर इन्हें ऊपर खींच लिया।

कप्तान—(हाँफ कर) मैं सर विल्फ्रेड के पास जाही चुका था, वह तो कहो बच गया, केवल घुटनोंही के माथे गई।

वास्तव में घुटनेही के माथे गई, और कोई कड़ी चोट न थी। अब सबने फिर आगे की राह ली, और दिनभर बराबर बढ़ेही चले गये। कहीं दूसरी रात न इस गुफा में इन्हें बितानी पड़े, इस ध्यान ने इन्हें और शीघ्रगामी बना दिया। अनेक बार जब वह राह घूमती थी, तो इन्हें निश्चय हो जाता, कि अब आगे गुफा का अन्त है, पर नहीं! आगे बढ़तेही इन्हें अपनी चूक

भली भांति मालूम हो जाती। यों ही चलते २ संध्या के चार बज गये, परन्तु कोई चिन्ह गुफा के समाप्त होने का दिखलाई नहीं दिया। यह देख कर सब एक स्थान पर एकत्रित हो गये, इनकी सूरत से घबड़ाहट झलक रही थी, परन्तु हेक्टर ने अपनी व्यग्रता को साहस करके छिपाया और कहने लगा।

हेक्टर—मुझे पूरी आशा है, कि अब खुला मैदान कहीं बहुत दूर नहीं है। आप लोग घबड़ाइये नहीं, साहस करके आगे बढ़े चलिये। परन्तु पहले कुछ खा के दृढ़ तो हो जावें। इससे निश्चिन्त रहियेगा, कि आज की रात यहां न बितानी पड़ेगी।

उसके साथी यह सुनकर बैठ गये, सभों ने शीघ्रता से भोजन किया, और फिर रात के भय से वे लोग जल्दी २ आगे बढ़ने लगे। धीरे २ संध्या भी होने लगी। प्रकाशमयी गुफा में अन्धकार छाने लगा, परन्तु इस रास्ते में कोई नई बात न हुई। वह उसी तरह बराबर आगे चली गई थी। प्रातः काल से इस समय तक पूरे २० मील वे चल चुके थे, परन्तु अभी लों राह समाप्त होने के कोई लक्षण दिखलाई न देते थे।

चेको—हा! बारा एल गेरो—

कप्तान—हां चेको तुम बहुत ठीक कहते हो, यह वास्तव में मृत्यु की गुफा है। दो मनुष्यों के प्राण तो जाही चुके, और हम लोग भी यदि बाहर आज निकले तो मरे हुओं से कुछ कम न होंगे। ईश्वर की सौगन्ध ये जङ्गली बहुत ही ठीक नाम रखते हैं!

फिलिप—महाशय मैंने तो पहलेही निवेदन किया था, कि लौट चलिये, लेकिन आप न सुनैं तो कोई क्या करे !

कप्तान साहब यह सुनकर कुछ कहनेहीवाले थे, कि हेक्टर जो कुछ दूर आगे बढ़ा था, चिल्ला उठा "पहुँच गये !"

पच्चीसवां बयान ।

हेक्टर—वह देखो मेरी उँगली के सामने ! वहां से रास्ता घूम गया है । वह उस्की दीवार दिखलाई पड़ती है । इसपर जो चमक है, वह जानते हो, काहे की है ? यह बाहर के धूप की चमक आ रही है । अब बढ़ो आगे हम पहुँचे दाखिल हैं ।

इस्के कहने की कोई आवश्यक्ता न थी, सब तीर की तरह उसी ओर चले, और पन्द्रह मिनिट के उपरान्त सब मृत्यु के पञ्जे से निकल कर एक सुन्दर हरियाले स्थान में खड़े हुये। अन्त; "मृत्यु की गुफा" अन्त को पहुँचही तो गई ।

इन लोगों के सिर पर बड़े २ और ऊँचे पहाड़ खड़े आकाश से बातें कर रहे थे । इनके सामनेही एक और छोटी पंहाड़ी थी, जो सिर से पैर तक बड़े २ और हरे वृक्षों से लदी हुई थी । इनके बाँये, और दाहिने घना जङ्गल लगा हुवा था।

हेक्टर—वह सोता अवश्य हमारे दाहिने होगा, और हमसे कुछ बहुत दूर नहीं है । यह पगडण्डी जो हमारे सामने है; उस सामनेवाली पहाड़ी पर जाती है । चलो उसी पर चढ़कर देखें,

कि वह सोता कहां है, और यह भी कि यहां कोई जीव जन्तु हैं कि नहीं।

सब लोग उसी पर चले, पगडण्डी के देखने से यह भली भाँति विदित होता था, कि इसपर बहुत दिनों से मनुष्य चलते फिरते हैं। वह सब उस पहाड़ी पर जा पहुँचे। हेकर उनसे कुछ आगे था। वह एक चट्टान पर खड़ा हो गया, और इधर उधर देखने लगा। ईश्वर जाने उसने देखते २ कौन सी ऐसी आश्चर्ययुक्त बात देखी, कि वह जोर से चिल्ला उठा। इसके साथी भी यह आश्चर्य व्यापार देख तुरन्त उसके पास पहुँच गये, और जो कुछ उन्हों ने देखा, उससे वे भी चकित हो, एक टक एक ओर देखते रह गये।

मनुष्य के नेत्र कदापि ऐसे आश्चर्ययुक्त और कौतूहल-वर्धक दृश्य पर न पड़े होंगे। डूबते हुये सूर्य की लाल २ किरनें पर्वत श्रेणी, तूरमाँ की बरफ से ढँकी हुई, श्वेत वर्ण की चोटियों पर पड़ रही थीं, और इन दोनों का चमकीला और रङ्ग विरङ्ग साया एक बड़े, भारी, प्रशस्त और विशाल नगर पर पड़ रहा था; जो इन मुसाफिरों के ठीक नीचेही फैला हुआ था।

पाठकगण! यह नगर कोई एफ्रिका या एशिया के सामान्य नगरों की तरह नहीं बना था, बरन् प्राचीन काल के बड़े २ नगरों—जैसे रोम, एथेंस, कारथेज, इत्यादि से, टक्कर मार रहा था। सहस्रों मीनार, सैकड़ों, बुर्ज, और अनगिनती गुम्बदों को; एक

लम्बी चौड़ी और दृढ़ शहर पनाह अपने घेरे में घेरे हुई थी। नगर के उत्तर और दक्षिण दो पहाड़ियाँ थीं, जो ढालुवाँ होते२ शहर पनाह की दक्षिण और उत्तर की दीवारों में आ मिली थीं। उन्हीं में से उत्तर की पहाड़ी पर हमारे मुसाफिर खड़े थ। नगर के पूर्व दिशा से एक नदी, लहरें मारती, शहर पनाह में होती हुई नगर के भीतर प्रवेश करती है, और फिर नगर के बीचों बीच से होती हुई पश्चिम दिशा से वहती नगर के वाहर हो जाती है। यही मृत्यु की गुफा का सोता था। इसी में सर विल्फ्रेड तथा टौंक गिरे थे। अस्तु! अब यहाँ सब से विचित्र बात तो इन लोगों को यह देखने में आई कि सारा नगर लाल पत्थरों का वना था जो सूर्य की लाल २ किरनों में लाल अंगारे की तरह चमक रहा था।

हेक्टर—लालनगर!

कप्तान—वास्तव में लाल नगर! टौंक ने ठीक कहा था वह देखो वह सोता है।

वड़ी देर तक वह उसी ओर देखते रहे। हर घड़ी उन्हें, उस वड़े कोलाहल के सुन पड़ने की आशा थी, जो प्रायः वड़े २ नगरों में हुआ करता है। परन्तु नहीं! वहाँ चारों ओर एक अटल सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं से कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था।

अन्त इस विचित्र नगर के रहनेवाले कहाँ हैं? सोते हैं या कवरों में विश्राम करते हैं?

सबको इस आखिरी बातही पर विश्वास हुआ ! तो अब आपत्ति तो यह है कि उक्त नगर का कौन नाम उपयुक्त समझा जावे । "नगर लाल" वा "नगर शून्य" ।

छब्बीसवां बयान ।

कप्तान—ईश्वर की सौगन्द टैंक सच कहता था । मृत्यु की गुफा से निकले हैं । लालनगर सामने है, परन्तु देव और राक्षसों के बारे में तो हमारी जान धोखाही धोखा है, विशेषतः मुझे तो निश्चय है, कि यहां देव, भूत, कोई नहीं ।

हेक्टर—देखिये सब मालूम हुआ जाता है । इस्के पहिले कि रात हो जाय, हम लोगों को कोई स्थान सोने के लिये स्थिर कर लेना चाहिये । तनिक पहाड़ी से उतर कर चन्द्रमा की चाँदनी में नगर की शोभा देखने की इच्छा करती है । मेरा तो दिल चाहता है कि इन बड़ी २ अट्टालिकाओं में से एकमें रात भर आराम करता ।

कप्तान—अरे भई तो इस बात से नहीं कौन भडुवा करता है ! परन्तु इस्का पहिले निश्चय हो जाना चाहिये कि यह नगर उजाड़ है ! उल्लू और चमगीदड़ों के अतिरिक्त कोई नहीं रहता ! बस इस्का निश्चय कर लो तो चलो ।

वे लोग वहां से बातें करते उतरे । अब सन्ध्या की लालिमा केवल रह गई थी । सोता उसी तरह चुपचाप लहरें मारता नगर के भीतर चला जाता था । ये लोग पाहिले सोते के किनारे

पहुँचे। भोजन निकाल कर सबने आनन्द से खाया, और सोते से जल पीकर फिर नगर की ओर बढ़े।

अभी ये लोग कुछही दूर गये होंगे कि सहसा सिंह के गरजने का शब्द सुन पड़ा और साथही दूसरे पशुओं के भी शब्द सुन पड़ने लगे।

हेक्टर—इन लक्षणों से तो यही प्रतीत होता है कि दूर तक कहीं मनुष्यों का पता भी नहीं है—आगे ईश्वर जाने।

कप्तान—यदि मेरे मृत साथियों के मृत देह, वहाँ से बहे होंगे तो हम उन्हें यहीं पायेंगे।

फिलिप—उनके मुरदे तो यदि आप क्षीरसागर से लेकर एक छोटे नाले पर्यन्त ढूंढ़ डालें तो भी न मिलेंगे।

इसपर कप्तान साहब कुछ न बोले। अब रात भीग रही थी, और चन्द्र देव, धीरे २ -इन मुसाफिरों की बढ़ीहुई हिम्मतों को देखने के लिये आकाश के नीचे, मखमली पर्दे से अपना सिर निकाल चुके थे। इधर हमारे पथिक कुछही दूर और आगे बढ़े होंगे कि इन्हें एक औंधी नाव भूमि पर पड़ी हुई मिली। हेक्टर को यह देख कर बड़ीही प्रसन्नता हुई और वह कहने लगा। "कप्तान! यह लो! एक डोंगी पड़ी हुई है इसे जल में डाल कर बैठ लो और आनन्द से नदी में से होते हुये नगर में प्रवेश करो।"

कप्तान—भई वाह! बहुतही अच्छे! ले ढकेलते जाओ इसे!

चेको—नः नः पानी में मत जाओ देवें लोग मारडालेगा।

फिलिप—हाँ कहता तो यह ठीक है !

हेक्टर—अजी आओ भी ! यह अशान्ती तो एकही बोदे दिल का मनुष्य है । '

कप्तान साहब और हेक्टर, इस्के उपरान्त नाव ढकेलने लगे। यह देख कर उन दोनों ने भी हाथ लगाया। आनन फानन में नाव पानी में कर दी गई । क़प्तान साहब डांड़े पर गये और हेक्टर ने किलवारी (पतवार) हाथ मं ली । नाव धारे में चलाई जाने लगी । डाँड़े मारती समय ये लोग बहुत भय खाते थे । अस्तु ! तो नाव चली, और कुछही देर के उपरान्त नगर के पास पहुँच गई ! ये लोग एक भेहराबी दार दरवाजे से, जो नदी की चौड़ाई के बराबर चौड़ा ; जल के जाने के लिये बनाया गया था,—भीतर पहुँचे ।

जो कुछ अब इन लोगों ने देखा, वह बयान से बाहर है। नदी के दोनों किनारों पर, पक्की और चौड़ी सड़कें बनीं हुई थीं, और इन पक्की सड़कों के दोनों ओर लगातार ऊँचे २ खुरमे के वृक्ष लगे हुये थे । इस्के अतिरिक्त नदी के जल से लेकर उन सड़कों पर्यन्त अनगिनती, पक्की, साफ और चिकनी सीढ़ियां लाल पत्थरों की बनाई गई थीं । थोड़ी २ दूर पर कितने बँगले, और कितनेही बुर्ज, नदी के जल से बिलकुल सटे हुये और ऊपर की सड़क की ऊँचाई के बराबर बने हुये थे । सड़कों के उपरान्त दोनोंही ओर सुन्दर और बड़े २ महलों का सिल-सिला नदी के साथही साथ आगे बढ़ता चला गया था । इन मकानों में

बहुतेरे पुराने और बे मरम्मत होने के कारण टूट गये थे। इस्पार से उस्पार जाने के लिये असंख्य पुल लाल पत्थर के बने हुये थे।

इतने में इन्हे चाँदनी में दूर से कुछ चमकता दिखलाई दिया। जब वे इसके निकट पहुँचे तो क्या देखते हैं कि नदी के दोनों ओर, आध २ मील के चौखूटे दो मैदान हैं इनका फर्श सङ्गमरमर का था। इन मैदानों के बीचों बीच एक २ बुर्ज या मीनार लाल पत्थर के बने हुये थे। इस मीनार की सीढ़ी भी सङ्ग मरमर की थी।

यह नगर का चौक जान पड़ता था, स्थान २ पर पत्थर की मूरतें भी खड़ी की गई थीं। थोड़ी दूर पर जाकर नाव, जो आपही आप बह रही थी; एक सलामी-नुमा ढेर या पुश्ते पर लग गई। पुश्ते के ऊपरही एक बड़ी भारी अट्टालिका खड़ी थी। जिस्के देखने से जान पड़ता था कि यह किसी जाति का देवालय है।

हेक्टर—शगुन अच्छे हैं। अब हम उतरते हैं और तनिक इधर उधर घूमेंगे, कदाच् कहीं मुलायम बिछौने हमारी राह देख रहे हों, या कहीं उत्तमोत्तम भोजन हम लोगों के लिये टेबुलों पर चुने रक्खे हों। कहीं यह। "अलिफलैला" का वह पुराना नगर तो नहीं है ?

कप्तान—अरे भाई हमें तो एक तमाखू का थैलाही मिलजावे तो हम समझें कि हमारे हाथ अतुल सम्पत्ति लग गई।

परन्तु हेक्टर चलो, चल के इस मकान को भीतर से देखें, जिस्की बनावट देवालय के सदृश है।

यह सुन्तेही एक के उपरान्त दूसरे ; योंही सभीलोग उतरकर उस देवालय की ओर चले, और बड़ी सचेतता से, साये में होते हुये उस देवालय में जा पहुँचे। भीतर से देखने पर जान पड़ा कि वास्तव में यह एक मन्दिर था जो स्थान २ से टूट गया था।

हेक्टर अपने साथियों को इधर उधर टहलता छोड़ कर मन्दिर के भीतरी भाग में घुस गया। इस्के साथी बाहरी भाग को देख रहे थे ; कि भीतर से हेक्टर के चिल्लाने की आवाज़ आई "भीतर शीघ्र आओ"।

फिलिप और चेको तो आवाज़ सुन्तेही सिटपिटा के वहीं ठहर गये, भीतर जाने का साहस न हुआ, परन्तु कप्तान यह आवाज़ सुन्तेही तुरन्त भीतर पहुँचा और वहाँ पहुँच कर क्या देखता है कि हेक्टर चाँदनी में एक हड्डियों के ढेर के ऊपर झुका है, और इस्का चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया है।

हेक्टर—(काँपते हुये) यह देखो, यह देखो—यह हड्डियाँ हैं, और वह मनुष्यों की खोपड़ियाँ पड़ी हैं, इधर राख और कोयलों का ढेर है, और यह अभी गरम भी है! भला कुछ समझे कि यह क्या है? आदमी के खानेवालों देवों की करतूत!

कप्तान अच्छी तरह समझ चुका था और वह भी कांप रहा था, हेक्टर की बात का वह उत्तर देनेंही को था कि हठात् इनके साथियों की बाहर से एक दबी हुई चिल्लाहट सुनाई दी।

सत्ताईसवाँ बयान।

"हेक्टर! कप्तान जोली! यदि प्राण प्यारे हों तो शीघ्र बाहर आओ"।

यह फिलप का कण्ठस्वर था। हेक्टर यह सुन्तेही कप्तान साहब का हाथ पकड़ कर बाहर की ओर दौड़ा, और यहां आकर क्या देखता है, कि फिलिप तथा चेको नदी की ओर काँपते हुये देख रहे हैं। इन दोनों को देखकर फिलिप ने धीरे से कहा, "देखो सावधान! किसी प्रकार का शब्द न होने पावे। वह देखो हम लोगों की डोंगी के निकट कौन है?

अब जो कुछ इन लोगों ने देखा वह भीतर के भयानक दृश्य से भी कहीं विशेष भयावना था। इन लोगों के सामने, एक भयानक देव; ठीक वैसाही, जैसा शारी नदी के टापू पर पकड़ा गया था, किश्ती पर झुका हुआ आश्चर्य से इधर उधर देख रहा है। हथियारों में से एक कमान तथा एक बरछा उस्के पास था।

कप्तान—वह देखो डोंगी के भीतर चला, परन्तु भला इस गदहे को वहां मिलनाही क्या है।

हेक्टर—(काँप कर) ऐ महाशय! यदि वह डोंगी ही ले के चला जावे तो बहुत अच्छा है; परन्तु वह केवल—"

सा—हे परमेश्वर वह तो इसी ओर आता है।

सचमुच वह देव उसी मकान की ओर बरछा हाथ में लिये बढ़ा चला आता था।

हेक्टर—वह इसी ओर आता है! अब क्या करें? यदि बन्दूक छोड़ते हैं, तो उसके दुष्ट साथी जो कहीं निकटही होंगे, सचेत हो जाँयगे।

कप्तान—हाय! वह हमी लोगों को ढूँढ़ता भी मालूम होता है, देखो वह किस तरह फूँक २ कर कदम धरता, और वृक्षों के सायों को देखता भालता आता है।

हेक्टर—अहाहा! बस एक बात सूझी है।

यह कह कर वह चेको के पास गया, जो सिर से पैर तक बेंत की तरह काँप रहा था। हेक्टर इसे एक खम्भे के पीछे ले गया, और बोला "चेको, देख तेरे पास तीर कमान है, तुझे अवश्य उस जङ्गली को मारना होगा, और वह भी निस्तब्धता से; यदि तू ऐसा नहीं करता तो हम सबके सब मारे पड़ेंगे; और सबसे पहिले तो बचा, वह तुम्हीं को कच्चा खा जायगा। हिम्मत बाँध और सचा निशाना बाँध के लगा तो एक तीर! कोई कठिन बात नहीं है।"

चेको अच्छा तिरन्दाज़ था। हेक्टर की बात सुन्तेही उसने हिम्मत बाँधी, और एक तीर सीधी करके निशाना ताकने लगा। उधर

वह जङ्गली निधड़क इनकी ओर बढ़ा चला आता था। उस्का स्वरूप बड़ाही भयानक था, उस्के लम्बे २ बाल काले नागों की तरह उस्के सिर पर लपटे हुये थे। वह सिंह की खाल का लंङ्गोट अपने कमर में कसे हुये था। आते २ कोई ६ गज के अन्तर पर वह रुक गया। उस्के रुकतेही, हेक्टर ने चेको से कहा "बस मार दे!"

चेको अब बड़ेही शान्त भाव से बैठा था, यह सुन्तेही उसने निशाना ताका, और तीर, कमान से छोड़ दिया।

इस्के उपरान्त क्या हुआ, वह उन्हीं लोगों के चित्त को कुछ अच्छी तरह जान पड़ा होगा। वह देव, जो यह सोच रहा था कि आगे बढ़ूं—अकस्मात् चिल्लाता हुआ पीछे हटा, और दाहिने हाथ को पकड़कर चीख़ पर चीख़ मारता एक ओर जाकर अदृश्य हो गया।

तीर इस्की बाँह में लगा था। चेको ने बड़ीही चूक की थी। हेक्टर यह देखतेही चिल्ला उठा "पाजी! बेवकूफ! देख क्या आपत्ति तू लाया! इस्से अच्छा तो मैं स्वयं तीर मार सक्ता था। कप्तान, फिलिप, डोंगे की ओर भागो"।

यह कहकर हेक्टर भी उसी ओर चला, चेको पहलेहीं से भाग कर नाव में जा छिपा था। जब हेक्टर नाव में पहुँचा तो सब बैठ चुके थे। यह भी उसपर बैट गया और नाव आगे बढ़ाई गई। उसी समय उस घायल देव की चिल्लाहट एक ओर

स सुन पड़ी और साथही और भी बहुत सी चिंघाड़ें दूसरे ओर से सुनाई दीं।

कप्तान साहब तो, जिस ओर से कि इनलोगों ने नगर में प्रवेश किया था उसी ओर चले, परन्तु हेक्टर ने बाधा देकर कहा "नहीं! जिधर से आये हो उधर जाना बेवकूफी है। वरन आगे बढ़ो नगर के दूसरी ओर रक्षा मिलेगी।

फिलिप—हेक्टर! तुम हम सब को तबाह किया चाहते हो, तो यह असम्भव है। जिधर से आये हो उसी ओर फिरो, वहाँ से तमूरान पहाड़ पार कर के और बसूरी लेंड से होते हुये मिश्र देश की राह से मकान लौट चलो। मैं अब यहाँ नहीं ठहर सक्ता।

हेक्टर—फिलिप! अब और कुछ न कहो! हमलोगों को तनिक २ सी बातों पर झगड़ा उठाना कुछ भला नहीं जान पड़ता है।

कप्तान—यहा ठीक है! हेक्टर मैं तुम्हारे और तुम्हारी राय दोनों के साथ हूं।

अभी यह लोग सम्भल कर बैठे भी न थे, और यही सब बकवाद कर रहे थे कि एक ओर से वही देव, चिल्लाता हुआ अपने अन्य साथियों सहित इनके सामने किनारे पर दौड़ता आ पहुँचा। यह अपने साथियों से दो कदम आगे बढ़ा हुआ था। कप्तान साहब ने यह देखकर बन्दूक सीधी की और

चाहा कि गोली मार दें, परन्तु हेक्टर ने रोक दिया और कहने लगा इससे अन्य राक्षस भी सचेत हो जाँयगे।

नगर के जिस भाग में ये लोग इस समय थे, वह बहुत ही पुराना हो गया था और स्थान २ पर सरपत के झुंड खड़े थे। वह देव, इन्हीं सरपतों के झुण्ड में से एक में लड़खड़ा कर गिर पड़ा और इसके गिरने तथा उठने तक ये लोग कुछ दूर हो रहे।

कप्तान—ईश्वर की सौगन्द टौंक ने सच कहा था, एक २ शब्द—"

सहसा हेक्टर के चिल्लाने से कप्तान साहब की बात अधूरी रह गई, और उन्होंने उसके बताये हुये स्थान की ओर देखा, तो जान पड़ा कि बीच नदी में एक टूटा बुर्ज है, और उसपर चार देव इनके आने की बाट जोह रहे हैं।

कुछ देर तक तो सब एक सन्नाटे में रहे, अन्त को हेक्टर ने उठा के बन्दूक दागही तो दी। "दाँय" और साथही आगेवाला हबशी, मुंह के बल नदी में गिर पड़ा। तीन देव यह देखकर चिल्ला उठे, अभी ये सँभले भी न थे कि फिलिप और कप्तान ने मिलके बाढ़ मारी "दाँय! दाँय" और अबकी दो देव बुर्जही पर लोट गये, अब केवल एक देव चिल्लाता हुआ वहाँ खड़ा रह गया।

इस बाकी के बचे हुये जङ्गली ने अपना बरछा घुमा के इनलोगों पर मारा, परन्तु वह चेको की बाँह से लगता हुआ नाव की दीवार को छेद कर रह गया। फिलिप ने इसे निकालना चाहा परन्तु

हेक्टर ने रोक दिया। क्योंकि इस्के निकलतेही नाव में पानी की धार आने लगती।

अब इनके आगे, पीछे, इधर, और उधर, देवही देव दिखाई दे रहे थे। पत्थर तीर और बरछों की बौछार चारों ओर से हो रही थी। एक स्थान पर बहुत से देव नदी के किनारेही खड़े थे और जैसेही डोंगी वहाँ पहुँची इन्होंने तीरों की वर्षा आरम्भ कर दी। अभाग्य बश चेको की बाँह ऊपर थी और एक तीर आकर उसी में बैठ गया। तीर के लगतेही यह चिल्ला उठा और उछल कर पानी में जा पड़ा। यह देखतेही हेक्टर उस्की सहायता को झपटा परन्तु वह हाथ न आया, और प्रत्येक क्षण इनसे दूर होता जाता था। फिर कुछही देर के उपरान्त गोता मार कर न जाने किस ओर चल दिया।

इसी बखेड़े में ये लोग कुछ आगे बढ़ आये। जङ्गली भी इनके पीछे थे। नाव में जल भरा आता था, इतने में एक तीर सनसनाता हुआ आया और कप्तान साहब के बाँये टाँग में बैठ गया। इस्के लगतेही ये तिल-मिलाने और तड़पने लगे, इसी हलचल में नाव में बहुत सा जल आ गया और साथही वह बड़े बेग से बहकर किनारे की ओर चली, और वहाँ पहुंचकर उसने किनारे से, एक बड़ी कड़ी टक्कर ली।

हेक्टर—बन्दूकें भरलो और दौड़ते हुये नगर के फाटक की ओर चलो!

हेक्टर यह कहकर स्वयं नाव से कूद कर भागा। कप्तान जोली उसके बगल में थे, और फिलिप इनके पीछे था। जङ्गली भी यह देखकर इनके साथही बढ़े थे परन्तु एक स्थान पर ठहर कर और इन तीनों ने मिलके जो एक बाढ़ बन्दूकों की मारी तो वे सब ठहर गये।

इधर ये लोग लगातार आध घण्टे तक बराबर दौड़ते गये। अब कोलाहल किसी ओर से न सुन पड़ता था। बेचारे कप्तान जोली, गिर गिर पड़ते थे, प्यास के मारे इनका दम निकला जाता था। एक स्थान पर सब ठहर कर हाँफने लगे।

फिलिप—भई मुझे तो बड़ी प्यास लगी है।

कप्तान—तो यहाँ किस भकुवे को नहीं लगी है। और सुनो जल के बहने का कहीं निकटही शब्द भी तो सुन पड़ता है।

हेक्टर ने भी सुना। सचमुच कोइ नदी, कहीं निकटही बह रही थीः—इसलिये हेक्टर जल की खोज तथा उसके लाने के निमित्त चला। ये लोग एक स्थान में उसकी प्रतीक्षा करने लगे।

हेक्टर कुछही दूर गया था कि उसे एक बड़ाही रमणीक बाग दिखलाई पड़ा। इधर से उसके भीतर की राह न थी परन्तु यह इसे निश्चय हो गया कि इसी के भीतर जल है। यह स्थिर कर हेक्टर तुरन्त दीवार फाँद गया, परन्तु अभी इसने भीतर की भूमि पर पैर रक्खेही थे कि बाहर से कप्तान साहब ने चिल्लाकर कहा "हेक्टर! हम धर लिये गये, अपनी प्राण रक्षा करो।" इसके उप-

रान्त देवों की चिंघाड़ें सुन पड़ीं और फिर पाँच मिनिट के उपरान्त वही पहिले जैसा सन्नाटा छा गया।

हेक्टर—(मन में) सचमुच कप्तान ने ठीक कहा! मैं अपनी प्राणरक्षा करूंगा।

यह कहकर वह आगे बढ़ा और किसी सुरक्षित स्थान की खोज करने लगा। यह कुछही दूर और बढ़ा था कि इसने घने वृक्षों के बीच में एक वृहत् अट्टालिका को खड़े पाया। बनावट से इस्के प्रतीत होता था कि यह राज महल है।

डरा हुआ हेक्टर, चौंकता चमकता इस्के भीतर पहुँचा। सीढ़ियों के उपरान्तही उसे एक बड़ी दालान मिली। चाँदनी जो बाहर खूब छिटकी हुई थी, उस्का साया यहाँ पर पड़ रहा था। यह साहस करके धीरे २ और भी आगे बढ़ा।

यह दालान, आगे बढ़ के एक बड़े कमरे से मिल गया था। हेक्टर ने इधर उधर देखकर उस्में भी पैर रक्खा। परन्तु ततक्षणात् उसे यह मालूम हो गया कि इस्के अतिरिक्त वहाँ कोई और भी है। हेक्टर यह जानकर इधर उधर नेत्र फाड़ २ के देखने लगा, परन्तु कुछ न मालूम हुआ। अन्त एक काली शकल एक कोने में दिखलाई पड़ी जो बराबर इस्की ओर बढ़ रही थी।

हेक्टर जिस स्थान पर था, वहीं दम साधकर और बन्दूक सीधी करके खड़ा रह गया। वह शकल और निकट आई। यह देख हेक्टर काँपने लगा। शकल और बढ़ी। यह देखकर

हेक्टर के हाथ से बन्दूक छूट गई और भूमि पर गिर पड़ी; इस्के कुल शरीर में सनसनाहट चढ़ गई, इस्का चेहरा मुर्दे की तरह सुफेद हो गया। इसने अपने सामने सर विल्फ्रेड की प्रेतात्मा को खड़ी पाया !!!

हेक्टर के सिर से झर २ पसीना बहने लगा; और वह कई मिनिट तक ज्ञानशून्य हो तस्वीर की तरह वहीं खड़ा रहा, अन्त वह दोनों हाथ फैलाकर उस शकल की ओर बढ़ा और उस्को लपट कर कहने लगा "आहा! सर विल्फ्रेड, मैं तुम्हें देख के कितना प्रसन्न हुआ हूं।"

सर विल्फ्रेड—हेक्टर! तुम यहाँ कहाँ?

अच्छा तो सर विल्फ्रेड जीवित थे। जिस प्रतिमा को हेक्टर ने सर विल्फ्रेड की प्रेतात्मा समझ रक्खा था वह यथार्थ में सर विल्फ्रेडही थे! मरे हुये ने पुनर्जन्म पाया!

सर विल्फ्रेड—कप्तान जोली कहाँ हैं?

इस्पर हेक्टर ने सारी कहानी कह सुनाई जिसे सुन के सर विल्फ्रेड कहने लगे "ओहो—चेको डूब गया, तुम्हारे साथी घर लिये गये, और तुम्हारी भी अवस्था कुछ अच्छी नहीं है। प्यारे हेक्टर! मुझे भी तुम्हारीही ऐसी कठिनाईयाँ झेलनी पड़ीं हैं। ज्योंही हम टैंक सहित पानी में गिरे; तो अभी पैर पृथ्वी में भी न लगे थे कि मैं बहुत दूर बह गया, और बहते हुये आकर यहाँ कुछ दूर आगे इसी नदी के किनारे पर लगा। किनारे पर लगतेही पाजी देवों ने हमारा पीछा किया। टैंक तो पकड़ा

गया परन्तु मैं उनसे पीछा छुड़ाके भागा और गिरता पड़ता किसी तरह इस बाग में आ पहुँचा। मैं बहुत देर से यहाँ सो रहा था इसलिये तुम्हारी बन्दूकों की आवाज़ें नहीं सुनी।

हेक्टर—अच्छा अब क्या करना चाहिये?

सर विल्फ्रेड—हमें पहिले तो अपने साथियों को छुड़ाना चाहिये। फिर दूसरे, उस अंग्रेज का, जो यहाँ कैदी है समाचार लेना चाहिये और तीसरे इन कामों के उपरान्त यहां से कुशल पूर्वक निकलना चाहिये। परन्तु सब से पहिले इस मकान की देख भाल करनी होगी क्योंकि प्रातः कालही से जङ्गली लोग बड़ी खोज हम लोगों की करेंगे, इस लिये कोई छिपने का स्थान हम लोगों को अवश्य ढूंढ़ना चाहिये।

हेक्टर—अच्छी बात है, यह राईफल (बड़ी बन्दूक) तो आप लिजिये मैं मसकेट (एक छोटी बन्दूक) से काम लूंगा।

सर विल्फ्रेड ने हेक्टर के बहुत कुछ कहने सुन्ने के उपरान्त राईफेल ले ली और हेक्टर को चुपचाप अपने पीछे आने को सहेज कर आगे बढ़े। कितनेही मकान वे अपने पीछे छोड़ते, बढ़ते जाते थे।

सर विल्फ्रेड—यह नगर तो हमारी जान रोम राज्य अन्तर्गत में था करण यह कि बहुत से मकान उसी तरह के हैं तुमने इङ्गलेन्ड में—हे भगवान यह क्या? मुझे कदाच् एक क्षण के निमित्त सितारे दिखाई पड़े—"

अभी यह इह इतना कही चुके थे कि इनका सिर किसी कड़ी वस्तु से टकराया ।

हेक्टर—क्या है ? क्या अव बढ़ना कठिन हैं ?

सर विल्फ्रेड—तनिक मैं देखलूं कि यह क्या है । इस अन्धकार में भला क्या खाक दिखलाई देगा ; मैं सलाई भी तो नहीं जला सक्ता—आह ! यह तो किसी फाटक के दरवाजे के छड़ हैं—अच्छा ठहरो !

इधर उधर हाथ फैलाने पर जान पड़ा कि यह एक फाटक है जिस्में चार २ इञ्च की दूरी पर छड़ लगे हुये हैं। एक २ खिड़की दोनों पल्लों में लगी थी ! और देखने पर यह भी विदित हुआ कि इनमें से एक खुली भी थी !

सर विल्फ्रेड—(उस खिड़की को खोल कर) अहाहा यह रास्ता है ले चले आओ !

इस्के उपरान्त दोनों मनुष्य एक के उपरान्त दूसरे ने भीतर प्रवेश किया ।

हेक्टर—यह लोहे के छड़ इस्में क्यों लगे हुये हैं ?

सर विल्फ्रेड—जान पड़ता है कि पहले यह स्थान वन्दीगृह था ।

कुछही दूर जाकर दोनों ठिठक गये । एक विचित्र प्रकार की दुर्गन्धि वहाँ उठ रही थी । सर विल्फ्रेड ने धीरे २ कहना प्रारम्भ किया "हेक्टर ! मैं नहीं कह सक्ता कि यहाँ क्या है

परन्तु ऐसा स्मरण होता है कि इससे पहिले भी कभी ऐसी दुर्गन्धि मैंने सूंघी थी ।"

हेक्टर—और मैंने भी !

सर विल्फ्रेड—देखो मैं बतलाऊं ! लन्दन के चिड़ियाघर में सिंघ के कठहरों में से ऐसीही दुर्गन्धि आती थी ! क्यों है कि नहीं ?

हेक्टर—(काँप कर) हाँ हाँ ! तब "

अब इन लोगों के पैर आगे न उठते थे, चुपचाप दोनों साँस रोके वहीं खड़े थे । थोड़ीही देर के उपरान्त किसी के गुर्राने की आवाज सुनाई दी । हेक्टर यह सुनकर भागने ही को था परन्तु सर विल्फ्रेड ने तुरन्त पकड़ लिया ।

सर विल्फ्रेड—सावधान ! भागना मत ! यदि अपने स्थान से हिलोगे तो बुरी मृत्यु से मारे जाओगे ।

इसके उपरान्त एक भयानक गरज सुनाई दी जिसे सुन के दोनोंहीं का रक्त सूख गया ।

सर विल्फ्रेड—तुरन्त दियासलाई निकालो !

हेक्टर के पास केवल दो दिया सलाईयाँ थीं जिसमें से इसने एक जलाई ! जब प्रकाश चारों ओर हो गया तो क्या देखते हैं कि जहाँ लों प्रकाश फैलता है उसमें ६ बड़े २ सिंघ इधर उधर घूमते दिखलाई पड़ते हैं । भागने की अब कोई राह न थी । दियासलाई भी अब बुझनेही को थी । और यह निश्चयही था कि अँधेरा होतेही वे सिंघ इनके टुकड़े उड़ा देंगे ।

सर विल्फ्रेड—कितनी बड़ी चूक हुई है।

हेक्टर—गोली मारदीजिये वह देखिये एक इधरही आ रहा है।

सर विल्फ्रेड—नहीं तुम दियासलाई बालो, और उसे अपने प्राण बचाने के लिये जलाये रहो, तब सेमैं एकदूसरी तदबीर रता हूं।

यह कहके सर विल्फ्रेड ने अपनी कमीज (कुरता) फाड़ डाली और जल्दी से ब्राण्डी निकालकर उस कपड़े को उस्में तर कर लिया। दियासलाई अब बुझनेही पर थी कि सर विल्फ्रेड ने इस मसाल में आग लगा दी। इसके जलतेही उन्होंने प्रकाश में और बहुत से सिंह देखे। इतने में सर विल्फ्रेड की दृष्टि एकपिंजरे पर पड़ी, जिस्का द्वार खुला हुवा था; और वे मशाल घुमाते उसी ओर चले। मशाल की चिनगियों से सिंघ लोग हट गये परन्तु तो भी धंसे आते थे। इसी तरह ये लोग पिंजरे के दरवाजे पर पहुँचे, सिंह भी अब इनके बहुतही निकट आ गये थे परन्तु उनकी एक मशाल के घुमावते फिर सब को पीछे हटा दिया।

सर विल्फ्रेड चाहते थे कि पिंजड़े में घुसजावें! पर हाय! यहक्या अनर्थ हुवा! उनलोगोंने उधर देखा तो पिंजड़े के भीतर भी एक सिंह को बैठे पाया जो अपने शिकारों के आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

इकतीसवाँ बयान।

यह समय वास्तव से बड़ाही कठिन था। और यही अव-सर सर विल्फ्रेड की बुद्धिमानी और वीरता की परीक्षा का भी कहा जा सक्ता है।

पाठकगण विचारें! कि एक दर्जन अर्थात् १२ भयानक पशु; और भयानक पशु भी कौन,—सिंह, तो इन्हें बाहर से घेरे हुये हैं, और वह स्थान कि जिस्के भीतर जाने से इनकी प्राण रक्षा होती है इनसे केवल ६ कदम पर है। परन्तु उस समय इनकी क्या अवस्था हुई होगी कि जब इनपर यह विदित हुवा होगा कि जिस स्थान पर उनके प्राण बचने को थे वह भी एक भयानक सिंह से जो इन्हें टुकड़े २ करने को बैठा है रुँधा हुवा है।

परन्तु वाहरे तेरा जिगरा! सर विल्फ्रेड के साहस ने इस समय भी उनका साथ न छोड़ा। उन्हों ने मशाल तो हेक्टर के हाथ में थँभा दी कि वह इस्से बाहरवाले सिंहों को डेराता रहे और स्वयं बन्दूक हाथ में लेकर पिंजड़ेवाले सिंह का टीका (माथा) ताका और एक के उपरान्त दूसरी तीन फायेर कीं! हे भगवान! उस समय उस्के तड़पने तथा गरजने का क्या पूछना था। साफ यह मालूम होताथा कि इसने अब पिंजड़े को तोड़ा और अब तोड़ा। बाहरवाले सिंह भी खूब गरजे और सब एकत्रित होकर इनपर टूटनेही को थे कि सर विल्फ्रेड ने

हेक्टर को पिंजड़े के भीतर खींच लिया और साथही एक वार गोली का इन शेरों पर भी किया जिस्से वे लोग कुछ पीछे हट गये, और तब इन्होंने पिंजड़े का द्वार तुरन्त दृढ़ता से बन्द कर लिया।

मशाल बुझ गई। ये लोग भय से पिंजरे के बीच में बैठे रहे। सिंहों का क्रोध इस समय उबला पड़ता था। यद्यपि उस अन्धकार में इन्हें एक सिंह भी नहीं दिखाई देता था पर तौ भी उनकी चमकती आँखें उनके स्थान का पता दे रही थीं। तीन सिंहों ने एक वारगी धक्का दिया जिस्से वह पिंजड़ा हिल गया। और उलटते २ बच गया। तीसरी वार बहुत से सिंहों ने मिलके धक्का दिया जिस्से वह पिंजड़ा सचमुच उलटही गया और निकट था कि सिंह अपना पंजा डालकर किसी की बाँह चबा जावें कि सहसा किसी बड़े फाटक के खुलने का झन्नाटा सुनाई दिया और लगभग १२ देवों वे हाथों में मशाल उठाये भीतर आते दिखलाई दिये। इनलोगों को देखकर सर विल्फ्रेड कहने लगे "हेक्टर! मुझे इन वैरियों को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, सम्भव है कि हमलोग बड़ीही दुर्गति से मारे जावें, परन्तु इस्से तो वह अच्छी होगी"।

उन देवों ने आतेही पिंजरे को घेर लिया और फिर सब मिलकर उसे खींचते हुये बाहर ले चले और फाटक फिर पहलेही की भाँति बन्द हो गया।

जब सर विल्फ्रेड बाहर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि दिन चढ़ आया था और एक बड़ा झुण्ड देवों का बाहर खड़ा था जो इन्हें देखतेही बड़ाही कोलाहल मचाने लगा।

इनके खींचनेवाले इन्हें खींचते हुये लाकर एक सुन्दर कोठरी के द्वार पर ठहरे, और तब इन्हें पिंजरे से निकलने को इशारा किया। जब ये लोग पिंजरे के बाहर निकल आये तो इनसे हथियार माँगे गये जिसे दोनों ने बे कुछ कहे सुने दे दिया।

अब इनको लेकर वे लोग एक दूसरी ओर चले और कुछही दूर पहुँचकर इनलोगों को एक चहारदीवारी मिली जिस्के भीतर पहुँचने पर इनलोगों ने देखा कि यहाँ भी एक बहुत बड़ा लोहे का पिंजड़ा रक्खा हुवा है और उसी में फिलिप कप्तान और टैंक बन्द हैं।

बत्तीसवाँ बयान।

पिंजरे का द्वार खोला गया और हेक्टर तथा सर विल्फ्रेड भी उसी में डाल दिये गये। यह कौन नहीं जानता, कि इनलोगों की भी स्वतन्त्रता अब हवा हो गई, और यह दोनों भी कैदी बनाये गये। परन्तु उस समय का कैदी बनना स्वतन्त्रता के आल्हाद से कहीं विशेष था। कप्तान जोली ने जिन्होंने अपने सच्चे मित्र को बिलकुल मुरदा समझ लिया था सर विल्फ्रेड को

देखतेही गोद में उठा लिया और उछल पड़े ! आँखों से आँसू भी निकलते जाते थे। इसके परान्त सर विल्फ्रेड जब निश्चिन्तता से बैठे तो उन्होंने सब अपनी बीती कह सुनाई। जिसे सुनके सब बड़े आश्चर्य में आये। बेचारा टैंक जिसने अबतक किसी से बातही न की थी क्योंकि उस्की बात का कोई समझनेवालाही न था, अब सर विल्फ्रेड को पाके बड़ा प्रसन्न हुवा और उसने उन देवों के आगे की भी इच्छा कुछ बताई। जिसे सर विल्फ्रेड ने तर्जुमा करके अपने मित्रों को सुना दिया और उसे सुन्तेही सब बड़ेही दुखी हुये।

कप्तान—अरे यार, विल्फ्रेड ! और तो जो कुछ है वह हैही, परन्तु ये राक्षस किसी को भोजन इत्यादि का दुःख नहीं देते। कैसे अच्छे भोजन इन्होंने खिलाये हैं कि वाह जी वाहः—सब पुष्ट चीजें ! एक से एक उत्तम !

सर विल्फ्रेड—पुष्ट के भरोसे न रहियेगा आपही पर इनलोगों के दाँत हैं, भला हमलोगों को तो मोटे होते २ कुछ दिन चाहियें परन्तु आप तो बहुतही शीघ्र उनके इच्छानुसार मोटे हो जावेंगे और फिर—"

कप्तान—(काँपकर) ऐं ! क्या कहा ? अजी मतलब यह कि तुम्हारा मतलब क्या है इस बात से ?

सर विल्फ्रेड—जी हमारा मतलब ये है कि आप के कबाव बड़े अच्छे होंगे।

कप्तान—(जोर से) अरे ! यह बात है ! हाय रे ! हैं ! हाय रे ! अब मैं क्या करूं, मैंने वह सब खाया क्यों ! उफ्फोह बड़े बुरे फंसे ! एक तदबीर; बस एक तदबीर है। मैं अब के किये देता हूं। बस यही ठीक है। मेरी हड्डियाही गले जो फिर ऐसे खाने को हाथ भी लगाया हो। तनिक सर विल्फ्रेड इस्तरफ तो आ जाओ ! अजी इधर २ मैं वहाँ के करूंगा—

सर विल्फ्रेड—परन्तु अब जाइये के करने की ऐसी आवश्यक्ता नहीं है जो होना था सो हो गया, हाँ आगे के लिये ध्यान रखियेगा और असल बात तो ये है कि मुझे यह शीशा छोड़ के तुम्हारी दो घड़ी की दिल्लगी देखनी थी।

कप्तान—जी अब मैं किसी एक की तो सुनूंगा नहीं। यह जबही टौंक ने केवल चावलही खाये थे, पुष्ट चीजों को छूवा तक नहीं।

इस्के उपरान्त भोजन आया और सब ने केवल फल तो खा लियें परन्तु और सामग्री जैसे; नारियल, शराब शहद और माँस इत्यादि को हाथ से भी न छूवा, यह देख वे जङ्गली बहुतही व्यग्र हुये।

दिन में बहुत से झुण्ड देवों तथा देवनियों के इन कैदियों को देखने के लिये आये। उन देवनियों को देख के कप्तान साहब को डहोमी स्त्रियाँ याद आ गईं। वास्तव में वह मर्दों को भी भय दिलानेवालीं स्त्रियां बड़ीही भयानक थीं इन में से कोइ भी सात फीट से तो कम लम्बाई की थी ही नहीं।

दोपहर ढल चुका है। तो भी बारह के उपरान्त अभी एक न बजे होंगे कि सहसा इमनलोगों के पिंजड़े से कुछ दूर एक भयानक कोलाहल होता सुन पड़नेलगा, और फिर इस्के उपरान्तही एक. देवों का झुण्ड आता दिखलाई दिया .जिस्के आगे २ एक देवनी वड़ीही विकलता. से विलाप करती पिंजड़े की ओर वढ़ती दिखलाई दी। ये लोग आके पिंजरे के निकट ठहरे। और वहुत देर तक उस औरत तथा उन देवों में लड़ाई तकरार होती रही। इस्से प्रतीत होता हुवा था कि वह स्त्री जो कुछ कहती थीं वह उन देवों को स्वीकृत न था; कि सहसा वह स्त्री पिंजरे के और निकट आई और कप्तान जोली की नाक पकड़ ली!

कप्तान साहव का तो उस्की इस्वात पर रक्तही सूख गया और जोर से चिल्ला उठे "छोड़, तेरा सत्यानास होये! उफ कितनी जोर से नाक पकड़ी है, इसे हटाओ यहाँ से—"।

अस्तु इनकी तो वह सुन चुकी परन्तु अव उस देवों के झुण्ड ने वड़ाही कोलाहल मचाना प्रारम्भ किया। परन्तु वह स्त्री अपनीही कहे जाती थी! अन्त उनमें से एक लम्वा देव आगे वढ़ा फिलिप की ओर इंङ्गित करके कुछ उससे कहा, परन्तु स्त्री ने अपनी गरदन हिला दीं। जिसपर उस देव ने कुछ क्रोध से कहा, परन्तु उस्के मुंह से क्रोध युक्त शब्द निकलतेही स्त्री ने तड़ से उस्के गाल पर एक तमाँचा

सही किया। जिसे खाकर और गाल सुहलाता फिर वह अपने झुण्ड में जा मिला और उस स्त्री ने पिंजरा खोलकर तुरन्त कप्तान साहब को निकाल लिया।

कप्तान साहब का तड़पना फड़कना उस समय बिलकुल बेकाम हुवा, उस औरत ने इन्हें अपने कन्धे पर डाल लिया और आगे चली। कप्तान साहब सहायता के लिये गला फाड़ने लगे और सर विल्फ्रेड उठे भी परन्तु इन्हें एक जङ्गली ने फिर पिंजड़े में ढकेल दिया और उसका द्वार बन्द कर दिया।

सर विल्फ्रेड—(चिल्ला के) मित्र ईश्वर पर भरोसा रक्खो; आशा से मुंह मत मोड़ना उसमें बहुत कुछ सामर्थ है।

वह स्त्री अन्त कप्तान साहब को लेही गई और वह हबशियों का झुण्ड आखिर लाल पीला होता और अपना सा मुंह लिये एक ओर को चला गया।

कप्तान साहब के जाने के उपरान्त ये लोग बहुतही उदास हो गये।

सर विल्फ्रेड—ईश्वर जोली को बचाये, यद्यपि उसके बचने की आशा तो बहुत कम है परन्तु न जाने क्यों मेरे चित्त में आप से आप यही बात उठती है कि वह बच जायगा। देखिये आगे किस के सिर पर—"

अभी यह बात उनकी समाप्त भी न होने पाई थी कि दो देव पिंजड़े के निकट आये और द्वार खोल कर सर विल्फ्रेड

का दोनों हाथ पकड़ कर उठाया और वाहर निकालकर खीं-चते हुये एक ओर ले चला।

बत्तीसवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड को जाता देखकर सब रोने लगे। सब को यह निश्चय होगया कि राक्षस इन्हें मारकर खाने के लिये ले जा रहे हैं, और आजन्म अब इनके साक्षात् की आशा नहीं! हमारे सर विल्फ्रेड, कुछ अपने मित्रों को सम्बोध दिलाते, दिलही दिल पछताते, परन्तु दृढ़ता से पैर उठाते, उन हबशियों के साथ हो लिये।

वे हबशी इस चहारदीवारी से निकलकर जिस में कि पिंजड़ा रक्खा था, बहुत से द्वारों में घुसते और दाहिने बाँये मुड़ते एक सीढ़ी के निकट आ खड़े हुये। यहाँ से फिर वे लोग ऊपर चढ़के एक लम्बी चौड़ी दालान में आये जिस्में बहुत से जङ्गली एकत्रित थे। दालान से भी होकर ये लोग आगे बढ़े और अब सीढ़ियों से होते हुये एक बड़े कमरे में पहुँचे, जिस्के सामनेही किसी दरवाजे पर एक खूबसूरत परदा पड़ा हिल रहा था। सर विल्फ्रेड के लानेवाले इसी दरवाजे के पास आके ओर अपनें हथियारों को एकबार खड़खड़ा के खड़े हो गये। इनके खड़े होतेही तुरन्त दो हथियारबन्द हबशी भीतर से नि-कले और सर विल्फ्रेड को लेकर फिर भीतर लौट गये।

भीतर पहुँचकर सर विल्फ्रेड ने देखा कि वे बाहर से छोटे परन्तु एक प्रकार के बड़े कमरे में थे। जिस्की खिड़कियाँ मैदान की ओर खुली थीं। कोठरी में और सामान्य वस्तुओं के अतिरिक्त, दो पलङ्ग बिछे हुये थे जिस्में से एक पर तो एक देव मुंह हाथ लपेटे पड़ा था और दूसरे पलङ्ग का बैठने वाला सर विल्फ्रेड को देखतेही उठा और कई कदम इनकी ओर बढ़ा।

सर विल्फ्रेड यह देखकर दङ्ग हो गये कि वह व्यक्ति जो इनकी ओर बढ़ रहा था एक अंग्रेज था, जिस्की उम्र लगभग ५० वर्ष के होगी। इस अंग्रेजी व्यक्ति की कमर सोच और दुःख से कुछ झुक भी गई थी। इसके चेहरे पर झुर्रियाँ भी पड़ चली थीं। इसने बढ़कर सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ लिया और बड़ेही तपाक से उनसे मिला।

सर विल्फ्रेड - मैं अनुमान करता हूं कि राल्फ हालडन नामी एसिपाहि (भ्रमण करनेवाले) आपही हैं?

वह — हाँ वह अभागा मनुष्य मैंही हूं। परन्तु आप कौन हैं? मुझे आश्चर्य है कि आप यहाँ क्यों आये?

सर विल्फ्रेड — मेरा नाम सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री है कदाचित् आपने— सुना होगा — परन्तु यह क्या — हाँ"

राल्फ ने जैसेही सर विल्फ्रेड का नाम सुना वैसेही उनका चेहरा पीला हो गया बदन काँपने लगा नेत्र पथरा से गये, सहसा इसी अवस्था में वे पीछे गिरनेही को थे, परन्तु सर विल्फ्रेड ने तुरन्त आगे बढ़के उन्हें संभाल लिया। सर

विल्फ्रेड की सहायता के निमित्त वे दोनों हब्शी जो गारद के भाँति वहाँ पर नियुक्त थे बढ़े, परन्तु सर विल्फ्रेड ने इशारे से उन्हें रोक दिया और फिर वे अपने स्थान पर जा खड़े हुये। इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने जेब से ब्राण्डी की बोतल निकाली और कुछ बून्दें उस्की तुरन्त बेहोश आदमी के मुंह में डाल दीं जिस्से कुछही देर उपरान्त उन्हें होश आ गया।

राल्फ आपके नाम से कोई विशेष बात मेरे चित्त पर नहीं हुई, वरन् इस अचाञ्चक की प्रसन्नता ने मेरे हृदय पर एक कड़ी ठोकर पहुँचाई कि आज बीस वर्ष के उपरान्त मुझे एक अपने देशवाले की सूरत तो दिखलाई दी है। अच्छा अब जिस बात के निमित्त आप बुलाये गये हैं उसे सुनिये और देखिये (ठंढी साँस खींचकर) हाय! देखिये इस्का परिणाम क्या होता है।

सर विल्फ्रेड अच्छा मुझ से स्पष्ट रूप से कहिये कि मैं किस निमित्त बुलाया गया हूं।

यह सुनकर राल्फ हाल्डेन सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ कर दूसरे कोच (चारपाई) के निकट ले गये इसी के निकट दोनों बैठे और फिर राल्फ ने ऐसे कहना प्रारम्भ किया।

राल्फ—इस कोच पर का पड़ा हुवा मनुष्य इस भयानक नगर का अधिपति शाह मेंगो है। यह जङ्गली हर एक वस्तु की विशेषता के कारण इस अवस्था को पहुँच गया है, और अब इस्के मृत्यु में कुछही कसर बाकी है। संसार की कोई दवा अब इसे आरोग्य नहीं कर सक्ती, परन्तु इस्के पहिले कि मैं आपसे

और कुछ कहूं, मैं अपना वृत्तान्त भी आप से कह सुनाना अच्छा समझता हूं। परन्तु हाँ मेरी बातों को सुनती समय आप इशारा साह मैंगो की ओर करते जाइयेगा और सुनने के समय ऐसा आकार रखियेगा मानो आप रोगी के बारे में कोई बात सुन रहे हैं—

तब, आप पर यह तो भली प्रकार विदित होगा कि मैं भ-रक्युरी नामी गुब्बारे में सवार होकर इधर आया था यह गु-ब्बारा नदी नाइजर के निकट एक अरब की गोली से बरबाद हो गया। मैं अपने साथी सहित गुब्बारे से नदी में जारहा, वह तो डूब गया परन्तु मैं वहाँ से किसी तरह प्राण बचाकर किनारे पर आतेही दुष्ट अरबों के हाथ में पड़गया जो मुझे बोरन ले गये, और फिर वहाँ से लाके शेड झील के निकट के रहनेवालों के हाथ बेच दिया। मैं सात वर्ष पर्यन्त उन लोगों के साथ रहा। इस जाति का नाम बुदमा था। कुछ दिनों के उपरान्त उस बुदमा जाति और वहीं की एक और निकट रहनेवाली जाति के साथ लड़ाई हुई जिस्में मैं पकड़ लिया गया। उस जाति का नाम; जिस्में कि मैं पकड़ लिया गया, तोरिगा था। छः वर्ष पर्यन्त उन लोगों में मैंने अनेक दुःख सहन किये हाँ इस्के उप-रान्त एकदिन मेरे फूटे भाग्यों ने पलटा खाया। तोरिगा जाति का राजा किसी रोग से पीड़ित हुवा और मैंने उस्की दवा करनी प्रारम्भ की। भाग्य की बात! राजा ने कुछही दिनों के उपरान्त आरोग्यता लाभ करी। फिर तो मेरी चाँदी थी ऐसे आनन्द से

कटने लगी कि जिस्का मुझे कभी स्वप्न में भी ध्यान न हुआ था। इसी तरह मुझे उस जति में रहते आठवाँ वर्ष बीता। यह तो खुली बात है कि सुख की घड़ी बहुतही शीघ्र व्यतीत होती है अभी मैंने वहाँ कुल दोही वर्ष आनन्द से काटे होंगे कि इन देवों से और तोरिगा जातिवालों से समर की ठहर गई! खूब मार काट हुई! अन्त यही देव जीते और जीत के सायही साथ मुझे भी पकड़ के यहाँ ले आये। यहाँ आने पर सुना कि यहाँ का भी राजा बीमार है तुरन्त एक बात चित्त में आई, सोचा कि औषधी करो, यदि राजा आरोग्य हो गया तो बेमौत मारे जाने से तो बचेंगे, यही सोच के दवा प्रारम्भ की थी। दवा ने असर भी किया था राजा बहुत कुछ अच्छे भी हो गये थे परन्तु इन राक्षसों से परहेज कब किया जाता है, माँस इत्यादि का भक्षण जो बुरी तरह से प्रारम्भ किया तो रोग फिर बढ़ गया और इसे इस अवस्था को पहुँचा दिया। अब कोई आशा जीवन की नहीं पाई जाती! इस जाति के हकीम और जादूगिरों ने भी उत्तर दे दिया है। मुझे अब केवल ३ दिन का अवकाश मिला है यदि इसमें राजा को अच्छा कर लिया तो ठीक! नहीं तो बुरी मृत्यु से मारे जांयगे।

सर विल्फ्रेड—परन्तु यह तीन रोज की कैद कैसी लगाई है इस्के क्या अर्थ हुये?

राल्फ—इस जाति के जादूगिरों ने भविष्यवानी की थी कि बादशाह फलानी तारीख को मर जांयगा और वह तारीख

परसों है। यदि इस तारीख पर्यन्त अच्छा हुवा तो तो कुछ नहीं, नहीं तो ईश्वर मालिक है।

सर विल्फ्रेड—परन्तु अब क्या हो सक्ता है? तीनदिन तो नहीं तीन वर्ष का भी समय मिले तो बादशाह नहीं बच सक्ता! हमारी जान तो यह केवल २४ घण्टों का मेहमान है। इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने अपनी रामकहानी छेड़ी, मुसीबतें औ उनसे प्राण बचाकर यहाँ लों आने का सब वृत्तान्त कह सुनाया हाँ हेक्टर का हाल इन्होंने कुछ सोचकर छिपा रक्खा क्योंकि अभी २ वे उस चोट से सचेत हो चुके थे जो राल्फ हाल्डेन को, इनके देखने के कारण (या किसी प्रकार) लगी थी। फिर भला वह कैसे सहसा कह सक्ते थे कि उनका लाल उनसे इतना निकट आ गया है।

बातचीत सब अन्त को पहुँची। अब सर विल्फ्रेड राल्फ हाल्डेन अपने और अपने साथियों के छुटकारे के बारे में सोचने लगे और बड़ी देर लों वह स्वतन्त्रता की राहों पर ध्यानही ध्यान में घूमते रहे।

तेंतीसवां बयान।

हाल्डेन – सर विल्फ्रेड! शाही गार्ड, यह जो दोनों इस कोठरी में खड़े हैं शुबहा कर रहे हैं। कहिये मैं आपकी ओर से उन्हे क्या उत्तर दूं? क्या मैं साफ २ वही उनके सामने दोहरा जाऊं जो अभी २ आप मुझसे कह चके हैं और इसतरह अब

आगे के जीवन से एकदम निरास हो जावें ? और फिर मर्द एक बात तो है कि हमलोग नित्य २ के भय से तो छुटकारा पा जाँयगे।

सर विल्फ्रेड—(कड़ाई से) नहीं; उन से कहो कि अभी हमारे फैसले का अन्त नहीं हुवा और उसके अन्त होने के लिये थोड़ा अवकाश और मिलना चाहिये।

यह सुनकर हाल्डेन ने दोनों हब्शियों को सर विल्फ्रेड की बात से सचेत करादिया जिसे उन्होंने प्रसन्नता से सुन लिया और तब फिर राल्फ सर विल्फ्रेड से आगे की तदबीरों के बारे में पूछते हुये उनके निकट आ बैठे।

सर विल्फ्रेड—सुनिये महाशय, इसके पहिले कि मैं कुल आशाओं को छोड़कर अपने को मृत्यु के भयानक पंजे में सौंप दूं यह मैं जाना चाहता हूं कि इस मकान की जिसमें कि हम इस समय बैठे हैं किस प्रकार की बनावट है।

हेल्डेन—यह मकान चौखूटा बना हुवा है। इसके बीचों बीच एक बड़ा * मदौवर कमरा है जिसको आपने अभी देखाही है। इस बड़े कमरे के चारों कोनों पर चार कोठरियाँ बनी हुई हैं औ इन्हीं एक कोठरी से दूसरी कोठरी पर्यन्त चारों ओर बरामदे भी बने हुये हैं। अच्छा तो उन चारों कोठरियों में जो सीढ़ियाँ बनी हुई हैं वह चार भिन्न २ सड़कों पर

* मदौवर अर्थात् वह कमरा जिसके चारों ओर कोठरियाँ या बरामदा घूमा हो और वह बीच में हो।

जाके निकलती हैं और जिनपर हर वक्त मनुष्यों के खानेवालों की एक भीड़ एकत्रित रहती है। और मैं जहां तक अनुमान करता हूं और यहाँ के पत्थरों पर की लिखावट से पाता हूं वह यह है, कि यह महल उन बादशाहों का है जिन्होंने इसे कुछ सौ वर्ष पूर्व बनाया था और यहाँ शासन करते थे पर यह नहीं कह सक्ता कि कैसे इसपर इन राक्षसों का अधिकार हो गया।

सर विल्फ्रेड—परन्तु इस महल का कोई गुप्त पथ भी तो है ।

हेल्डेन—ठीक है, जिससे आप ने इसमें प्रवेश किया था और जो महल के पिछवाड़े बाग के सामने की दीवार में है। इससे यदि कोई महल से जाया चाहे तो सिंहों के रहने का स्थान छोड़ कर फिर श्रोता मिलेगा और फिर वह राह सीधे उसे नदी तक पहुंचा देगी। और यह राह उन सड़कों से बिलकुल नहीं मिलती जो कोठरी से उतर कर मिलती है।

सर विल्फ्रेड—अच्छा तो इसके नीचे जाने अर्थात् महल के नीचे पहुँचने की राह उन कोठरियों के सिवा और कहीं से नही है!

हेल्डेन—ऐसा नहीं, दो राह और हैं यद्यपि यथार्थ में एकही राह ठीक कही जा सक्ती है। मेरा तात्पर्य प्रथम तो इन दोनों खिड़कियों से है जिन से कूद कर मनुष्य ५० फीट की ऊँचाई से नीचे राक्षसों के बीच जा सक्ता है, परन्तु इस परिश्रम से कोई फल नहीं, इसी लिये मैंने इस राह की गिनती नहीं की।

सर विल्फ्रेड—और दूसरी राह कौन है?

इसपर हेल्डेन ने बे परवाही से कहा "उसे भी मैं कहता हूं। क्या आप उस द्वार को देखते हैं जो आप से कुछ अन्तर पर दाहिने ओर की दीवार में बना है यह एक छोटी सी कोठरी का द्वार है जिस्में बादशाह की विशेष वस्तु रक्खी हुई हैं, और यह विशेष वस्तु कुछ लूट का माल है जिसे उसने अन्य जातिओं से पाया है। हां तो इस छोटी कोठरी की छत के बीचों बीच एक खिड़की की भांति पत्थर है जो हटाया जा सक्ता है। शेर का कमरा ठीक उसी कोठरी के नीचे है न जाने कितने बेचारे उसी छेद से गिराये जाकर भूखे शेरों का भोजन बन गये!

सर विल्फ्रेड—भला शाह लागोस की लूट की वस्तुओं में से कोई काम लायक भी है।

राल्फ—एक भी नहीं सब रद्दी! और उसमें हैही क्या; कुछ टूटे झंडे, थोड़ी सी टूटी बन्दूकों की नलें और कोट, कुछ अंगरेजी सिपाहियों की फटी पुरानी वर्दियाँ और एक टूटा हुआ बोतलों का सन्दूक, बोतलों सहित है।

यह सुन्तेही सर विल्फ्रेड चौंक पड़े और एक बेर स्थिर दृष्टि से कोठरी की ओर देखा और फिर राल्फ हाल्डेन से पूछने लगे।

सर विल्फ्रेड—हाल्डेन (कुछ ठहर कर) भला तुम यह भी कुछ कह सक्ते हो कि हमारी छिनी हुई बन्दूकों का क्या परिणाम हुआ।

हाल्डेन—उसमें से दो तो—"

यह कह कर उन्होंने बहुत धीरे से उन दोनों शाहीगाडीं की ओर आँख घुमाई जिस्का तात्पर्य यह था कि दो बन्दूक इनके पास है और इसके उपरान्त फिर उन्होंनें कहना प्रारम्भ किया "परन्तु यह मैं नहीं जानता कि वे इसका व्यवहार भी जानते हैं या नहीं।

सर विल्फ्रेड—बिलकुल नहीं, वे इसका व्यवहार बिलकुल नहीं जानते, क्योंकि यदि वे इसका व्यवहार जानते तो कारतूस हमारे पास फिर भला काहे को छोड़ देते अच्छा तो अब सुनो हाल्डेन (इसके उपरान्त वह बहुत ही धीरे २ बात करने लगे) यह तो तुमपर प्रगटही है और प्रगट कैसा इसका निश्चय ही है कि हम लोग इस समय अनेक प्रकार की आपत्तियों में घिरे हुये हैं और उनमें से निकलने की राह बिलकुल बन्द दिखलाई पड़ती है। परन्तु इसके साथही साथ हमको अपने और अपने साथियों का ध्यान रख के अन्तिम दम तक पूरा २ उद्योग छुटकारे के निमित्त करना होगा। हमने अपने चित्त में भागने का एक अच्छा मैदान बाँधा है परन्तु उसके लम्बे बिस्तार में दो एक ऐसी बातें आ पड़ती हैं कि जिस में वह पूरा नहीं पड़ता। परन्तु उन बातों या कठिनाइयों में और तो पीछे देखा जायगा सबसे आवश्यकीय बात तो अभी हमारे सामने आ पड़ी है और जिस्से छुटकारा केवल आप की थोड़ी सहायता से ही

सक्ता है, और वह यह कि तुम इतनी बात इन दोनों खड़े हुये शाही गार्डों से कहो कि मैं और मेरे साथी वास्तव में एक बड़े भारी वैद्य हैं परन्तु हम लोगों का बल कुछ उसी समय अच्छी तरह दिखाई देता है जब हम सब एक स्थान पर एकत्रित होते हैं; अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सक्ता। इस लिये हम लोगों को वे इस सामने वाली कोठरी में तीन दिवस पर्यन्त बन्द रक्खें जिस्के उपरान्त उनका बादशाह अवश्य बच जायगा और नहीं तो वह मृत्यु के मुंह में तो है ही। बस प्यारे हाल्डेन इसी बात को भली भांति उन्हें समझा दो। और मैं जहांलों अनुमान करता हूं वे भी इस बात से मुंह न मोड़ेंगे।

हाल्डेन—मैं भी ऐसाही अनुमान करता हूं परन्तु आपके साथियों में कप्तान जोली आपका साथ नहीं दे सक्ता क्योंकि वह अब इस जाति की एक जबरदस्त स्त्री के हाथ पड़ गया है और इस देश की यह रीति है कि जिस स्त्री के पति को कोई व्यक्ति मारता है तो वह स्त्री फिर उसी मारनेवाले के गले का हार होती है। कप्तान ने कदाच् उस्के पति को मारा होगा इसलिये उन्हे वह अपना पति बना के रक्खे होगी और अब स्वयं इस देश के शासनकर्ता भी उस्का कुछ नहीं कर सक्ते।

यह सुनकर सर विल्फ्रेड देखने में तो चुप हो गये परन्तु दिलही दिल कहने लगे कि चाहे कुछ क्यों न हो, और चाहे

कैसेही आपत्तियों से सामना क्यों न करना पड़े परन्तु मैं अवश्य कप्तान को इस विचित्र रुकावट से छुटकारा दिलाऊंगा।

हाल्डेन—परन्तु हाँ! कुछ राहें ऐसी भी हैं कि जिससे वे बच सक्ते हैं। अस्तु! वह तो समय पर देखा जायगा इससमय एक आवश्यकीय बात यह है कि जिस प्रकार हो आपके साथियों को यहाँ लाना चाहिये कारण यह कि शाह लागोस के भयानक रूप से पीड़ित रहने के कारण यहाँ की राक्षस प्रजा निशङ्क हो गई है दुष्टों ने अन्धेर सा मचा रक्खा है ईश्वर जाने कौन राक्षस और कब आकर आपके साथियों में से किसी को उठा ले जाय (देखकर) परन्तु अब ये शाही गार्ड के दोनों जवान उकताये हुये से जान पड़ते हैं अब मैं इनसे जाकर आपकी बातें कहता हूं।

यह कहकर राल्फ हाल्डेन उठे और उन हबशियों से जाकर उपरोक्त बातें कहनी प्रारम्भ कीं। हमारे सर विल्फ्रेड तब से बड़ीही उत्सुकता से उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछही क्षणों के उपरान्त राल्फ हाल्डेन उनलोगों से वे बातें कहकर लौटे और उन्हों ने सर विल्फ्रेड को हबशियों का यह उत्तर सुनाया।

हाल्डेन—वे लोग इसबात को अपने भविष्य स्वामी से कहा चाहते हैं और तबसे आप को उसी कैद में रहना होगा। परन्तु प्यारे सर विल्फ्रेड भय मत करो मर्दों का सा साहस करो। सब बातें हमलोगों के इच्छानुसारही होंगी।

अब उत्तर देने का समय कहाँ था राल्फ के यह कहते २ दोनों सिपाही आगे बढ़े और जल्दी से सर विल्फ्रेड को लेकर इस कमरे के बाहर पहुँचा दिया । यहाँ वही दोनों पहलेवाले जंगली खड़े थे जिन्होंने सर विल्फ्रेड को तुरन्त अपने बीच में कर लिया और आगे बढ़े ।

इस समय सूर्य अस्त हो चुके थे आकाश में लालिमा छिटक रही थी और उसके नीचे पृथ्वी पर अन्धकार बढ़ता जाता था! यहां लों कि अब दूर की कोई वस्तु स्पष्ट रूप से नहीं दिखलाई पड़ती थी !

सर विल्फ्रेड अपनी आई हुई राह पर लौट कर अपने साथियों में पहुँच गये । भला इस समय इनके मिलने से जो उनके साथियों को प्रसन्नता हुई होगी वह कौन कह सक्ता है? वे लोग खड़े हो गये और बार २ सर विल्फ्रेड के गले लगने लगे क्योंकि इन्हें तो वह अपने हिसाब मुरदाही समझे हुये थे।

"मैं तुम लोगों से एक सुसमाचार कहने वाला हूं" यह उन्होंने उस समय कहा जब उनके साथियों ने अपनी पूरी प्रसन्नता प्रगट करने के उपरान्त उन्हें कुछ बोलने का अवकाश दिया।

सर विल्फ्रेड—परन्तु हेक्टर ! सब से कुछ विशेष प्रसन्नता तुम्हें इस समाचार के सुन्ने पर होगी । मेरे प्यारे ! मैं तुम्हारे पिता से अभी २ भेंट करके चला आता हूं ।

यह सुन्तेही हेक्टर सहसा पीला हो गया और क्षणैक के निमित्त अचेत सा हो गया परन्तु फिर पिंजड़े का सहारा लेकर

तुरन्त संभला और चिल्ला के कहने लगा। "मेरे पिता ! ईश्वर धन्य ! वह हैं कहाँ महाशय ? और कुशल से तो हैं ?"

सर विल्फ्रेड—वह बड़े आनन्द से हैं हेक्टर ! हाँ बुढ़ापे के लक्षण तो अवश्यंही स्थान २ से उनके शरीर में झलकते दिखलाई पड़ते हैं। परन्तु तुम उनसे बहुतही शीघ्र साक्षात करोगे।

फिलिप—(सर विल्फ्रेड से) तो क्या आपने उन पर यह भी प्रगट कर दिया कि आप कौन हैं ?

यह प्रश्न करती समय फिलिप के शब्दों से एक प्रकार की विचित्रता टपकती थी।

सर विल्फ्रेड—हाँ मैंने सभी कह दिया परन्तु कारणवश यह मैंने छिपा रक्खा कि तुम्हारा पुत्र तुम से इतना निकट है। कारण यह कि मैंने यह तो अनुमान करही लिया था कि थोड़े काल में वह अपने पिता के सामने होगा।

सर विल्फ्रेड ने स्पष्ट रूप से कह दिया, कारण यह कि उन बेचारे को फिलिप के इस छल से भरी बातों की क्या खबर थी।

जब हेक्टर इत्यादि चुप हुये तो सर विल्फ्रेड ने सब वृत्तान्त उस भागने के मनसूबे सहित सब से कह सुनाया, परन्तु यह न प्रगट किया कि वह भागने की राह कौन सी है।

सर विल्फ्रेड—प्रातःकाल पर्यन्त तो ये जङ्गली हमलोगों को लेने आते नहीं इसलिये रात भर आनन्द से सब कोई सो

लो ! और आनन्द के अतिरिक्त यह नींद हम लोगों को प्रातः काल के कामों के निमित्त भी तो ताजादम बना देगी, जिसके द्वारा इस भयानक नगर और यहाँ की प्रजा से छुटकारा मिलेगा।

टॉंक़ तो यह सुन्तेही एक कोने में जा लेटा और बहुत जल्द खर्राटे लेने लगा। सर विल्फ़ेड़ ने पिंजड़े का पेंदा गड़ने के कारण अपनी फतुही उतार कर उसकी तकिया बनाई और उसे सिरहाने रख यह भी आनन्द से सो गये। हाँ हेक्टर तथा फिलिप दोनों जागते रहे और इधर उधर की बातें करते रहे। इससमय हेक्टर तो अपनी पीठ ठीक दरवाजे के ओर किये बैठा था और फिलिप उसके सामने; अर्थात् अपना मुंह दरवाजे के ओर किये बैठा था। फिलिप बराबर दरवाजे पर उन संतरियों को पहरे पर देख रहा था जो लम्बा छुरा लिये इधर से उधर टहल रहे थे। कुछ देर के उपरान्त फिलिप ने देखा कि वे दोनों देव जो पहरे पर थे एक स्थान पर बैठ कर उँघाने लगे और फिर क्षणेक के उपरान्त पृथ्वी पर लोट कर सो गये। यह देख कर फिलिप ने उधर ध्यान भी न किया और वह हेक्टर से अपने तथा अपने साथियों के छुटकारे के बारे में बात चीत करता रहा।

बात चीत करते २ सहसा फिलिप की दृष्टि दो देवों पर पड़ी जो बहुतही चैतन्यता से पृथ्वीं पर चपट कर रेंगते हुये उन दोनों सोये हुये संतरियों के बीच से पिंजड़े की ओर बढ़ रहे थे। दोनों जंगली मादरजाद नंगे थे केवल इनके क़न्धे पर ज-

नेऊ की तरह दो चौड़े चमड़े लटक रहे थे जिनसे लगे हुऐ दो लम्बे २ छुरे बार २ पृथ्वी से लग के चमक उठते थे। इन लोगों का काम ऐसे स्थान पर और यों दबे पैर आने से सिवाय इसके और क्या हो सक्ता था कि कैदियों में से किसी को अपने भोजन के निमित्त पकड़ ले जावें।

यह मालूम करतेही फिलिप की आँखों में एक विचित्र और डेरावनी चमक पैदा हो गई इस्के उपरान्त वह एकदम पीला पड गया और यहाँ लों वह पीला हुवा कि हेक्टर ने वहां के फैले हुये अन्धकार में भी इस अवस्था को भली भाँति देख लिया और आश्चर्य से पूछने लगा।

हेक्टर—क्या है भाई?

फिलिप—कुछ नहीं; अब मुझे नींद आती है, और मैं सोने जाता हूं।

यह कह कर, वह सर विल्फ्रेड के बगल में अपने चेहरे को दोनों हाथों से छिपा कर जा लेटा और फिर दम साध ऐसे खर्राटे मारने लगा मानो घण्टों का पड़ा सो रहा है।

हेक्टर उस्की यह अवस्था देख कर और भी आश्चर्य में आया और चाहता था कि फिलिप से इसबारे में कुछ पूछे कि साथही कैदखाने के दरवाजे के पहिये की घूमने की खरखराहट सुन पड़ी : और हेक्टर ने इसे सुन कर पीछे देखने को गरदन फेरी ही थी, कि दो बलिष्ट देवं इसपर टूट पड़े इस्का मुंह दृढ़ता

से बन्द कर दिया गया और वे उसे गोद में लेकर पिंजड़े के बाहर निकल गये।

पैंतीसवाँ बयान।

बेचारा हेक्टर उस समय भली भाँति उन दोनों के हाथों में फँस गया था केवल एक घर्राटा तो उसके मुंह से सुनाई दिया परन्तु फिर वह एक शब्द न बोल सका। सर विल्फ्रेड इत्यादि तो वास्तव में घोर निन्द्रा के वशीभूत हो रहे थे परन्तु फिलिप यद्यपि जागता था और इस घटना को देखता था परन्तु तौभी कुछ न बोला और न स्वयमही उसनें किसी प्रकार की सहायता अपने साथी की की बरन उधर से उसने दृष्टिही फेर ली।

हेक्टर की दृष्टि से भी कुछ यह छिपा न था और उस्की इस चाल पर तुरन्त उसके चित्त में यह शंका उपस्थित हुई कि फिलिप ने निश्चय हमारे साथ दगा की है वह निस्सन्देह जागता था परन्तु हमारी सहायता उसने क्या न की? इसका तात्पर्य क्या है? वह कदाच इस भय से न दम साधे पड़ा हो कि कहीं उसे भी देव लोग उठा न ले जावें। परन्तु हमलोगों के दूर हटने पर अवश्य अपने साथियों को जगा देगा।

हेक्टर का रक्त इस ध्यान के आतेही चक्कर खाने लगा। और उसने एक अन्तिम उद्योग बड़ीही मेहनत से उन देवों के हाथों से छूटने का किया परन्तु खेद का विषय है कि

वह बच्चों के समान बड़ीही सरलता से उनके हाथों में दबा लिया गया और उनके एकही झटके से इसके सब उद्योग निष्फल हो गये।

दूर निकल जाने पर वह भय देवोंके चित्त से जाता रहा, और जायाही चाहे क्योंकि अब कोई ऐसी वस्तु उनके सामने न थी जिस्से उन्हें भय होता।

जङ्गली यहाँ कुछ देरतक ठहरे रहे और फिर एक ऐसे स्थान से होकर चले कि जिस जगह अग्नि जल रही थी और उस्के चारों ओर बहुत से जङ्गली पैर फैलाये सो रहे थे। यहाँ से वे और आगे बढ़कर एक संकरी और अन्धकारमय गली में पहुँचे, और इस्में से भी होकर अब एक सन्नाटी परन्तु चौड़ी सड़क पर से जाने लगे। दोनों, सड़क के दाहिने और बाँये ओर के साये में से इताना छिप २ के और धीरे २ चल रहे थे कि मानों कोई बिल्ली अपने शिकार पर घात लगाये दबे पाँव आगे बढ़ी जाती है। इनलोगों ने योंही लगभग एक चौथाई के जब इस सड़क को खतम की होगी तो दाहिने ओर एक घनी झाड़ी दीख पड़ी जिस्के काँटो की कोई परवाह न कर दो चार देव और भी उस्के भीतर बैठे हुये थे।

वे देव इन देवों और उनके हाथों में का शिकार देखकर बहुत प्रसन्न हुये। बहुतही कूद फाँदकर वे लोग भी इनके साथ हो लिये, और फिर जब यह मण्डली हेक्टर

को लिये एक ओर को जल्दी २ जाने लगी । और उनके आगे बढ़ते हुये प्रत्येक पग पर हेक्टर की हिम्मतें पिसी जाती थीं होते २ वह अन्त एकदम निराश हो गया ।

यह ध्यान उसे और भी अधमुवा किये डालता था कि ये लोग आगे उसे कहाँ लिये जाते हैं ? और किस मृत्यु से इसे मारेंगे ? साथही उसे जब फिलिप का ध्यान आता तो वह दाँत पीसने लगता जिसने इतने दिनों की मित्रता पर यों पानी फेर कर इतना बड़ा पाजीपना इसके साथ किया था जो सम्भव नहीं कि एक अनजान मनुष्य भी किसी मनुष्य के साथ करेगा।

जब उसे वह दोनों जङ्गली बराबर हाथों पर उठाये आगे बढ़े जाते थे और वह अपने इन्हीं सब ध्यान में डूब रहा था तो उसकी दृष्टि सहसा सामने जा पड़ी तो देखा कि हमलोग एक सुनसान मैदान में जारहे हैं जिसमें कहीं कहीं वृक्ष भी लगे दिखलाई पड़ते हैं इसके उपरान्तही एक मकान इसे दिखलाई दिया अब हेक्टर को स्मरण हुवा कि कदाच मैंने इस स्थान को इसके पूर्व भी एकबार देखा है ।

यह अनुमान उसका कुछही काल के उपरान्त अनुमान से बदल कर निश्चय के स्वरूप में हो गया ।

अब मनुष्य के खानेवालों का झुण्ड ठहर गया और हेक्टर को हाथों पर से उतारकर पृथ्वी पर खड़ाकर दिया । हाय! हेक्टर ने अब अपने को कहाँ खड़ा पाया और उसके सामने क्या था ? इसने अपने को ठीक उसी द्वार के सामने खड़ा पाया

जिस्में कि कुछ घण्टे पहले यह और कप्तान घुसे थे और उस्में जाकर यह मालूम हुवा था कि "यहीं राक्षस मनुष्यों को लाकर भून के खा जाते हैं"

* * * * * * *

अब यह भी तो आवश्यकीय है कि हम हेक्टर का वृत्तान्त छोड़कर उन कैदियों की ओर फिरें जो अपने एक साथी को गँवा कर पैर फैलाये सो रहे हैं।

इनलोगों के नेत्र खुले तो कब, कि जब प्रातःकाल की हलकी-२ सुफेदी कैदखाने के चारों ओर फैल रही थी। देव लोग भोजन के निमित्त चिल्ला रहे थे।

पहिले तो सर विल्फ्रेड और टैंक जागे इस्के उपरान्त फिलिप सामान्य रीति से अँगड़ाई लेता आँखे मलता उठा और इधर उधर देखकर तथा रात की घटना स्मरण करके सिरसे पैर तक काँप गया।

हमारे सर विल्फ्रेड ने उठतेही पहिले अपने साथियों पर दृष्टि की तो उनमें से हेक्टर को न पाया। यह देखतेही उनका माथा ठनका और उन्होंने दोनों से इस्बारे में पूछा।

भला टैंक इस बारे में क्या जानता था जो कुछ बतलाता। हाँ फिलिप यह कहने लगा कि मैं और हेक्टर दोनों आपलोगों के सो जाने के उपरान्त जागते रहे। कुछ देर के उपरान्त जब मुझे नींद आने लगी तो मैं तो सो रहा परन्तु हेक्टर

कैदखाने के द्वार की ओर पीठ किये जागताही रहा, फिर इस्के उपरान्त मुझे यह नहीं मालूम कि क्या हुवा।

यद्यपि फिलिप ने इसे बड़ीही सफाई से कह सुनाया परन्तु अन्तिम शब्द कहते २ उस्का चेहरा पीला पड़ गया, और उसे सर विल्फ्रेड ने उस्के भय का कारण समझा। फिर वह कहने लगे:—

"नादान बालक ने अपने हाथों अपनी मृत्यु खरीदी। उसे अवश्य राक्षस अपनेभोजन के निमित्त लेगये हैं, और अब इसबारे में शाह लागोस भी कुछ नहीं कर सक्ता। परन्तु क्या जब वे उसे ले जाते होंगे तो हमलोगों में से एक भी न जागा। मुझे बड़ाही खेद है, प्रथम तो उस्के जाने का और दूसरे उस मनसूबे के टूटने, या कम से कम उस्में कुछ विघ्न पड़ने का, जिसे हमलोगों ने अपने छुटकारे के निमित्त ठीक किया था। अब यदि दो दिवस के भीतर वह लौट आया तो ठीक है नहीं फिर उस्का यहाँ से निकलना दुष्कर हो जायगा। अब फिलिप तुम एकबात का ध्यान रक्खो कि जब हमलोग शाह लागोश के यहाँ से बुलाये जाँयगे तो इसबात को राल्फ हाल्डेन से बिलकुल छिपा रक्खेंगे, जबलों कि हेक्टर के बारे में कोई निश्चय बात न सुन पड़े, मैं राल्फ से एक दूसरा किस्सा गढ़ कर समझा दूंगा।

फिलिप—बहुत अच्छा महाशय! आप निश्चिन्त रहियें कुल बातें आप के इच्छानुसारही की जावेंगी।

उधर गारद के सन्त्री इस घटना तथा अपनी चूक पर बड़ेही घबड़ाये हुये थे। उनका बार २ इधर उधर आना जाना तथा अपने मित्रों को बाहर की ओर भेजना और फिर उनका बिना हेक्टर या उस्के किसी समाचार के लौट आना यह सब जना रहा था कि ये लोग भी हेक्टर के मिलने का पूरा उद्योग कर रहे हैं परन्तु अभी तक सब निरर्थकही होता है।

सूर्योदय के एक घंण्टे के उपरान्त उत्तमोत्तम भोजन कैदियों के सामने लाये गये जिन्हें इनलोगों ने बड़ीही इच्छा से खूब पेट भर के खाया, खा पीकर जैसेही ये लोग बैठे हैं, वैसेही शाही फौज के ६ जवान एक ओर से आ पहुंचे और फिर तीनों कैदियों को पिंजड़े या उस कैदखाने से निकाल कर बाहर किया।

सर विल्फ्रेड—अब हमलोगों को वह, एक विशेष समय मिलनेवाला है जिस्से कि कदाच फिर इस मनहूस पिंजड़े की सूरत न देखनी पड़ेगी।

और यथार्थ में बात ऐसीही थी। तीनों कैदी सिपाहियों के बीच में आगे बढ़ने लगे और फिर उन्हीं रास्तों से होते हुये जिसपर कि कल सर विल्फ्रेड लाये गये थे ये सब कोठरी में पहुँचा दिये गये जिसमें शाह लागोस मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ था, और जिस्के निकटस्थ की पत्थर की चारपाई पर बैठे हुये राल्फ हाल्डेन इन लोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे। सर विल्फ्रेड ने पहुँचतेही पहले यही बात कही—

"हमारें साथियों की गिनती एक के निकल जाने सें घट गई और वह एक बड़ाही वीर तथा युवा पुरुष था" ।

हाल्डेन—(बात काट कर बड़े खेद से) हाँ मैंने भी वह दुखदाई घटना सुन ली है। और अब आप भी उस बुरे समाचार का परिणाम सुन लीजिये । रात के समय आप के संन्तरी सो गये और मैं जहाँलों अनुमान करता हूं उसी समय कुछ राक्षस आये होंगे और आप के साथी को पकड़ कर नगर के उजाड़ प्रान्त की ओर ले गये होंगे और फिर पूरी आशा है कि वहां ले जाकर उसे खा भी गये होंगे। राजा और न्याय का भय तो दुष्ट प्रजा के चित्त से एक दम उठही गया है और मुझे यह भी तो आशा नहीं है कि वे राजा की ओर से किसी प्रकार का दण्ड भी पावें ।

यह सुन्तेही सर विल्फ्रेड के नेत्रों से आँसुओं की लड़ियां निकलने लगीं । दयावान अर्ल (राजा) बड़ेही दुःख से दुखी होकर रोने लगे ।

सर विल्फ्रेड—(रोते २) हे परमेश्वर ! मृत्यु ने उसके साथ यह क्या किया ? बेचारा लड़का ! परन्तु मैं आशा करता हूं कि अब भी वह जीवित होगा ।

हाल्डेन—मैं भी तो यही कहता हूं कि आप आशा रक्खें, परन्तु (कुछ सोच कर) नहीं आप उसे मिटा दें कारण यह कि फिर उस ध्यान से आप के आगे के कामों में बड़ाही विघ्न पड़ेगा । आपने कल जो बात कही उसे जाति के बड़े बड़े

मनुष्यों ने स्वीकार की और हम लोगों को तीन दिन का अवसर मिला है कि जिसमें हम राजा को चंगा कर दें। उसकी आज प्रातः काल से एक तरह की बीमारी न तो घटीही है और न कुछ बढ़ीही! और एक बड़ाही बुरा समाचार सुन लीजिये। सिंह लोग आज के दिन से भूखे रक्खे जाते हैं कि यदि कहीं हम लोग तीन दिन में राजा को चंगा न कर सके तो वे हमें उनका भयानक आखेट बनने के लिये उनके पिंजड़े में छोड़ देंगे और भयानक सिंह तुरन्त नोच २ कर भक्षण कर जांयगे।

और दूसरी ओर यदि तीन दिवस के उपरान्त हम लोग राजा को जीवित रख सकेंगे तो वही दण्ड जो हमलोगों को मिलने को है जाति के जादूगर और डाक्टरों को जिन्हों ने भविष्यवाणी की है मिलेगा।

सर विल्फ्रेड—(शान्त स्वभाव से) इसका दुःख कि मैं जीवित रहूंगा वा मर जाऊँगा मुझे कुछ भी नहीं है। परन्तु मैं और जो तीन जानों के बचाने का उद्योग करता हूं ईश्वर उसमें मेरी सहायता करेगा। मैं अब इस काम के करने पर उद्यत हूं। हालडेन! तनिक अब यह तो बताओ कि शाहलागोस की क्या अवस्था है और यह कि हमलोग अब उसे कितने दिवस पर्यन्त और जीवित रख सकेंगे?-मेरे पास ब्रांडी की आधी बोतल है यह तुम्हें मालूम है?

हाल्डेन—तो महाशय ! यह उसके निमित्त बहुत है, हमलोग उसे विशेष नहीं तो तीन दिवस लों तो अवश्यही जीवित रख सकेंगे ; परन्तु आप यह तो बतलाइये कि भागने की कौन सी राह स्थिर की है ?

सर विल्फ्रेड—अभी वह समय नहीं आया कि जिसमें मैं अपनी तदबीर बताऊं। सब से पहले, तो मुझे कप्तान जोली से एक बड़ाही आवश्यकीय काम करना है । और हां हाल्डेन ! यह तो बताओ कि इन तीन दिनों में कितने जंगली यह हमलोगों की कोठरी में रहेंगे ?

हाल्डेन—केवल यही दो जिनके पास कि बन्दूकें हैं, हाँ इनके अतिरिक्त कुछ तो बरामदा और कुछ सीढ़ी पर भी अवश्य होंगे ।

"भला वह देवनी कहाँ रहती है जिसने कप्तान जोली को फँसा रखा है ?" सर विल्फ्रेड का यह दूसरा प्रश्न था ।

हाल्डेन—हागाय ; इस जाति के एक श्रेष्ट पुरुष की स्त्री थी इसलिये वह शाही महल के नीचे सिंहों के कमरे के दाहिने ओर रहती है ।

सर विल्फ्रेड—अच्छा अब यह बताओ, कि वह दरवाजा जो सिंहों क कमरे का है ;—कैसा ? और किस वस्तु का बना है ?

हाल्डेन—यह केवल पत्थर के टुकड़ों का बनाया गया है परन्तु वह बहुत शीघ्र तथा सरलतापूर्वक घूम फिर सक्ता है ।

इस्के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने एक पेनसिल और एक कागज का टुकड़ा जिसे उन्होंने अपने रोजनामचे में से फाड़ लिया था निकाला और उस्पर कुछ सतरें लिखकर हाल्डेन के हाथ में दे दिया।

सर विल्फ्रेड—भला इसे तुम कप्तान जोली के पास किसी प्रकार भेज सक्ते हो? साथही रुक्का ले जानेवाला यह पिनसिल भी लेता जावै और कप्तान से उसी समय उत्तर ले ले! हमलोगों का सब मनसूबा केवल इसी के उत्तर पर निर्भर है।

हाल्डेन—अभी मैं इसे भेजता हूं इस्का भेजा जाना कुछ असंम्भवं नहीं है।

यह कह कर हाल्डेन ने वह पिनसिल तथा कागज शाही गारद के जवानों में से एक को दे दिया और उससे कुछ बातें कह दीं जिसे सुनकर वह तुरन्त कमरे के बाहर चला गया।

हाल्डेन—वह आपके इस रुक्के को कोई जन्त्र समझता है। उत्तर बहुत शीघ्र लावेगा।

छत्तीसवाँ बयान।

राल्फ हाल्डेन जब अपनी बात समाप्त कर चुके तो वह जङ्गली अपने जाने से १५ मिनिट के उपरान्त लौटकर पिनसिल कागज सहित आया, और उत्तर सर विल्फ्रेड के हाथ में दे दिया, जिस्पर उन्होंने बड़ीही गम्भीरता से दृष्टि डाली, और फिर उसे पढ़कर कहने लगे "अब सब दुरुस्त है"

इस्के उपरान्त ये लोग उस रोगी की चारपाई के निकट जमा हुये जो अपनीही करतूतों से प्यारी दुनिया को "विदा" कह रहा था।

उन दोनों शाही गार्ड के अतिरिक्त और कोई भी कमरे में न था, हां वही दोनों दीवार से सहारा लगाये और कुछ अपने हथियार पर आगे झुके हुये इन लोगों की ओर एक आश्चर्य युक्त दृष्टि से देख रहे थे।

सर विल्फ्रेड—हमारे भागने के मैदान का वह भाग जो एक जगह से खंडित हो गया था अब फिर ठीक हो गया, और अब मैं आप लोगों की कृपा से उस मैदान को पूरा पाकर अपने मनसूबे का एक २ शब्द कह सुनाता हूं।

"पहली बात हमलोगों को यह करना चाहिये कि इस बगलवाली कोठरी पर जिस्में से सिंहों का आखेट गिराया जाता है, इस बहाने से अधिकार कर लें कि हमलोग राजा के प्राणरक्षा के निमित्त उस्में एक मन्त्र जगावेंगे। फिर इस्के उपरान्त वह फिलिप की रस्सियों की सीढ़ी, जो उस्के फतुही और कोट के नीचे लपटी हुई है हमें बहुत कुछ सहायता देगी, और उन खाली बोतलों से भी एक बड़ा भारी काम निकलेगा उस्से मैं गोले तैयार करूंगा और वह इस प्रकार से कि जो कारतूस मेरे पास हैं उन्हें तोड़कर उनकी बारूद बोतलों में भरूंगा। और फिर उनके मुंह पर कड़ा डाट लगा-कर उस्में एक पलीता लगादूंगा चलिये बम के गोले तैयार हो गये

और आशा है कि जब ये आग लगाकर फेंके जाँयगे तो पृथ्वी तक जाने के पहिले कदापि न फूटेंगे। इस्में भी कोई सन्देह नहीं कि हम शाह लागोस को तीन दिवस लों जीवित रख सकेंगे और इतनेही काल में हमारी यह सब वस्तु प्रस्तुत हो जाँयगी। और फिर इस्के उपरान्त हमें एक विशेष समय भी भागने का मिलेगा कारण यह कि तीसरें दिन नगर के कुल देव महल के सामने अपने राजा को आरोग्य या हमलोगों की मृत्यु देखने के निमित्त उपस्थित होंगे। और जब वह समय आ जावेगा तो मैं एक विशेष चिन्ह कप्तान को भेजूंगा—जिसने मुझे लिखा है कि मैं स्वतन्त्रापूर्वक अपने मकान से निकल कर शाही महल के पीछे आ सक्ता हूं—अस्तु! शाही गारद का एक जवान तो रुक्का लेकर जायगा और दूसरा यहाँ अकेला रह जायगा जिसे हमलोग उसी समय अपने हाथ में करलेंगे और मारकर या बेहोश करके उसे एक ओर डाल देंगे। इस्के दस मिनिट उपरान्त या जब हो, कप्तान जब वह रुक्का पायेगा तो अवश्यही अपने को महल के पीछेवाले मैदान में पहुँचायेगा, जिस्के सामने अवश्यही सब राक्षस राजा के निमित्त जमा होंगे बस यह देख के कप्तान उसी समय सिंहों के कमरे के द्वार को जो उसी मैदान के सामने है खोलकर उसी के पीछे छिपकर खड़ा हो जावेगा। इधर जब वह गारद का दूसरा सिपाही लौटकर आयेगा तो उसे भी हमलोग तुरन्त अपने हाथ में कर लेंगे। और फिर इस्में से एक सिंहों के उस ऊपरवाले

छद से, रस्सी की सीढ़ी लटकाकर उतर जावेगा और समय की प्रतीक्षा करता रहेगा, जैसेही कप्तान उस्का द्वार खोलें वैसेही वह दियासलाई बम के गोलों में लगाकर सिंहों में फेंक दें। निस्सन्देह वह भयानक शब्द सिंहों को, खुले द्वार की ओर भगावेगा और वहाँ से वे देवों पर जा टूटेंगे।

सिंहों के बाहर निकलतेही हम सब उसी रस्सी से नीचे उतर जावेंगे जहाँ कप्तान भी हमें मिलजायगा अब यहाँ से हम-लोग बगीचे से होते हुये उस चोर दरवाजे से बाहर निकलेंगे जिस्का ब्योरा तुम्हीं ने हमसे बतलाया है। चोर दरवाजे से निकलतेही हम उस सड़क पर आगे बढ़ेंगे जो नदी की ओर जाती है और उसी के किनारे २ नगर के फाटक से बाहर होंगे और फिर वहाँ से मृत्यु की गुफा में पहुँचते क्या देर लगती है। मृत्यु की गुफा में पहुँचने पर यदि देवों का आक्रमण हमपर होगा तो हम इन दोनों बन्दूकों से अपनी रक्षा करेंगे और फिर पीछे हटते हुये इन तदबीरों से हमलोग इस कठिन जञ्जाल से छुटकारा पावेंगे।

फिलिप तथा राल्फ हाल्डेन ने बड़ीही गभीरता से इस मनसूबे को सुना। फिर इस्के उपरान्त फिलिप कहने लगा।

फिलप—आपके मनसूबे का कहनाही क्या है परन्तु ईश्वर जो कृतकार्य करे!

हाल्डेन—यह सब कप्तान जोली पर निर्भर है यदि हम में से

कोई बम का गोला तक लेके नीचे गया, और कप्तान ने द्वार न खोला तो सब बातें बेकाम ठहरेंगी।

सर विल्फ्रेड—यथार्थ में बात तो ऐसीही कुछ है परन्तु मेरा साहसी मित्र कभी ऐसे समय को हाथ से जाने न देगा।

फिलिप—और हाँ आप यह तो भूलही गये कि कप्तान साहब ने गुफा के भीतर का जो पुल तोड़ दिया है उस्का क्या होगा ?

सर विल्फ्रेड—उसे मैं बहुतही शीघ्र तैयार करलूंगा। अच्छा हाल्डेन ! अब अपने राक्षस मित्रों को उस कोठरी के खोलने के लिये कहो तबसे मैं शाह लागोस को देखता हूं।

शाह की अवस्था कलही की सी थी। वह एक सन्नाटे में था बोलने की सामर्थ उसमें बिलकुल न थी। वह एकही करवट पड़ा हुआ था उस्के नेत्र अधखुले रह गये थे। बस अब एक बाल बराबर भी उस्की अवस्था वर्तमान अवस्था से खराब हुई तो निसन्देह फिर इन गरीब पथिकों के प्राणों पर आ बीतेगी। शाह को देखने के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने टौंक से अपने मनसूबे को भली भाँति समझा दिया परन्तु वह जङ्गली मनुष्य कुछ तो समझ गया और बाकी के निमित्त योंही गरदन हिला दी।

इतनी देर में राल्फ हाल्डेन ने भी उन देवों को भली भाँति पट्टी पढ़ा दी जिसे उन्होंने तुरन्त स्वीकार करके उस कोठरी का द्वार जो एक बड़ी शिला से दबा हुवा था खोल दिया।

कोठरी के भीतर बड़ाही अन्धकार था इसलिये उनमें से एकने एक बड़ा भद्दा और धुवाँदार दीया लाकर एक कोने में रख दिया। अब सब स्थिर होगया, हाल्डेन तथा फिलिप तो शाह के निकट बैठे और सर विल्फ्रेड टैंक को लेकर कोठरी में चले गये और दरवाजा बन्द करके अपने काम में लगे।

यह कार्य बड़ाही कठिन था। पहले तो ये कारतूसों को बहुतही धीरे२ छूरी से खोल कर उसमें की बारूद बाहर निकालते थे। यह बारूद कुछ टूटी हुई बोतलों में जो उसी सन्दूक में से निकली थीं रक्खी जाती थी। और जब एक पूरे हद्द तक बारूद जमा हो जाती तो उसे बोतल में भरना प्रारम्भ करते और भली भाँति भर कर फटी वरदी का दृढ़ डाट बोतल पर लगादेते इस डाट में भी पलीता लगाते, जो पहलेही से बनाकर तैयार कर लिया गया था।

दिन भर टैंक और अर्ल (राजा) इसकाम में लगे रहे। हाँ बीच २ में आकर सर विल्फ्रेड, शाह लागोस और उसके गार्ड को देख जाते थे। इसी प्रकार काम करने में सन्ध्या पर्यन्त सात बम के गोले तैयार हो गये और अब दिन भर में ये लोग थक भी गये थे इसलिये बाकी का काम दूसरे दिन पर उठा रक्खा गया। अब इसतरह सर विल्फ्रेड की प्रत्येक बातें उनकी इच्छानुसारही होती चलीं परन्तु वे हेक्टर और उसके बुरे भाग्य के निमित्त बड़ेही दुखी थे उन्होंने बीच २ में फिर भी राल्फ से उसके बारे में प्रश्न किये परन्तु उस प्रश्न के उत्तर कुछ ऐसे मिले कि जिनसे इनकी आशायें टूटतीही गईं।

यह रात बड़ीही भयानक थी सबके सब शाह के रोग की ओर से भयभीत थे। परन्तु सर विल्फ्रेड के उत्तम प्रबन्ध ने थोड़ा २ सबको विश्राम लेने दिया और वे वारी २ शाह के पास बैठते और ब्राण्डी के बून्दों से उस्के जीवन के बुझते हुये दीपक को घड़ी २ उस्का देते।

नारायण २ करके प्रातः काल हुंवा और उस्की मुस्कराती हुई सुफेदी ने इनलोगों के चित्त को बड़ाही प्रसन्न किया। कुछ ही देर के उपरान्त उत्तमोत्तम भोजन कैदियों के निमित्त लाये गये जिसे इनलोगों ने इच्छापूर्वक खूब पेट भर कर खाया। इसके उपरान्तही बम के गोलों में पुनः हाथ लगाया गया और दिन के २ बजते २ ये १४ तैयार हो गये और अब इनकी गिनती, सर विल्फ्रेड का काम पूरा करने निमित्त बहुत हो गई।

सर विल्फ्रेड की दियासलाई भींगने के कारण कुछ निकम्मी हो गई थी इसलिये उन्हें कमरे में फैला दिया जिस्से वह तुरन्त सूखकर काम के योग्य हो गईं। इतने में इनलोगों को एक भयानक रव सुन पड़ा और जब इसपर ध्यान दिया गया तो जान पड़ा कि यह सिंहों की गरज है जो निचे की कोठरी से आती है। सर विल्फ्रेड ने परीक्षार्थ उस छेद पर के पत्थर को कई बार हटाया और रक्खा जिस्से इन्हें इस ओर से भी संतोष हो गया।

इस्के उपरान्त ये लोग शाह के पास गये जिस्की अवस्था यथार्थ में उस दिन बड़ीही रद्दी हो गई थी परन्तु ब्रांडी के

बून्दों से उस्के चेहरे पर लालिमा आ गई थी और जिसे देख कर गारद के सिपाही उस्के जीने की आशा कर रहे थे तो भी सर विल्फ्रेड और राल्फ बड़ेही भयभीत हो रहे थे। वे लोग एक के उपरान्त दूसरे बराबर शाह के पास बैठे रहते। इन दोनों के बैठने पर टौंक तथा फिलिप कोठरी में जाकर विश्राम करते।

कभी २ सर विल्फ्रेड उन खिड़कियों से झाँकने लगते जिस जगह बहुत से, राक्षस अग्निपर माँस सेकते और खाते दिखलाई पड़ते। हाल्डेन से बार २ गारद के जवान प्रश्न करते जिस्का कि उत्तर वह बहुतही शान्त रूप से देता। निस्सन्देह हाल्डेन भी चित्त का बड़ाही दृढ़ और साहसी व्यक्ति था, उस्की आँखें सर विल्फ्रेड के कानों पर लगी हुई थीं इतने में नीचे बड़ाही कोलाहल मचने लगा जिसे सुनके सर विल्फ्रेड ने पूछा—

सर हाल्डेन! खिड़की से देखो! यह कैसा कोलाहल है?

इस्समय दिनके चार बजे थे। हाल्डेन ने झाँक कर देखा और उत्तर दिया "राक्षस एकत्रित होने लगे, ये चौबीस घण्टा पहिलेही से एकत्रित हो रहे हैं और अभी से वह भीड़ है कि के सामने तिल रखने का स्थान नहीं है।

शाह की अवस्था प्रत्येक क्षण बुरीही होती गई! यहाँ लों कि सर विल्फ्रेड भी अब देखकर घबड़ा उठे और कहने लगे "हाल्डेन! हमलोगों को उद्योग करना चाहिये कि इसे रात का अन्धकार फैलते पर्यन्त जीवित रक्खें नहीं, तो बड़ीही कठिनता होगी।

यह लोग इस्के उपरान्त शाह के सिरहाने तथा पैताने. जा बैठे, उधर शाह की अवस्था देखकर और कुछ समझकर गारद के सिपाही भी भयावनी सूरत बनाये दरवाजे पर जा खड़े हुय। कोठरी के बाहर बहुत से जङ्गली टहल रहे थे जिनके पैर परदे के नीचे से इनलोगों को दिखलाई देते थे। वे सब बार २ परदे से लगकर झाँक रहे थे।

शाह लागोस की साँस बड़ीही कठिनता से अब भीतर बाहर हो रही थी। वह केवल उन्हीं ब्रांडी और जल के बून्दों से जीवित था जिन्हें सर विल्फ्रेड तथा राल्फ हाल्डेन बराबर उस्के होठों पर टपकाते जाते थे। बीच २ में रह २ के एक बड़ीही भयानक और काँपती हुई कमजोर आवाज रोगी के मुंह से निकल जाती। अब बात खुलजाने में कोई कसर न रह गई थी, परन्तु उसपर भी सर विल्फ्रेड की सावधानी ने अबलों गार्ड के नेत्रों परदा पड़ाही रहने दिया।

अब साढ़े चार बजे होंगे और अस्त होता हुवा सूर्य उन दोनों पश्चिमी खिड़कियों से झलकने लगा। सुर्ख और चमकी-ले पत्थरों से जड़ी हुई कोठरी सूर्य के पीले किरनों से चमकने लगी। और मानों उस चमकीली रोशनी ने रोगी और उस्की उस पत्थर की चारपाई को, जिस्पर वह सोया हुवा था सोने के पानी से नहला दिया।

राल्फ हाल्डेन अब उस खिड़की की ओर बढ़े जिस्में फिलिप तथा टौंक खड़े नीचे की बहार देख रहे थे और इधर

सर विल्फ्रेड शाह की चारपाई के नीचे बैठकर प्याले में जल तथा ब्रांडी की बून्दें मिला रहे थे कि सहसा उनके कानों में एक तीक्ष्ण कफ की खरखराहट सुन पड़ी।

सर विल्फ्रेड यह सुन्तेही घबड़ाकर उठ बैठे और मरते हुये शाह के पास उस्की चारपाई पर बैठ गये। उन्हें अब एक बड़ीही भयानक परन्तु सच्ची झलक रोगी के चेहरे से दिखलाई दी। शाह के मुंह से गाज या फेन के साथ वह ब्रांडी और जल की बून्दें जो, उसे पिलाई गई थीं निकलकर उस्की गरदन पर बहने लगीं, और एकही हिचकी के उपरान्त शाह लागोस मुरदा था।

सैंतीसवाँ बयान।

बादशाह के मरने पर जो २ आपत्तियाँ इनपर आनेवाली थीं, वह सब उनके नेत्रों के सामने घूम गईं और एक क्षण के निमित्त सर विल्फ्रेड अचेत थे।

हाँ जब वह भयानक समय कुछ आगेबढ़ा तो, इनकी बुद्धि ठिकाने हुई और यह सोचने लगे कि अब हमारे बाँधे हुये मनसूबे सब मिट गये। आपत्ति अब आयाही चाहती है हमलोग बड़ी बुरी मृत्यु से मरे! परन्तु फिर दूसरेही क्षण में इनके पहले के ध्यान में अन्तर पड़नेलगा। उन्हें शाहीगारदही से बड़ा भय था परन्तु उसे अंबलों जो निश्चिंतता से खड़े

पाया, तो इनके शरीर में फिर प्राणपवन आये। तो भी उनके हृदय में वह भयानक तस्वीरें आ आ के उन्हें डेरा देती थीं और उसका भाव इनके चेहरे से प्रगट हो रहा था जिसे छिपाने के निमित्त ये शाह के ऊपर मुँह नीचा किये झुके हुये थे।

अब जितना वह भयानक समय आगे बढ़ता जाता था उतनीही इनकी हैरानी मिटती जाती थी यहाँ लों कि सर विल्फ्रेड के चित्त में फिर वही छुटकारे का जोश दिखलाई पड़ने लगा। उन्होंने हाथ के दबाव से चीते के चमड़े को जो शाह के नीचे बिछा था खींचकर लाशके चेहरे के बराबर कर दिया, और फिर बड़ीही निस्तब्धता तथा शान्त रूप से ये सीधे खिड़की की ओर बढ़े। एक दृष्टिशाही गारद पर भी इन्होंने डाली जो उसी प्रकार चुपचाप खड़े थे, और उनके चेहरे से किसी प्रकार का चिन्ह न दिखलाई पड़ता था।

हाँ तो सर विल्फ्रेड आगे बढ़े, और तुरन्त हाल्डेन का हाथ पकड़ के एक कोने में ले गये; एक चाँदी का सिक्का देकर कहने लगे। "इसको कप्तान जोली के पास शीघ्रही भेजो, वह इसके मतलब को भली भांति समझ जायगा। शान्त रूप धारण करो! सावधान किसी प्रकार की उत्सुकता अपने चेहरे से न प्रगट होने दो"।

यदि हाल्डेन यथार्थ बात को समझे होता तो कदापि उसके आकार से इतनी व्यग्रता न झलकती, तो भी उसने बहुत कुछ छिपाया और चाँदी का सिक्का तुरन्त गारद के सिपाही को दे कप्तान के पास भेज दिया, जिसे वह लेकर और अपने साथी को

आश्चर्य करता छोड़कर शीघ्रता से बाहर चला गया।

फिलिप को इनबातों से कोई वास्ताही न था, वह बड़े आनन्द से खड़ा होकर खिड़कियों से दो राक्षसों की कुश्ती देख रहा था।

हुल्लड़ और मार पीट का शब्द सुनकर वह दूसरा गार्ड भी उस तमाशे के देखने के निमित्त खिड़की की ओर चला; और यह बात, सर विल्फ्रेड के इच्छानुसारही हुई।

गार्ड के खिड़की तक पहुँचते २ वह उसके पीछे जा पहुँचे, और उचक कर उस्की गरदन पर चढ़ गये, और तुरन्त अपने हाथ उस्की गरदन में लपेटकर एक कड़ा झटका पीछे की तरफ दिया, जिस्से वह घूमकर तुरन्त पृथ्वी पर गिर पड़ा; और इतनी कड़ी चोट उस पथरीले फर्श की उसके सिर में पहुँची कि वह तुरन्त अचेत हो गया। इस्के पहले कि वह अपना कोई अङ्ग हिलाये सर विल्फ्रेड के साथियों ने तुरन्त उसे छोप लिया और अपने पूरे २ बल से उसपर चढ़ बैठे।

सर विल्फ्रेड—इस्का मुंह बन्द करो! यह साबर का चमड़ा रक्खा है, इसे इस्के मुंह में ठूस कर उपर से पट्टी बाँध दो। हाल्डेन! तुम इस्की बन्दूक ले लो।

अब सर विल्फ्रेड को दूसरी बात कहने का समय न था, क्योंकि बाहर बरामदे में उस दूसरे गार्ड के आने की धमक सुन पड़ने लगी। इसपर सर विल्फ्रेड तुरन्त एक टूटी बन्दूक

का कुन्दा लेकर, जो दूसरी कोठरी से लाये थे दरवाजे के बगल में जा खड़े हुये।

अब पैरों के शब्द निकट आते जान पड़ने लगे, और अब और भी निकट आये, यहाँ लों कि दूसरे क्षण में उस दूसरे गार्ड ने परदा हटाया और कोठरी में प्रवेश किया, निकट था कि आनेवाला गार्ड अपने साथी को देखे, परन्तु इस्के पहलेही सर विल्फ्रेड ने कुन्दे का वह भरपूर हाथ उस्के सिर पर लगाया कि विना एक शब्द कहे वह भी भूतलशायी हो गया।

इस्के गिरतेही सर विल्फ्रेड ने तुरन्त इस्के पैर पकड़ कर रास्ते के किनारे कर दिया; और फिर परदे की झिंझरी से झाँक कर देखा तो मालूम हुवा कि बाहर के गार्ड बड़ीही निस्तब्धता से खड़े हैं।

सर विल्फ्रेड—अब दूसरी कोठरी! उसमें जल्दी चलो! शाह मर गया! और अब तक हमलोग अपनी होशियारी से बच रहे हैं। इन दोनों को यहीं पड़ा रहने दो इन्हें होश में आने के लिये एक बड़ा समय चाहिये।

यह कहकर सर विल्फ्रेड ने उस दूसरे सिपाही की बन्दूक भी ले ली और शीघ्रता से उस दूसरी कोठरी की ओर बढ़े, हाँ चलती समय शाह के शव (लाश) को भी देख लिया; जिस्के नेत्र खुले हुए थे, और मानों बड़ेही दुःख से वह उस कमरे

को देख रहा था, जिसमें कुछ मिनिट पहले वह अपने संसार के साथियों में से एक कहलाया जाने का अधिकारी था।

सर विल्फ्रेड के साथी भी, उनके पीछे हो लिये और सब मिलकर उस कोठरी में आये। आतेही अर्ल ने पहला काम यह किया कि छेद पर का पत्थर अपने अतुल बल का परिचय देते हुये उठा कर अलग रख दिया, और फिलिप तथा राल्फ ने उसे वहाँ से दूर कर दिया। पत्थरों के हटने पर जब प्रकाश शेरों के कमरे में पहुँचा तो वे जोर से गरज उठे।

सर विल्फ्रेड—अब सबसे आवश्यकीय कार्य यह है, कि इस पत्थर को कोठरी के दरवाजे पर लगादो; जो कम से कम एक आक्रमण उनदेवों का तो अवश्यही रोक सकेगा।

यह काम तुरन्तही परन्तु कुछ कठिनता के उपरान्त समाप्त हुवा और तब सरविल्फ्रेड ने जल्दी से एक बन्दूक की टूटी नली को आड़ा करके, उस छेद,वा चोरदरवाजे पर लगा दिया, और एक कोना रस्सी की सीढ़ी का दृढ़ता से उस नली के बीचों बीच बाँध दिया, और फिर सीढ़ी को पूरी लम्बाई में, जो शेरों की कोठरी के जमीन तक पहुँचती थी छोड़ दिया। इसके उपरान्त सरविल्फ्रेड ने अपनी जेबें तो बम के गोलों, और हाथ दियासलाई से भर लिये।

सर विल्फ्रेड—अब एक क्षण भी ठहरना बुद्धिमानी के विरुद्ध है मैं नीचे जाता हूं और वहाँ जाकर जब बम के गोले छोड़ूंगा तो चौदहों का शब्द गिनकर फिर तुरन्त तुमलोग बन्दूकों सहित

नीचे उतर आना । इतने में यदि एक आक्रमण द्वार के ओर से हो भी तो वह बन्दूकों से सम्भालना । हाँ अब इस्में भी कठिनता वा दुबधा है, तो कप्तान जोली के ओर से ; यदि वह समय पर न आ सके तो भली भाँति समझ रखना कि पृथ्वी का कोई बल भी हमलोगों के प्राण नहीं बचा सक्ता ।

सर विल्फ्रेड इस्के उपरान्तही उस छेद में उतर गये और सीढ़ी के डण्डों से एक २ करके नीचे उतरते जाते थे, यहाँ लों कि कोठरी के घोर अन्धकार ने सर विल्फ्रेड को उनके साथियों की दृष्टि से छिपा लिया ।

उस समय हमारे वीर अर्ल (राजा) के चित्त में जो बातें होंगी, उन्हें हम अपने प्रिय पाठकोंहीं के अनुमान करने के निमित्त छोड़ देते हैं । पहले तो उन्होंने एक दियासलाई जलाई, जिस्के प्रकाश में यह देखा कि हम पृथ्वी से १२ या १५ फीट ऊँचे हैं; और यह देखतेंही वे चुपचाप वहीं बैठ गये ; सिंहों की उछल कूद सुन्ने लगे, जो उनके आने से सूचित हो चुके थे और उनके नीचे प्रसन्नता से इधर उधर घूम रहे थे ।

केवल उसी एक डोरी पर सर विल्फ्रेड तथा उनके साथियों का जीवन निर्भर था । वह कितनीही बातें दिलही दिल अपने, कप्तान जोली, और उस्के कार्य के बारे में सोच रहे थे । वह सोचते थे, कि कदाच वह अपने स्थान से तो चला हो, परन्तु जङ्गलियों ने उसे महल के सामने आने की आज्ञा न दी हो;

या वह द्वार खोलही रहा हो ऐसे समय हवशियों ने देखकर उसे बन्दी कर लिया हो।

यही सब सोचते २ लगभग दस मिनिट के बीत गये यहाँ लों कि अब निराशा की भयानक मूर्त्ती उनके नेत्रों के सामने झलकने लगी, और वह अपने चित्त में निश्चय कर चुके कि हमारा मनसूबा बिलकुल बरबाद हो गया। प्रत्येक क्षण उनके चित्त में, ऊपर से हवशियों के पैरों का शब्द, भयानक चिघाड़, और बन्दूकों की घननाद सुनने, की आशंका उपस्थित होती थी, क्योंकि उन्हें यह मालूम था कि शाह की यथार्थ अवस्था हवशी अब जानाही चाहते हैं।

सर विल्फ्रेड यही सब सोचते थे कि सहसा एक शब्द सुन पड़ा जिसे सुन्तेही सर विल्फ्रेड चौंक पड़े, चाहते थे कि ऊपर चढ़ें और अपने साथियों के बुरे भाग्य में साथ दें, परन्तु साथही उस शेरखाने का बड़ा फाटक पहियों की खड़खड़ाहट के साथ घूम कर खुल गया और एक हलका प्रकाश उस अन्धकार में फैल गया। एक सरसरी दृष्टि में सर विल्फ्रेड पर यह भी विदित हो गया कि बाहर बहुत से जङ्गली एकत्रित हैं परन्तु द्वार के निकट कोई भी नहीं। आह! इससमय इनकी प्रसन्नता का क्या कहना? तुरन्त इन्होंने बम के गोलों में आग लगाना और नीचे फेंकना प्रारम्भ किया। परमेश्वर तेरी शरण! उन बम के गोलों के भीषणनाद के साथही साथ उन सिंहों की दहाड़ कैसी प्राण सुखानेवाली थी। धुँवा कोठरी में छा गया

और वे भयानक पशु गरजते हुये द्वार की ओर भागे और उसके बाहर हो गये।

एक हर्षनाद सर विल्फ्रेड ने किया और फिर तुरन्त रस्सी की सीढ़ी से उतर कोठरी में आये। अभी इन्होंने पृथ्वी पर पैर रक्खेही थे कि कप्तान जोली बाहर से झपट के आये और अपने मित्र के गले से लग गये। अब यह समय उनसे बात चीत करने का न था। उधर फिलिप सब से पहले सीढ़ी पर से उतरने लगा, और इधर सर विल्फ्रेड तुरन्त उस बड़े फाटक को, जिसे जोली ने खोला था बन्द करने के निमित्त बढ़े।

कोठरी के बाहर, महल के सामनेवाले मैदान में भयानक दृश्य उपस्थित था। पन्द्रह भूखे सिंह एक के उपरान्त दूसरे जङ्गलियों पर टूट रहे थे और जो सामने मिलता फाड़ते जाते थे। देव रक्षा का स्थान इधर उधर ढूंढ़ रहे थे; और उन मनुष्यों की चिल्लाहट कान फाड़े डालती थी जिन्हें सिंह फाड़ रहे थे।

सर विल्फ्रेड के द्वार बन्द करके लौटने तक फिलिप नीचे उतर आया और इसके उपरान्तही टौंक भी; परन्तु राल्फ हाल्डेन अबलों छेद पर न आये थे, और जैसेही सर विल्फ्रेड ने उनका नाम लेकर पुकारा वैसेही केवाड़ों में धक्के के शब्द सुन पड़े और फिर एक धमाके के उपरान्तही बहुत से पैरों के शब्द और जङ्गलियों की चिंघाड़ें सुन पड़ने लगीं। इन्हीं चिंघाड़ के साथही दन्नाटा हुवा! और फिर वही भयानक शब्द सुन पड़ा,

और फिर भी ! जिसने बन्दूक के तीन फायर होने की सूचना इन लोगों को दी।

सर विल्फ्रेड—(चिल्लाके) मैं अभी ऊपर जाता हूं और हाल्डेन की सहायता करूंगा।

जैसेही उन्होंने ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ी पर पैर रक्खा वैसेही छेद में अँधेरा आ गया और हाल्डेन शीघ्रता से नीचे आने लगे। वह प्रत्येक डंडो पर पैर नहीं रखते थे वरन हाथों पर झूलते हुये जल्दी २ नीचे आये, और अभी जब ये पृथ्वी से दस फीट के निकट ऊँचे होंगे, तभी रस्सी की सीढी छोड़ दी और धम से नीचे कूद पड़े।

हाल्डेन—(जल्दी से) भागो ! वे आते हैं।

साथही ऊपर एक अन्धकार आ गया और एक देव नीचे उतरने लगा।

सर विल्फ्रेड—जल्दी सब मिलकर रस्सी की सीढ़ी को पकड़ो और नीचे खींचो।

इस्के उपरान्तही सबने मिलकर जोर लगाया और पूरी २ ताकत से रस्सी जो खींची गई, तो बन्दूक की नली की गाँठ खुल गई ! और सीढ़ी उस देव सहित जो ऊपर से नीचे आ रहा था, नीचे आ रही।

अड़तीसवाँ बयान ।

सर विल्फ्रेड ने तुरन्त दियासलाई जलाई और उस देव के चेहरे को देखना प्रारम्भ किया, जिस्की गरदन, उतने ऊँचे से गिरने के कारण टूट गई थी ।

ईश्वर जाने कितने प्रकार के पशुओं के चमड़े वह अपने शरीर पर लपेटे हुआ था। उस्के सिर पर सिंह के कान लगे हुये थे, और उस्की चौड़ी छाती तथा चेहरा, भिन्न २ प्रकार के रङ्गों से रङ्गा हुवा था ।

सर विल्फ्रेड—ईश्वर की सौगन्द ! कैसा भयानक तथा बलिष्ट देव यह है । यह अवश्य इस जाति के जोतिषियों और जादूगरों में से है यह हमलोगों को सिंहों के कमरे में डालने के निमित्त आया था । वह अपना होंठ क्रोध से चबा २ कर हमलोगों को घूर रहा है परन्तु अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है शीघ्र बाहर चलो !

वे लोग शीघ्र शेर की कोठरी में से, उसद्वार की ओर से निकले, जिस्में से कुछ दिन पहिले सर विल्फ्रेड तथा हेक्टर अचाँचक घुस आये थे । यह चोरद्वार ठीक उस बड़े फाटक के सामने था, जिसे जोली खोलकर अभी २ भीतर आये थे । यहाँ से निकलकर वे लोग श्रोता के पार हुये, जिस्का शब्द कप्तान ने सुनकर हेक्टर को जल के निमित्त भेजा था । इस चस्मे से पार होकर ये लोग बाग की टूटी दीवार से बाहर निकले । इनके

सामने वा इधर उधर कोई राक्षस नहीं दिखाई देता था ! चारों ओर सन्नाटा था।

सर विल्फ्रेड ने फिलिप से बन्दूक ले ली, और दूसरी बन्दूक लिये हुये हाल्डेन भी उनके साथ २ हो लिये। फिलिप टौंक, तथा कप्तान, इनलोगों के पीछे थे; और सबके सब नदी के किनारे २ शहर के बाहर की तरफ भागने लगे।

सर विल्फ्रेड—हमलोगों को शायद यह नदी पार करनी होगी। फिलिप! सुस्त मत चलो, यदि तुम पकड़ जाओगे तो तुम्हारे पास रस्सी भी रह जायगी, और फिर हमारे भी हाथ पैर बेकाम हो जाँयगे।

इनलोगों ने चलते २ दूर से एक पुल देखा, और फिर कुछ देर तक वहीं ठहर गये।

सर विल्फ्रेड—क्या हमलोग उसपार पहुँच कर जङ्गलियों की पहुँच से बाहर हो जाँयगे। परन्तु नहीं यह ठीक न होगा वे लोग तुरन्त तैर कर हम तक पहुँच जाँयगे इसलिये उतना समय नष्ट जायगा। बस अब सीधे उत्तर की ओर चले चलो; हमलोग वहाँ नगर का फाटक पावेंगे और उसी से साफ निकल जावेंगे।

यह मनसूबा ठीक हुवा, और वे लोग फिर आगे भागे रास्ते में बिलकुल सन्नाटा मिलता गया।

सर विल्फ्रेड—आश्चर्य है कि हमलोगों के पीछे बड़ाही सन्नाटा है! क्या यह संभव है कि हमारा पीछा न किया जाता हो।

हाल्डेन—हामारी जान तो उनलोगों को सिहों ने चल विचल कर डाला होगा पहले तो वह अपनीही प्राणरक्षा कर रहे होंगे हाँ इस्के उपरान्त फिर हमलोगों के पछि भी अवश्यही आवेंगे। देखिये भाग्य क्या दिखलाता है।

कप्तान—चलो चलो, शीघ्र चलो! (आपही आप) ईश्वर की सौगन्द जोली! तुम्हें शीघ्रता करनी होगी नहीं तो (जोर से) यारों अबकी पकड़े जाने के उपरान्त फिर कप्तान के पाने की आशा मत करना। अजी मैं तो आत्महत्या करने पर था। मेरी हड्डियाँही गल मैं मर जाने पर था। वह बड़ीही भयानक राह थी जिस्से वह देवनी मुझे क्लेश पहुँचाती थी।

सर विल्फ्रेड—(हँसकर) उसने तुम्हारे साथ क्या किया जोली?

कप्तान—जी यह अनमोल बात भला ऐसे मैं बतानेवाला हूं?

सर विल्फ्रेड ने इस्के उपरान्त कुछ विशेष प्रश्न न किये, क्योंकि प्रथम तो अन्धकार बढ़ता जाता था दूसरे कप्तान साहब इनका साथ छोड़कर फिलिप के साथ दौड़ने लगे; जिसने इनके जाने के उपरान्त से, अपने ऊपर की पड़ी हुई कुल आपत्तियों का वृत्तान्त कह सुनाया। कप्तान साहब को उसमें से हेक्टर का हाल सुनकर बड़ाही दुःख हुवा, और यह दुःख कुछ सर विल्फ्रेड के दुःख से कम न था, और यह सुन उन्होंने तुरन्त कसम भी खाई, कि अब जो ये राक्षस मिलेंगे तो मैं अवश्य उनसे हेक्टर का बदला लूंगा!

नगर यह भाग का जिसमें कि यह लोग जा रहे थे पीछे के मुक़ाबले बड़ाही उजाड़ था। स्थान २ पर भाड़ भंखाड़ लगे हुए थे जिनमें छोटे २ जङ्गली पशु इधर से उधर भागे जाते थे।

शहरपनाह की दीवार तक पहुँचते २ बड़ाही अन्धकार छा गया। अब दीवार तो मिल गई परन्तु वहाँ कहीं फाटक न दिखाई देता था। बड़ी ढुँढ़ाई के उपरान्त एक खाई का छेद दिखाई दिया, जो कदाच् भीतर से वर्षा का ज़ल आनेके निमित्त बना हो। अस्तु! उसी में से एक २ करके हमारे बीर पथिक बाहर निकले।

बाहर निकलने पर ये लोग किले की दीवार से बिलकुल सटकर चलने लगे, और फिर आगे बढ़ कर कुछ दाहिने हाथ को मुड़े, जिस्के सामनेही एक पहाड़ी की चढ़ाई थी और इनलोगों ने दृष्टि जमाकर जो देखा तो जान पड़ा कि यह वही पहाड़ी है, जिसपर चढ़कर हेक्टर तथा उस्के साथियों ने पहले पहल लाल नगर को देखा था: और विशेष आनन्द दायक बात तो यह मालूम हुई कि अब उन्हें नदी भी नही पार करनी थी।

वे लोग कुछही देर में पहाड़ी पर पहुँच गये और वहाँ जाकर चुपचाप खड़े हो गये। ये लोग बड़ी देर तक बिना बोले चाले खड़े थे; हाँ! बार २ नगर की ओर देखते जाते थे, परन्तु कुछ अग्निशिखा और स्थान २ पर प्रकाश के अतिरिक्त और उन्हें वहाँ कुछ न दिखाई पड़ता था।

सर विल्फ्रेड—अब आप लोगों की क्या राय है ? हमलोगों को अपनी अवस्था पर ध्यान देकर फिर मृत्यु की गुफा का पथ पकड़ना चाहिये ! जो लम्बाई में चालीस मील के नीचे नीचे नहीं हैं।

राल्फ़—जी नहीं मैंने प्रायः उन राक्षसों से सुना है कि इसका घुमाव इत्यादि सब मिलाकर कम से कम सौ मीलों के लगभग है। परन्तु ऐसे भयानक स्थान से निकलने के निमित्त हम-लोगों का आगे बढ़ना कुछ अनुचित न होगा।

लम्बाई का हिसाब सुनकर पहले तो सभी हिचकिचाये परन्तु फिर आगे बढ़नाही पड़ा, क्योंकि मृत्यु से तकलीफ अच्छी होती है। पहाड़ी से उतर कर यह झुण्ड पगडंडी पर होता, हरी २ दूबों को कचरता, तथा अन्धकार के कारण ऊँचे नीचे गड्ढों में ठोकर खाता गुफा की ओर बढ़ने लगा।

हाल्डेन—बस अब चन्द्रमा निकलाही चाहता है, कुछ देर नहीं है। फिर उसके प्रकाश में हम अपनी राह तथा गुफा को भली भाँति देख सकेंगे!

"अरे ! ! ! उधर देखो" यह कहकर सर विल्फ्रेड ने खुले हुये वन की ओर अपनी ऊँगली उठाई जिधर उनके साथियों ने देखा कि उनसे लगभग पचास गज के अन्तर पर कुछ काली मूरतें मृत्यु के गुफा की ओर बढ़ रही हैं।

हाल्डेन—अरे भई समझे ! ये राक्षस हैं जो हमलोगों की राह बन्द करने के लिये गुफा की ओर बढ़ रहे हैं और जब

वे उस्पर अधिकार कर लेंगे तो मानो फिर हमलोग उनके वश में होंगे।

सर विल्फ्रेड—तब तो आपत्ति आयाही चाहती है, परन्तु अभी लों उनलोगों ने हमें देखा नहीं है। अच्छा! फिलिप; तुम, कप्तान तथा टौंक को लेकर जितना शीघ्र तुम से बन पड़े गुफा की ओर भागो इधर मैं और हाल्डेन तुम्हारी पीठ की रक्षा करता हुवा तुमारे साथ रहूंगा! बस जल्दी! समय नहीं है।

तुरन्त दौड़ प्रारम्भ हुई! और जब ये लोग उन राक्षसों से लगभग बारह गज के आगे निकल गये, तो उन्होंने इन्हें देख पाया और देखतेही क्रोध से चिल्लाते बड़े वेग से इनपर टूटे परन्तु तो भी सर विल्फ्रेड का झुण्ड उनसे बारह गज आगेही था और वह प्रत्येक क्षण गुफा के निकटही होता जाता था। झुण्ड का प्रत्येक मनुष्य, अपनी इस बढती पर, और पाला हाथ रखन की आशा में आगे बढता जाता था। उधर लगभग छ देवों के बड़ीही शीघ्रता से अपने दौड़ते हुये साथियों से भी आगे बढ़े, और इन सुफेद मनुष्यों को काट डालने के लिये झपटे, परन्तु अभी वे लोग बीस फीट पीछे रहे होंगे जब फिलिप अपने साथियों सहित अन्धकार मय गुफा में कूद गया। इनलोगों के भीतर पहुँचतेही तुरन्त सर विल्फ्रेड और हाल्डेन गुफा के मुंह पर घूम कर खड़े हो गये, और बन्दूकों का मुंह उनलोगों के ओर फेर कर जो बाढ़ मारी तो उनमें से दो तो चिल्लाते हुये पृथ्वी पर लोटने लगे और बाकी के चार, अपने

साथियों को बुलाने के लिये पलटे जो गिनती में पचास से किसी प्रकार से कम न होंगे।

सर विल्फ्रेड ने इसपर कुछ भी ध्यान न दिया, उनका वह साहस जो वीरों ही को प्राप्त होता है हाथ बाँधे उनके सामनें उपस्थित था। जबतक वे देव अपने साथियों सहित पुनः लौट के आयें २ तब से वह गुफा के बाहर झपट कर आये और उस मरे हुये जङ्गली की तीर कमान और बरछा लेकर फिर बिना किसी आपत्ति के गुफा में पहुँच गये। साथही इनके पीछे हथियारों की एक भयानक बौछार आई।

सर विल्फ्रेड ने भीतर पहुँचतेही अपने साथियों को भागने के लिये कहा और फिर दौड़ प्रारम्भ हुई। वह भयानक अन्धकार मय गुफा; जिस्में इनके दुर्भाग्य ने लाकर इन्हें फँसा दिया था बड़े २ पत्थरों के ढोंको से भरा हुवा था जिस्से ये लोग ठोकरें खाते और प्रत्येक मोड़ पर गुफा की दीवार से सिर टकराते गिरते और फिसिलते आगे बढ़ जाते थे। इनके पीछे देवों का भयानक कोलाहल, और उनके पैरों की विचित्र धमक बड़े वेग सुन पड़ती थी और जान पड़ता था कि वे बहुतही निकट हैं।

सर विल्फ्रेड ने दौड़ते २ यह किया कि वह तीर और कमान तो टौंक को दी, और बरछा कप्तान के हाथ में थँमाया, फिर आप और हाल्डेन ने कई फैर बन्दूक की सर की और फिर अपने साथियों के पीछे दौड़ने लगे।

उन बन्दूकों के प्रचण्ड शब्द ने जङ्गलियों की चाल में कुछ फर्क डाल दिया; और फिर उनके भी तो पैर उन चिकने पत्थरों पर पड़ते थे, जिस्से वे इधर उधर गिर रहे थे। इसके अतिरिक्त उनकी बड़ीही बोझिल ढालें और भी उन्हें दौड़ने से रोकती थीं।

यद्यपि यह गुफा बड़ीही ठंढी थी परन्तु भागनेवालों पर इस्का कुछ भी फल न प्रगट होता था। उनके रक्त में इससमय बड़ाही "जोश" था। यहाँ लों कि उस्की गरमी से उनके चेहरे से लगातार पसीने की बूंदें टपक रही थीं, और यार्थ में इस्समय वे लोग वह काम कर रहे थे जो इनके बल से बाहर था। बीच २ में सर विल्फ्रेड की बातें और भी उनके साहस को बढ़ा रही थी, जिस्से वे बराबर तेजी से दौड़े चले जाते थे।

राक्षस यद्यपि पीछे थे पर तोभी वे आगे बढ़ेही चले आते थे, और ऐसा अनुमान करलेना बड़ीही मूर्खता थी कि "वे पीछा करना छोड़ देंगे" परन्तु उधर जब आगे भागनेवाले एक मोड़ से आगे बढ़े तो उनके नत्रों के सामने एक बड़ाही विचित्र दृश्य उपस्थित था। बहुतसी लकड़ियाँ गुफा की दीवार से लगकर जल रही थीं और उस्की निकलती हुई शिखा तथा चक्कर खाते हुये धुँये में दो मूर्ति खड़ी दिखलाई देती थीं।

उन्तालीसवाँ बयान ।

कप्तान—(जो सबके आगे थे) हाय ! मेरी हड्डियाँही गलें हमलोग फिर घरे गये ! वह देखो सामने कुछ राक्षस खड़े हैं ।

सर विल्फ्रेड—नहीं वे राक्षस नहीं जान पड़ते !

कप्तान जोली के शब्द जो उन दोनों के कानों तक पहुँचे तो, वे तुरन्त अपने हाथों में बलती लकड़ियाँ उठाकर इनलोगों की ओर झपटे, और उन लकड़ियों के प्रकाश में जो सर विल्फ्रेड तथा उनके साथियों ने उन्हे देखा तो जान पड़ा कि ये दोनों वही मूर्तियाँ हैं, जिन्हें हम अब तक मुर्दा समझे बैठे थे अर्थात् "हेक्टर और चेको" ।

एक विचित्र सुखमय किलकारी मार कर सर विल्फ्रेड हेक्टर की ओर बढ़े और उसें तुरन्त हाथों में लेकर धड़कती हुई छाती में जोर से लगा लिया। इधर तो ये हेक्टर को छाती से लगाये हुये थे उधर चेको एक कोने में मारे प्रसन्नता के नाच रहा था । इसके उपरान्त सर विल्फ्रेड ने हेक्टर को राल्फ हाल्डेन की गोद में जो उनके निकटही खड़े थे डाल दिया ।

सर विल्फ्रेड—हाल्डेन ! (जोर से) हमलोगों को क्षमा करना यह तुम्हाराही बेटा है जिसे राक्षस पकड़ ले गये थें ।

यह सुन्तेही राल्फ हाल्डेन के मुंह से एक विचित्र चीख़ निकल गई और उसने एक अनोखी दृष्टि से सर विल्फ्रेड को देखा, और तब हेक्टर को गले से लगा लिया ।

हाल्डेन—(धीरे से) परमेश्वर उस काम का परिणाम। मुझे क्षमा कर!!!

इतने में सर विल्फ्रेड, जो आगे बढकर स्थिरता से कान लगाये कुछ सुन रहे थे जोर से कहने लगे "बस अब यह समय बातचीत का नहीं है हमारे पीछा करनेवाले अब यहाँ पहुँचाही चाहते हैं अब आगे बढ़ो"!

हेक्टर—मेरे पास इस्का भी अच्छा सामान है, कुछ लकड़ियाँ ऐसी पड़ी हैं जो राह में प्रकाश करती चलेंगी, और जिनके प्रकाश में हम जङ्गलियों से बहुत आगे बढ जावेंगे।

सर विल्फ्रेड—सब जलती और सूखी लकाड़याँ इकट्ठी करके लेलो देखो उनके निमित्त उसमें की एक भी न रहने पावे।

यह सुन्तेही हेक्टर झपट कर आगे बढ़ा, और उसने सब सूखी तथा जलती लकड़ियां उठा लीं। इतने में एक आवाज आई "हिज्ज्!!!"—और एक बरछा सर विल्फ्रेड के सिर से एक फुट के अन्तर से निकल कर दूर जा पड़ा। जङ्गली कठिनता से दस गज के अन्तर पर होंगे, जब इन लोगों ने फिर दौड़ प्रारम्भ की, और हेक्टर तथा सर विल्फ्रेड बड़ीही शीघ्रता से इनके आगे २ प्रकाश करते हुये बढ़ने लगे।

प्रकाश के कारण राह भली भांति दिखलाई देती थी। अब इन्हे किसी दीवार के निकले पत्थरों के ढोकों से क्लेश नहीं मिलता था, परन्तु जङ्गली नङ्गे पैर और अन्धकार के कारण बड़ेही क्लेश सें धीरे २ बढ़ते थे।

हेक्टर—मुझे यह मालूम ही था, कि आप किसी न किसी भांति अवश्य उनमें से भागियेगा, और यही कारण है, कि मैं सीधा गुफा में आया, और इसी से जब आप लोगो में से एक ने मुझे पुकारा, मैं तुरन्त पहिचान गया। अच्छा अब मैं अपना कुछ पिछला वृत्तान्त सुनाता हूं। उस रात को उन देवों ने जब मुझे पिंजड़े के बाहर निकाला तो सीधे नदी के किनारे एक विशेष स्थान पर ले चले, जहां वे सदैव अपने आखेट को भूना और खाया करते हैं। वहां पहुँचने पर मैंने तो अनुमान किया, कि अब यहां से छुटकारा असम्भव है। पर मैंने एक चाल खेली अर्थात् दम साध कर पड़ गया। और जैसेही वे तनिक मुझ से अचेत हुये तुरन्त सिर पर पैर रख कर भागा।

मुझे भागते देख कर उन लोगों ने दौड़ा लिया; परन्तु मैं उनसे आगे था, और एक झाड़ी में दबक कर मैं उसी में छिप रहा। कुछ देर तक छिपे रहने के उपरान्त मैं वहां से निकल कर शहर पनाह की दीवार के पास आया, और उस पथ से; जिस्से मैंने नाव सहित प्रवेश किया था, बाहर निकला। बाहर निकल कर वहां आप लोगों के निमित्त छिपे रहना, मुझे उचित न जान पड़ा, और इस लिये भोजन के निमित्त कुछ फल और गरमी के निमित्त कुछ जलनेवाली लकड़ियां लेकर इसी गुफा में चला आया, क्योंकि मुझे निश्चय था, कि आप अवश्य आइयेगा और इसी राह से आइयेगा।

मेरी प्रसन्नता उस समय और भी बढ गई, जब मैंने गुफा

में चेको को भी पाया । वह बेचारा उस दिन पानी में गोता मार कर दूर एक झाड़ी के पास निकला, और रात तथा दो दिन तक वह वहां छिपा रहा, फिर दूसरी सन्ध्या को वहां से निकल कर वह भी इसी गुफा में आ बैठा था। हम लोग इतने दिनों में कई बेर बाहर, लकड़ियाँ तथा जल लेने के लिये गये थे। चेको जब आप लोगों के न आने पर घबड़ाता तो मैं उसे दिलासा देता जाता था।

सर विल्फ्रेड—क्यों जी! भला यह कैसे हुवा, कि हम लोग मिन के तक नहीं और तुझे राक्षस पकड़ ले गये?

हेक्टर—मैं अभी इसे न निवेदन करूँगा! परन्तु हां, वह समय आता है, इसका फैसला आपही को करना होगा।

यह कह कर वह कुछ पीछे हट गया, और अपने पिता के साथ दौड़ने लगा, अब इन लोगों के चित्त में आशा का अंकुर दिखलाई देने लगा। पीछा करनेवाले यद्यपि बढ़ेही आते थे, पर तो भी अब उनके पैर वा किसी प्रकार के शब्द इन्हें न सुन पड़ते थे। अब केवल इन्ही लोगों के पैरों के शब्द से गुफा में प्रतिध्वनि हो रही थी।

इसी प्रकार ये लोग, बिना किसी रुकावट के बड़ी देर तक दौड़ते रहे; अन्त सर विल्फ्रेड जो इनसे कुछ आगे दौड़ रहे थे, सहसा एक दम रूक गये, और उनके साथियों ने एक तेज हड़हड़ाट जल के बहने की सुनी।

सर विल्फ्रेड—शीघ्र प्रकाश करो ! इस्के बिना पुल नहीं तैयार हो सक्ता, और साहस से यहीं जमे खड़े रहो ।

वही खाई जिस्में सर विल्फ्रेड टैंक सहित डूबे थे, सामने थी । इनके सब साथियों ने झुण्ड बाँध कर एक २ कर झांक कर उसे देख लिया । इस्के उपरान्त हेक्टर, इन लोगों से कुछ अन्तर पर जा बैठा, जिसे यों अकेले बैठा; देख कर फिलिप, दुष्ट फिलिप, उस्के निकट आया, और उसने उस्का हाथ पकड़ लिया ।

फिलिप—क्षमा कीजियेगा, मैंने इस्के पूर्व, आप के आने पर आप का स्वागत नहीं किया । मेरे प्यारे ! मैं यह नहीं कह सका, कि तुह्मारे आने पर कितना हर्ष मुझे हुवा ।

हेक्टर—(हाथ झिटक कर कड़ाई से) तनिक अलगही रहियेगा ! जब मैं तुह्मारी नीच प्रकृति से सचेत हो गया, तो फिर मैं तुमसे काहे को बात करने लगा ! तुम एक दुष्ट और पाजी मनुष्य हो, तुमने अपने प्राण बचाकर हमें इस भयानक मृत्यु के मुह में ढकेल दिया । बस इसी लिये न, कि हेक्टर मारा जावे । बस दूर हो मेरे सामने से ।

फिलिप का चेहरा यह सुन्तेही पीला पड गया; और फिर उसने चेको के हाथ का बरछा छीन लिया, और वह हेक्टर पर बढ़ाही था, कि इनके साथियों ने जो वहीं निकटही थे, बीच बचाव कर दिया, और इस्के पहिले कि इस मामले की यथार्थता किसी ओर से बयान की जावे, बरछों तथा ढालो की खड़खड़ाहट से गुफा गूँजने लगी ।

सर विल्फ्रेड—ईश्वर की सौगन्ध राक्षस आगये ! हेक्टर, तुम कप्तान सहित बन्दूक लेकर राह की खबरदारी करो। फ़िलिप, तुम शीघ्र वह रस्सियों की सीढ़ी हमें देदो। अब मैं एक दम कार्यारम्भ करता हूं, मेरे जान ये राक्षस अभी हमसे बहुत पीछे हैं।

जो कुछ अर्ल ने सोचा तुरन्त उस्में हाथ भी लगा दिया। पहिले तो उन्होंने सीढ़ी का एक सिरा उस वड़े पत्थर में बाँधा जिस्में पहिला पुल दबा हुवा था, और फिर उस्का दूसरा सिरा एक दूसरे पत्थर के टुकड़े में कस दिया, और फिर इस टुकड़े को कुछ समय पर्यन्त वायु में इधर उधर झुला कर जोर से उसपार लोका दिया, जो शीघ्रतासे उसपार जा पड़ा। सरविल्फ्रेड ने निशाना ताका था, कि इनकी रस्सी का बँधा हुवा पत्थर उन नुकीली चट्टानों में जा पड़े, जो पानी की काट से विचित्र प्रकार के बन गये थे, परन्तु पत्थर उनसे कुछ हट के बगल में जा गिरा, और फिर वहां से लुढ़क कर पानी में गिर पड़ा।

अर्ल ने गम्भीरता से फिर उस खींच लिया, और उसी तरह दोबारा फिर डाला। इस्में वे कृतकार्य हुये। अबकी इनका पत्थर उस निशाने के पीछे चला गया, और जब इन्हों ने उसे कुछ आगे खींचा तो इनको बड़ीही प्रसन्नता प्राप्त हुई। कारण यह कि कुछ निकले हुये पत्थरों के नोकों ने उसे अपने बीच में अटका लिया था।

अब तक राक्षस दिखाई नहीं दिये थे, इस लिये सर वि-

ल्फ्रेड ने रस्सी की सीढ़ी को सबसे खींचने के लिये कहा, और जब वह इस परिच्छा में पूरी उतर चुकी तो सर विल्फ्रेड उसपार जाने के निमित्त प्रस्तुत हुये।

हेक्टर—(जोर से) महाशय आप इस कठिन राह से कदापि न जाइयेगा ! " परन्तु अन्त कोई तो जायेहीगा ना " सर विल्फ्रेड न यह कहा और तुरन्त उस रस्सी की सीढ़ी को हाथ से पकड़ कर झूल गये । और एक हाथ के उपरान्त दूसरा हाथ रखते, वायु में झूलते उसपार जाने लगे । इनके मित्र दांत पर दांत रक्खे चुपचाप यह भयानक दृष्य देख रहे थे । और उस समय उनके प्रसन्नता की कोई सीमा न रही, जब उन्हों ने सर विल्फ्रेड को उसपार पहुँचते देखा।

यद्यपि सर विल्फ्रेड इसतरह उसपार पहुँच गये। परन्तु उनके अन्य साथियों के लिये यह बड़ाही कठिन कार्य था, और इस लिये उन्हों ने पुल बनाना प्रारम्भ किया।

सर विल्फ्रेड ने वहां पहुँचतेही रस्सी की सीढ़ी को तान कर दृढ़ता से एक चट्टान में बांधना प्रारम्भ किया। अभी उनका यह काम समाप्त न हुवा होगा कि इनके साथियों की चिल्लाहट ने उन्हें अपनी ओर फेरा, अब सर विल्फ्रेड उस प्रकाश में देखते हैं कि बहुत से राक्षस उनके साथियों के ओर बढ़ रहे हैं।

चालीसवाँ बयान ।

"सावधान! अब उन्हें तिल भर भी आगे न बढ़ने दो! और पांच मिनिट पर्यंत इन्हें रोके रहो" यह सर विल्फ्रेड ने ललकार कर कहा "छोड़ो बन्दूकें।"

इस वीर पुरुष ने वास्तव में कठिन से कठिन आपत्तियों के समय अपनी बुद्धि ठिकाने रक्खी; इसकी इस आवाज़ ने इसके साथियों के शरीर में एक नई ही आत्मा फूंक दी! राल्फ हाल्डेन टैंक तथा फिलिप तो चट्टानों के पीछे लेट गये और चेको जो तीर कमान से सुसज्जित था दीवार के कोने में खड़ा होकर निशाना मारने लगा।

कप्तान जोली तथा हेक्टर, तुरन्त घुटनों के बल बैठ गये और एक बारगी उन्होंने जंगलियों को बाढ़ पर रख लिया। वे लोग अब बीस गज़ के अन्तर पर आ गये! और इधर इनकी बन्दूकें खाली होतेही राक्षसों में चिल्लाहट मच गई और कितनेही पृथ्वी पर गिर कर लोट रहे थे। परन्तु इसपर भी उनलोगों ने साहस किया और धीरे २ आगे बढ़ेही आते थे कि साथही हेक्टर ने कड़क कर आवाज़ दी "फायेर।"

इस्वार गोलियों ने पहले से भी कुछ विशेष अपना भयानक काम किया कितनेही यम लोक पहुँचे, परन्तु उनमें से छः पाषाण हृदय बड़ीही शीघ्रता से झपटते हुये इनकी ओर चले। इतने में हेक्टर और कप्तान ने फिर निशाना ताक कर

जो गोली चलाई तो दो उस्में से और गिर गये, और साथही चेको का सनसनाता हुवा तीर एक के हृदय से पार हो गया, जिस्से वह भी वहीं गिर पड़ा, परन्तु बाकी के तीन और भी शीघ्रता से बढ़े, और अब केवल २० फीट के अन्तर पर इनसे आकर अचांचक वह रुक गये। कदाच उन दोनों को बन्दूक भरते देख कर वे सोचते हों कि अब आगे बढ़ें, या पीछे लौटें।

बस उनके रुकतेही हेक्टर की गोली ने अच्छा काम कर दिखाया। हेक्टर तुरन्त अपने स्थान से कुछ दहिने हटा, अब यहां से निशाना बाँधने पर वह जङ्गली आगे पीछे पड़ते थे, बस ऐसे समय जो हेक्टर ने गोली मारी तो दोनों एक साथही ढेर हो गये।

कप्तान—(चिल्ला कर) हाय अब मरे!

इस्के उपरान्तही इन लोगों पर जङ्गलियों ने बरछे तीर तथा पत्थरों की बौछार प्रारम्भ की, और धीर २ आगे भी बढ़ने लगे, कि साथही इनके पीछे से एक आवाज आई, "पुल तैयार है, अब शीघ्रही एक २ करके उस्पार चलो। चेको तू पहिले जा, और फिर टौंक और इस्के उपरान्त फिलिप"! अब इन लोगों न पाछे फिर देखा तो सर विल्फ्रेड को इस्पार खड़े पाया, जो पुल तैयार करके उस्पर से उतर आये थे।

सर विल्फ्रेड उस समय तक ठहरे रहे, जब टौंक और चेको दोनों कुशल पूर्वक उस्पार पहुँच गये, और फिलिप अभी राह में था। यह देख कर सर विल्फ्रेड कप्तान के निकट आये; और

उनसे बन्दूक लेकर उन्हे भी उस्पार जाने के लिये कहा। कप्तान साहब भी अबकी कुशलता पूर्वक परन्तु डरते हुये उस्पार पहुँच गये; कारण यह कि पकड़ने के लिये अबकी पुल के दोनों ओर दो रस्से लगा दिये गये थे।

सर विल्फ्रेड—हेक्टर, आओ इन पाजियों के रोको, हाँ! अ- च्छा इनके बीच में तो एक बाढ़ पड़े। तुम्हारी गोलियां भी ईश्वर की कृपा से कैसी अच्छी निशाने पर जाती हैं।

सर विल्फ्रेड की बातों ने हेक्टर के दिल को और भी उ- भाड़ दिया। इनलोगों ने मिल कर एक के उपरान्त दूसरी, कई बाढ़ें जो उनपर चलाईं तो उनकी पूरी आगे की सतर की सतर पृथ्वी पर दिखाई पड़ने लगी। वास्तव में यदि इतनी मुस्तैदी न काम में लाई जाती तो उस आगे की सतर का रोकना कठिन था, और फिर उन बेचारों की जो अवस्था होती जो इससमय पुल पर से उतर रहे थे, उसे पाठक स्वयं विचार लें।

इस रुकावट के उपरान्त सर विल्फ्रेड ने जो गरदन फेरी तो देखा कि कप्तान साहब उस पार पहुँच गये हैं। अब केवल सर विल्फ्रेड तथा हेक्टर इस पार रह गये थे, जिन्हें वे जंगली बड़ेही कोप से पकड़ कर खा जाना चाहते थे।

सर विल्फ्रेड—अब हेक्टर! अब तुम भी बन्दूक अपनी पीठ पर रख कर पुल के उसपार निकल जाओ; और जैसेही वहाँ प- हुँचना तुरन्त इन जङ्गलियों को बन्दूक से रोकना प्रारम्भ करना,

फिर जबलों कि मैं तुमतक न पहुँच जाऊँ मेरी प्राण रक्षा तुह्मारे हाथ है।

यह सुनकर जैसेही हेक्टर; पुल के पार होने लगा वैसेही सर विल्फ्रेड एक बड़ी चट्टान के पीछे आ गये और वहाँ से गोलियाँ मरनी प्रारम्भ कीं। उधर उन देवों ने उस वीर पुरुष को अकेला पाकर, बड़े वेग से धावा किया, और यहाँ तक लपकते हुये आगे बढे कि केवल ६ गज का अन्तर उन से और सर विल्फ्रेड की बन्दूक से रह गया, कि इतने में एक हर्षनाद उसपार से सुन पड़ा "चले आओ सर विल्फ्रेड! मै उनके लिये प्रस्तुत हूं!"

अन्तिम गोली मारकर सर विल्फ्रेड ने बन्दूक अपने कन्धे पर डाली और फिर तुरन्त पुल पर पैर रक्खा, और साथही इनके पीछे एक भयानक कोलाहल के साथ लगभग छः जङ्गलियों ने धावा बोल दिया।

"दाँय! दाँय!" साथही हेक्टर ने दो फैर कीं, और वहाँ ६ राक्षसों में केवल चारही रह गये, जो पुल के निकट आपहुँचे। उनमें से भी दो ने जैसेही घबड़ाकर पुल पर चढ़ना चाहा वैसेही पैर फिसले और वे लुढकते हुये खाई में चले गये; बाकी के दो, बड़ी सावधानी से सर विल्फ्रेड के पकड़ने के लिये पुल पर चढ़ गये।

यह समय बड़ाही कठिन तथा भयानक था। क्योंकि हेक्टर इस भय के मारे बन्दूक नहीं दागा सकता था कि कहीं गोली

सर विल्फ्रेड को, जो पुल के सामनेही थे न लग जावे; और यहीं कारण उन हवशियों के बढ़नेका था, जिसका परिणाम एक व्यक्ति की जान जाने पर था।

इतने में पुल पर के एक जङ्गली ने सर विल्फ्रेड पर एक बर्छा खींच ही तो मारा, जो ईश्वर की कृपा से उनकी बगल से होता हुआ उनके साथियों के बीच में जा गिरा। बर्छा के गिरतेही सर विल्फ्रेड के साथी जो यथार्थ में निहत्थे थे हेक्टर के अति-रिक्त सब वहां से भागकर दूर जा खड़े हुये।

अन्त सर विल्फ्रेड उस पार पहुँच गये, और कूदकर एक चट्टान पर जा खड़े हुये। हेक्टर जो उनके निकटही खड़ा था, उन दोनों जङ्गलियों को मार गिराने के निमित्त आगे बढ़ा परन्तु साथही एक तीर ऐसा उसकी बाँह पर आ लगा, जिससे वह उलट कर वहीं गिर पड़ा और उसके हाथ से बन्दूक छूट गई। सर विल्फ्रेड ने उसकी इस अवस्था को न देखा और न उन दोनों जङ्गलियोंही से सूचित हुये जो बढ़ते हुये पुल से उ-तर कर अब इनके बिलकुल निकट पहुँच कर हाथ बढ़ा, अब इन्हें अपने पञ्जों में दबाया चाहते थे।

जङ्गलियों ने जैसेही उनके शरीर पर हाथ लगाया, वैसेही वह फुर्तीला व्यक्ति कूदकर अलग हट गया, बन्दूक छोड़ने का तो अब समयही न था परन्तु बन्दूक का कुन्दा अब भी काम में आ सकता था, जिसे उन्होंने तुरन्त जङ्गली की खोपड़ी पर लगाया और वह लुड़कता हुआ खाई मे चला गया। सर वि-

ल्फ्रेड अब उसी तरह वन्दूक ताने हुये उस दूसरे जङ्गली के ओर फिरे, परन्तु वह दूसरा दुष्ट एक विष का बुझाया लम्बा छुरा तान कर खड़ा हो गया।

सर विल्फ्रेड ने इसके पहिले ऐसा भयानक समय कभी नहीं देखा था। उस भयानक छुरे का निशाना सर विल्फ्रेड का हृदय बँध चुका था: और जबसे वन्दूक का कुन्दा सर विल्फ्रेड अपने काम में लावें २ तब से वह निर्दई छुरा इनको समाप्त करने के लिये छुट पड़ा; और उसी क्षण में जिसमें कि वह इनकी ओर बढ़ा था, इनके जीवन का अन्त करहीं देता कि राल्फ हाल्डेन सहसा एक ओर से टूट पड़े और अपने को सर विल्फ्रेड के सामने खड़ा कर दिया। वही जल्लाद छुरा जो सर विल्फ्रेड की हत्या करने को था राल्फ हाल्डेन की छाती पर आ लगा और दूर तक चीरता हुआ घुस गया।

राल्फ इस चोट से गिरनेही को थे परन्तु सर विल्फ्रेड ने उन्हें अपने दोनों हाथों पर सँभाला! इतने में हेक्टर ने, जो सचेत हो गया था अपने कष्ट को दबाकर एक छूरे से पुल की की कुल रस्सियां एक २ करके काट डालीं!

६ राक्षस, जो उस पुल से बड़ेही प्रसन्न हो २ कर, इसपार आ रहे थे और निकट था कि पृथ्वी पर पैर रक्खें, कि इतने में रस्सी कटी और वे चिल्ला २ कर नीचे गिर पड़े, और क्षण के उपरान्तही उनकी चिल्लाहट को बहते हुये जल ने दबा दिया।

अब उसपार के जङ्गली निराश हो हो कर चिल्लाने लगे और उधर वह जङ्गली जिसने कि सर विल्फ्रेड को छूरा मारा था तुरन्त सर विल्फ्रेड की बन्दूक से मारा गया। हाल्डेन को उनके साथी पकड़े हुये एक ओर ले चले।

जैसेही ये लोग हाल्डेन को लेकर आगे बढ़े वैसेही एक बौछार तीर और बर्छों की इन लोगों पर आई! परन्तु इससे इनकी कुछ हानि न हुई और ये हाल्डेन को लिय हुये उस सूखे वृक्ष के निकट आये जिसकी डालियों से कि कुछ दिन पहले, लकड़ियाँ लेकर आग जलाइ गई थी।

हाल्डेन को इन लोगों ने वहीं लिटा दिया और चुपचाप उनके चारों ओर खड़े हो गये। उनकी आँखें पथरा गई थीं, दम; रुक २ के आता था और उनकी छाती गहेर लाल रङ्ग से रँगी हुई थी।

सर विल्फ्रेड उनकी यह अवस्था देखकर बड़ीही विकलता से विलाप करने और यह कहने लगे "हाय! बेचारे ने केवल हमारे लिये अपने प्राण त्यागे।"

हेक्टर; अपने मरते हुये पिता के बगल में घुटने टेककर बैठ गया और चिल्लाकर कहने लगा "पिता! मेरी ओर देखिये कुछ बातें तो कीजिये।"

राल्फ हाल्डेन की पथराई हुई आँखें यह सुन्तेही घूमीं। पहले तो उन्होंने सर विल्फ्रेड पर दृष्टि डाली, और फिर बड़ी देर तक हेक्टर की ओर देखकर बहुतही धीरे और टूटे फूटे शब्दों में बोले "ईश्वर! मुझे क्षमा कर! हेक्टर; मेरे प्यारे! मैं तुम्हारा पिता नहीं हूं।

चालीसवाँ बयान।

राल्फ हाल्डेन की बात से सब चौंक पड़े और वे सब बड़ेही उत्सुकता से उनकी बातें सुनने को झुके।

हेक्टर—आप मेरे पिता नहीं हैं तो फिर मेरे पिता कौन हैं? शीघ्र बतलाइये!

हां—प्यारे; तुम्हारा नाम आर्थर केवेन्ट्री है और सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री तुम्हारे पिता हैं।

यह सुन्तेही अर्ल जोर से चिल्लाकर आगे बढ़ा, जिससे कुल गुफा गूंज गई और उन्होंने हेक्टर को जोर से पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और स्वयं मरते हुये मनुष्य के निकट पहुंचकर बड़ेही क्रोध और विचित्र रूप से पूछा "तुम कौन हो?"

इसपर राल्फ हाल्डेन ने एक भयभीत दृष्टि सर विल्फ्रेड के चेहरे पर डाली और धीरे २ कहने लगे "मैं बर्न कोवेन्ट्री तुम्हारा भाई हूं, मैंने एक बड़ा भारी दोष तुम्हारा किया है, जिसके बदले में मैं; प्राण का बदला देकर तुमसे क्षमा का प्रार्थी हूं।"

इस बात के सुन्तेही सर विल्फ्रेड के चेहरे पर अनेक भाव झलकने लगे और उन्होंने पलटकर हेक्टर को; जो निकटही खड़ा था, बार २ बड़ीही उद्वेगता से गले लगाना प्रारम्भ किया।

सर—(जोर से) ईश्वर तेरा धन्यवाद है! आज बीस वर्ष के उपरान्त, मानो उस कष्ट का अन्त हुआ! आर्थर प्यारे आर्थर! मैं स्वीकार करता हूं कि तुम मेरे पुत्र हो। इसके पहले मैं अन्धा हो गया था जो तुम्हें न पहचान सका। अब किसी जाँच की

भी आवश्यक्ता नहीं है। मेरे वीर ! बुद्धिमान ! और शीलवान पुत्र, मैं तुम्हारा पिता हूं।

हेक्टर—और इसकी गवाही भी मेरेही पास है।

यह कहकर उसने अपने गले का वही यन्त्र तोड़कर सर विल्फ्रेड के हाथ में दे दिया, जिसे उन्होंने एक कमानी के खटके से खोलकर देखा।

सर—तुम्हारी स्वर्गवासी माता ! आर्थर ! यह यंत्र तुम्हारी गर्दन में था जब तुम चोरी गये थे और तुम्हारेही दुःख में तुम्हारी माता ने प्राण त्यागे। और तुम्हारा चोरानेवाला "यह कहकर भयानक रूप से सर विल्फ्रेड ने उस मरते हुये व्यक्ति की ओर ऊँगली उठाई।"

हा—मैं सचमुच दोषी हूं! परन्तु उसका बोझ भी मैंने भली भाँति उतार दिया। इसके पहिले कि मैं लन्दन छोड़ूं मैंने इस बारे में एक पत्र भी राबर्ट मुडमोर को लिख दिया था।

हेक्टर—आप के बर्बादी के समाचार मिलने के पहलेही वह अग्नि में भस्म हो चुका था।

हा—(मरते २) मेरा अब चल चलाव है! विल्फ्रेड ! क्या ऐसी अवस्था में भी तुम मुझे एक ऐसा दयामय शब्द नहीं सुनाया चाहते जिससे मेरे प्राण के निकलने में कष्ट न हो ?

सर विल्फ्रेड ने यह सुनकर अपने उस भाई के ओर से जिसने इनका कुल जीवनही व्यर्थ कर दिया था, मुंह फेर लिया। इसपर हेक्टर ने सर विल्फ्रेड से धीरे २ कहना प्रारम्भ किया

"उन्होंने अपना जीवन देके आप के प्राण बचाये, इससे बढ़कर उनके दोषका परिशोध और क्या हो सकता है"।

इन शब्दों ने सर विल्फ्रेड के चित्त पर जाकर बड़ा काम किया और उन्होंने उस नये मिले हुये पुत्र की बातों को तुरन्त स्वीकार कर लिया। वह मरते हुये मनुष्य के सिरहाने बैठ गये और उनका सिर अपनी गोद में लेकर कहने लगे "ईश्वर साक्षी है वर्न ! मैंने तुम्हारे सब अपराधों को क्षमा किया, इस क्षण से मैंने तुम्हारी कुल पिछली बातें चित्त से भुलादीं, और अब मैं भविष्य में तुम्हें वैसेही प्रेम से याद किया करूँगा जैसा कि मैं लड़कपन में तुम्हें याद किया करता था। वर्न अब मुझसे भी कुछ बोलो !"

एक प्रसन्नता की चमक मरनेवाले के नेत्रों से निकलने लगी और उसके होठों पर एक सूक्ष्म मुस्कराहट झलकने लगी।

हा—(बहुतही धीरे) धन्य ईश्वर ! प्यारे विल्फ्रेड वन्दगी।

इसके उपरान्तही उन्होंने दाहिना हाथ बढ़ाकर उस भयानक छूरे को अपनी छाती में से निकाल लिया जिसके साथही रक्त का फौवारः छाती से छूटने लगा और उसी रक्त के साथही साथ वर्न कोवेन्ट्री की आत्मा शरीर से अलग हो गई।

सर विल्फ्रेड उस मरते हुये व्यक्ति के सिरहाने बैठे एक ईश्वरीय प्राथना कर रहे थे, और उनके साथी मुरदे के चारोओर सिर खोले अदब से झुके हुये थे।

साथही गुफा के ऊपर से सूर्यदेव की एक किरन मुर्दे के चेहरे पर पड़ी जिससे कि वह चमकने लगा।

* * * * * * *

सर विल्फ्रेड बड़ी देर तक मारे दुःख के वहीं बैठे रहे अन्त कुछ देर के उपरान्त भाई का सिर अपने जंघे पर से हटाया और उठ खड़े हुये।

सर०—मेरे बेटे आर्थर ! और मेरे साथियों ! एक बात और बाकी रह गई है उसे सुनो, मैं जिस बात को कहूंगा वह अपने भाई के द्वेष के कारण नहीं वरन् केवल आप लोगों को उससे सूचित करने के लिये; क्योंकि मैं अपने भाई का दोष तो क्षमा कर चुका हूं। वरन्कवेन्ट्री जो आप लोगों के सामने पड़े हैं मुझसे वयस में दो वर्ष के छोटे थे। हमारे पिता वरन्कवेन्ट्री विल्टशायर के अधिपति, [और जहां हमलोगों की जन्म भूमि भी है] उससमय स्वर्ग-लोक को सिधारे जब हमारा वयस सत्ताइस वर्ष का था। उनके भी पूर्व हमारी माता का स्वर्गवास हो चुका था।

इस लिये कि ज्येष्ट पुत्र मैंही था, कुल सम्पत्ति पिता की मेरेही हाथ आई; और इस घटना के तीन वर्ष उपरान्त, मैंने एक बड़ीही स्वरूपवती बाला के साथ व्याह कर लिया। ईश्वर की सौगन्ध मुझे यह तनिक भी मालूम न था कि मेरा भाई भी उसी स्त्री को निराशा से चाहता है, क्योंकि वह स्त्री अर्थात हेक्टर

की माँ वर्न से बात तक न करती थी इसी लिये उससे वह निराश हो चुका था। अस्तु ! मेरे व्याह को देख कर भाई के चित्त में द्वेष की आग बल उठी और उसने कुछ रुपये पैसे पर व्यर्थ लड़ाई उठानी चाही परन्तु मैंने उसे अपने शान्त स्वभाव से उड़ा दिया।

वर्न; स्वभाव का बड़ाही क्रोधी था और उसने तुरन्त मुझसे वदला लेने की ठान ली। इसे वह अपने चित्त में बहुत दिनों तक छिपाये रहा और समय की प्रतीक्षा करता रहा अन्त वह मेरा एक छोटा बेटा चोरा कर ले भागा जिस्का वयस अभी केवल तीनही वर्ष का था और लाख २ ढुंढ़ाई होने पर भी उसका पता न चला।

इसी दुखः ने मेरी स्त्री के भी प्राण लिये और यही दोनों दुःख कुछ ऐसे मुझ पर भी आ पड़े जिस्से मुझे घर बार छोड़ कर लाचार केवल चित्त बहलाने के लिये देश २ मारा २ फिरना पड़ा परन्तु आज बीस वर्ष के उपरान्त उस मेरे दुख का अन्त हुआ और मैंने वर्न अपने भाई से; अपने प्यारे पुत्र को आखिर पाया।

कप्तान—और सुनियेगा ! यहां एक ऐसा व्यक्ति भी उपस्थित है जो इन कुल भेदों को भली भांति जानता है।

यह कह कर उन्होंने फिलिप की ओर ऊँगली उठाई जो यह देखतही पीला पड़ गया और काँपने लगा।

कप्तान—समझे न भई सर विल्फ्रेड ! अजी इसने किसी तरह हेक्टर के पास का वह जन्त्र देख लिया था और फिर इनका वैरी हो गया।

सर विल्फ्रेड—(कंपित स्वर में) सचमुच फिलिप हमारी स्त्री के कुल भेदों को जानता था। अच्छा आर्थर ! तुम इसबारे में क्या जानते हो तनिक स्पष्ट रूप से तो कहो।

यह सुन कर हेक्टर या आर्थर ने जो कुछ बात थी वह स्पष्ट रूप से एक २ अक्षर सर विल्फ्रेड से कह सुनाई, जिसे सुन कर फिलिप काँपने लगा और अन्त रोता हुआ, सर विल्फ्रेड के चरणों पर जा पड़ा। उधर सर विल्फ्रेड मानों अपने आपे से बाहर हो गये थे, उनके नेत्रों से चिनगारियाँ निकल रही थीं और वह तड़प कर कहने लगे "हे परमेश्वर ! क्या ऐसे दुष्ट भी पृथिवी पर हैं ! अरे तूने जान बूझ कर अपने मित्र को राक्षसों के हवाले कर दिया। और फिर यह जान कर कि हेक्टर मेरेही हृदय का टुकड़ा है ? तू इस लिये उसका प्राण लेना चाहता था कि जिस में कुल सम्पति का मेरे उपरान्त तूही सत्वाधिकारी हो। तू मेरा कोई सम्बन्धी नहीं, मैं केवल तुझे इस निमित्त चाहता था कि मरने पर कोई अपना नाम लेने वाला पीछे छोड़ जाऊँगा। अरे नीच ! यह मुर्दा आदमी उतने बड़े दोष का दोषी नहीं है जितने का, कि तू ! मुझे मुँह न देखा ! मुझसे कभी न बोलना मैं तेरे मुंह के देखने से महा पाप समझता हूं। बस चल हट दूर हो।

यह सर विल्फ्रेड ने कुछ ऐसे क्रोध मय शब्दों में कहा कि फ़िलिप को फिर कुछ विशेष दिखलावा दिखलाने का साहस न पड़ा और वह दूर जा खड़ा हुवा।

सर विल्फ्रेड—अब तुम लोग आगे बढ़ने के लिये तैयार रहो तबसे मैं वहां से बन्दूकें उठाये लाता हूँ।

यह कहकर सर विल्फ्रेड फिर खाई पर आये, राक्षस लाचार होकर लौट गये थे। सर विल्फ्रेड ने तुरन्त अपनी बन्दूकें उठाई और अपने साथियों में जा मिले। ऊपर लिखी घटना के उपस्थित होने के कारण आर्थर अपनी बाँह का दर्द बिलकुल भूल गया; और फिर यह घाव भी कुछ विशेष न था। तीर केवल माँस को चीरता हुवा निकल गया था जिसे कसके बाँध देनेही से दर्द में बहुत कुछ कमी हो गई।

कप्तान जोली तथा सर विल्फ्रेड मिल कर बर्न की लाश ले चले। बीच बीच में टौंक तथा चेको भी उनका कन्धा बदलवा देते थे। योंही सूर्य के अस्त होने के पहलेही ये लोग गुफा के बाहर जा खड़े हुये।

इनलोगों ने यहाँ आकर एक नाले के किनारे अपना डेरा डाला। सर विल्फ्रेड जाकर कहीं से एक मोटा जानवर मार लाये जिसे सब ने भून कर खाया; और रातभर वहीं बारी २ सोये।

प्रातः काल होतेही पहाडी के बगल में कब्र खोदी गई और बर्न कोवेन्ट्री उसमें दफन किये गये। इनकी कब्र पर एक बड़ा पत्थर भी खड़ा कर दिया गया।

भयानक रोग फैला, और जब अन्य जाति के जादूगर तथा डाक्टर आये तो उन्होंने दवा बताने के अतिरिक्त यह भी कहा कि यह उन्हीं सुफेद मनुष्यों के सताने का फल है और जब वे पुनः लौट कर आवेंगे और अपने हवाई विमान पर चढ़ कर यहाँ से चले जायँगे तो कुल आपत्तियाँ इस नगर की दूर हो जायँगी। प्रिंस आग्गा ने यह भी कहा कि आप लोगों का गुब्बारा बड़ेही सुरक्षित स्थान में रक्खा हुआ है।

यह कहानी कुछ ऐसे सच्चे ढङ्ग से कही गई कि सर विल्फ्रेड को तुरन्त विश्वास हो गया और वे बुदमा के साथ हो लिये। गाँव में पहुंचतेही शाह कासांगो तथा उसकी प्रजा ने एक सच्चे प्रेम तथा उत्साह से इनका स्वागत किया।

अब सर विल्फ्रेड को अपनी बुद्धि पर ज़ोर देने का समय आया। उन्हें यह भली भांति मालूम था कि प्राचीन काल में गुब्बारा ऊन तथा अन्य वस्तुओं की निकली हुई गेस से भरा जाता था। तात्पर्य यह कि सर विल्फ्रेड ने देख भाल और सोच विचार कर एक बात निश्चय की और अपने उस विचार को शाह काशाङ्गो से कह सुनाया। उन्होंने शाह से एक प्रकार की घास और खजूर का तेल जितना मिलना सम्भव हो मँगाने की प्रार्थना की। वहां तो आज्ञा की देर थी, चौबीस घण्टे के भीतर २ उन जङ्गलियों ने एक ढेर घास का और कई सौ मन तेल उसी मैदान में लाकर एकत्रित कर दिया।

अब गुब्बारा कोठरी से निकाला गया और उसके फटे हुये

स्थान पर सर विल्फ्रेड ने अपने कोट का टुकड़ा लगा दिया। खटोलना इत्यादि से भी यह दुरुस्त करा के २२ वीं की प्रातःकाल को, एक खुले स्थान में वृक्षों के बीच बांध कर खड़ा किया गया।

अब एक बड़ा पत्थर का टाँका तेल से भर कर रक्खा गया और उस्में वही घास जला जलाकर डाली जाने लगी जिस्में से एक प्रकार का धुंवा निकलने लगा। गुब्बारा बिलकुल नीचा कर दिया गया था और उस्का मुंह उसी टाँके पर खोल कर रक्खा गया जिसमें गेस भरी जाने लगी। यह सब काम सर विल्फ्रेड ने अपने हाथोंही से करना प्रारम्भ किया। और अब धीरे २ गुब्बारे का बड़ा शरीर फूलने लगा।

तमाम रात सर विल्फ्रेड उस घास से तेल को भड़काते रहे जिस्से गेस उत्पन्न हो होकर गुब्बारे में भरी जाती थी। एक ओर तो यह हो रहा था और दूसरे ओर वे जंगली आग के सामने नाच रहे थे और रातभर वहां बड़ाही कोलाहल मचा रहा।

२३ की सुबह भी बड़ेही आनन्द की सुबह थी, बुदमा तथा अंगरेज दोनोंही प्रसन्न हो रहे थे और गुब्बारा गेस से पूरा भर कर उड़ने के लिये फड़फड़ा रहा था।

बयालीसवाँ बयान।

सर विल्फ्रेड का काम समाप्त हो गया। खटोलने में कुछ

खाने की सामग्री, दो बन्दूकें और बहुत सा पानी रक्खा गया। वायु इस समय शीघ्रता से पूरब और उत्तर दिशा के ओर बह रही थी यह देख कर सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों से कहा "भाइयो ! ऐसा समय फिर हमारे हाथ न आयेगा अब हम लोग बड़ीही शीघ्रता से आगे चल सक्ते हैं ।"

अब सर विल्फ्रेड शाह लागोस तथा शाहजादा आग्गा से बड़ेही हर्ष से मिले, और उन हबशियों से भी जो उनके चारों ओर खड़े थे टोपी उतार कर जोर से विदा माँगी जिस्से वे सब चिल्लाने और कूदने लगे । इस्के उपरान्त सर विल्फ्रेड अपने खटोलने में आये जिस्में उनके साथी पहलेही से बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । एक क्षण में इशारे पर रस्सी काट दी गई और गुबारा झूमता हुवा दो हजार फीट की ऊँचाई पर उड़ गया आर फिर वहीं से पूरब तथा उत्तर के ओर जाने लगा । इनके पीछे अनगिन्ती जङ्गलियों की चिल्लाहट सुन पड़ी ।

तमाम दिन और फिर रातभर ये लोग पूरी शीघ्रता से सनसनाते हुये आगे बढ़े जाते थे । दूसरे दिन प्रातःकाल अन्त इनलोगों ने देखा कि हम एक बड़े भारी रेगिस्तान पर चले जाते हैं, जिसका नाम अवश्य "सेहरा" था ।

गुब्बारे की चाल में कुछ भी फर्क न आया, और वह; और भी दो दिन तथा दो रात योंही उड़ता हुआ अफ्रीका के पार हो गया ।

इन बीच के दिनों में फिलिप; दुष्ट फिलिफ, अपने साथियों से पृथक्‌ही रहा और वे भी कुछ इससे विशेष सम्बन्ध न रखते थे।

शेड भील छोड़ने के चौथे दिनके उपरान्त, गुब्बारे की गेस बिलकुल समाप्त हो गई और वह सों सों करता बालू पर गिर पड़ा, जिसके निकटही अर्बों का एक कारवाँ पड़ा हुआ था।

हमारे वीर पथिकों ने बड़ेही दुःख से अपने हवाई घोड़े को छोड़ा, और उन अर्बों के साथ जा मिले; जिन्होंने इनको अपने साथ वादीये हाफा तक ले चलने का वादा किया। वादीये हाफा यहां से दो सौ मील से कम न रहा होगा। हमारे पथिकों ने उसी ओर, काफिले के साथ कूच किया। अब जो सर विल्फ्रेड ने हिसाब लगाया तो विदित हुआ कि उन लोगों ने चार दिवस में दो हजार मील का भ्रमण; झीलशेड से लेकर और वहां तक चार दिनों में तै किया।

आपत्तियाँ और दुःख अबलों हमारे इस छोटे झुण्ड के भाग्य में लिखे थे, परन्तु वे सब सर विल्फ्रेड की बुद्धिमानी के कारण अपना बुरा परिणाम दिखाये बिनाही आगे बढ़ते जाते थे। वे लोग वादिये हाफा के नाईल नामी नगर में दो सप्ताह के उपरान्त पहुंच गये। इन्हें कुछ दिनों यहां पर मुल्ला मेहदी के हाथों में नजरबन्द के भाँति भी रहना पड़ा, अन्त जब सर विल्फ्रेड ने अपनी पूरी सफाई दी और उन लोगों को यह विश्वास हो गया कि ये कोई जासूस नहीं तो सब छोड़ दिये गये। और अब यहां से हमारे पथिकों ने डोंगी पर भ्रमण करना प्रारम्भ किया।

तीन सप्ताह के उपरान्त, अनेक आपत्तियों तथा कष्टों को भोगकर अन्त ये लोग "एसौआन,, की वृटिश चौकी पर पहुँच गये, जहां इनके अनेकानेक मित्र मिल गये। इन लोगों को अब यहां से एलेकजेनडेरिया पहुंचते कुछ देर न लगी, और एलेकजेनडेरिया में पहुंचकर सब के सब लिवरपोल के निमित्त जहाज पर सवार हो गये; और ईश्वर का लाख २ धन्यवाद करते मई महीने के प्रारम्भ में वीरों के छोटे इस झुण्ड ने प्यारे इङ्गलेण्ड की भूमि पर पैर रक्खा।

इन लोगों पर बीती हुई घटनायें अब एक प्रकार से विलायत तथा अमेरिका पर्यन्त के कुल समाचारपत्रों में छप गईं। बहुत से मनुष्य उत्सुक हो हो कर सर विल्फ्रेड तथा उनके पुत्र आर्थर से मिलने के लिये विल्ट शायर (इङ्गलेण्ड) जहां इनका मकान था आते थे। आर्थर! प्यारे आर्थर ने भी उन स्थानों को देखा जिसे कि उसने अपने बचपन में, जब वह केवल तीन वर्ष का था, देखा था।

चंका सर विल्फ्रेड के साथही साथ उनके मकान में है; थोड़ीही बहुत शीक्षा के उपरान्त, वह उनका; सदैव के निमित्त एक चालाक और निमकहलाल नौकर बन गया।

कप्तान जोली अब भी सर विल्फ्रेड के मेहमान हैं; और आगे चलकर सर विल्फ्रेड की प्रेमभरी बातों और सहनशीलता ने उन्हें जन्मभर के लिये अपना मेहमान बना लिया। इस तरह कप्तान साहब तथा अर्ल दोनों एकत्रित रहे।

दुष्ट फिलिप, लिवरपोल पहुँचतेही इन लोगों से पृथक् होकर ईश्वर जाने कहां चला गया । उसे फिर कभी किसी ने न देखा । अच्छा है उसे अपने दोषों के बदले मुँह छिपा लेने दीजिये ।

लालनगर में जाना और वहां के भयानक देवों से प्राण बचाकर यों चले आना यह कुछ सर विल्फेडही के से बुद्धिमान व्यक्ति का काम था । परन्तु अवश्यही एक न एक दिन ऐसा आनेवाला है जब अफ्रिका बुद्धिमानों के खोज का मैदान बन जायेगा। और बहुत से वीर पुरुष उस भयानक गुफा को पार करके उन भयानक राक्षसों को परास्त करेंगे, और फिर उस समय वही लालनगर प्रत्येक मनुष्यों का चित्त बहलानेवाला स्थान माना जायगा और लोग दूर २ से वहां जायँगे ।

परन्तु यह समय तनिक दूर है ।